वार्षिक रिपोर्ट

1972-73

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

विषय-सूची

कृतज्ञता-ज्ञापन

परिषद् शिक्षा तथा समाज कल्याण के केन्द्रीय तथा राज्य मन्त्रियों द्वारा उसके कार्यों में रुचि लेने के लिए अत्यन्त कृतज्ञ है। परिषद् शिक्षा तथा समाज-कल्याण मन्त्रालय के सभी कर्मचारियों को उनके द्वारा प्रतिवेदन वर्ष में समय-समय पर दी गई सुविधाओं के लिए अत्यन्त कृतज्ञ है। परिषद् उन सभी संगठनों और विशेषकर राज्य शिक्षा विभागों के प्रति भी कृतज्ञ है जिन्होंने उसके कार्यकलापों को चालू रखने में सहयोग दिया है। परिषद् यूनेस्को, यूनीसेफ, यू० एन० डी० पी०, रूस की सरकार, ब्रिटेन की सरकार और जर्मन लोकतान्त्रिक गणराज्य की सरकार को भी कृतज्ञ है जिन्होंने विभिन्न रूपों में सहायता प्रदान की है।

परिषद् तथा इसके कार्यकलाप

परिषद् तथा इसके कार्यकलाप

1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की, जो एन० सी० ई० आर० टी० के नाम से प्रसिद्ध है, एक स्वायत्त संगठन के रूप में स्थापना 1860 के सोसायटीज रजिस्ट्रेशन अधिनियम के अधीन सितम्बर 1961 में की गई थी। स्थापना हो जाने पर परिषद् ने केन्द्रीय शिक्षा संस्थान (1947), केन्द्रीय पाठ्यपुस्तक अनुसंधान ब्यूरो (1954), केन्द्रीय शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन ब्यूरो (1954), अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् (1955), माध्यमिक शिक्षा विस्तार कार्यक्रम निदेशालय (1955-1959), राष्ट्रीय प्राथमिक शिक्षा संस्थान (1959), राष्ट्रीय समाज शिक्षा केन्द्र (1956), तथा राष्ट्रीय श्रव्य-दृश्य शिक्षा संस्थान (1959) अपने हाथ में ले लिए। भारत सरकार द्वारा इन सभी संगठनों का गठन स्कूली शिक्षा की प्रगति के लिए सुविधाएँ प्रदान करने की दृष्टि से किया गया था। इन संगठनों को हाथ में लेने के बाद, परिषद् ने अपने कार्यकलापों का पुनर्गठन किया ताकि यह प्रभावी ढंग से कार्य कर सके।

2. परिषद् का वित्त-पोषण पूर्णतया भारत सरकार द्वारा किया जाता है। इस समय, यह शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय के शैक्षणिक पक्ष के रूप में कार्य कर रही है और यह स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में मंत्रालय की नीतियों तथा मुख्य कार्यक्रमों के तैयार करने तथा उनके कार्यान्वयन में उनकी सहायता करती है। मोटे तौर पर परिषद् के कार्य ये हैं :—

(क) स्कूली शिक्षा से संबंधित अध्ययन, जाँच तथा सर्वेक्षण करना।

(ख) सेवा-पूर्व और सेवा-कालीन प्रशिक्षण का आयोजन करना, खासतौर से उच्च स्तर पर।

(ग) विस्तार सेवाओं का आयोजन करना।

(घ) सुधरी हुई शैक्षिक तकनीकों तथा क्रियाओं का स्कूलों में प्रसार करना, तथा

(ङ) स्कूली शिक्षा से संबद्ध सभी मामलों पर विचारों तथा सूचना के निकास-गृह के रूप में कार्य करना।

3. इस प्रकार के कार्यों को प्रभावी ढंग से कर सकने के लिए, परिषद् राज्यों के शिक्षा विभागों और विश्वविद्यालयों तथा स्कूली शिक्षा के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए देश में स्थापित आमतौर पर सभी संस्थाओं के साथ निकट सहयोग से कार्य करती है। इसके अलावा, परिषद्, विश्व भर में इसी प्रकार के अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय संगठनों के साथ निकट संपर्क रखती है। परिषद् द्वारा किए गए कार्यों के निष्कर्ष से जनता को अवगत कराने के लिए यह पुस्तकों, पत्रिकाओं तथा साहित्य का प्रकाशन करती है।

4. परिषद् ने प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रमों और अनुसंधान कार्यकलापों के करने और उनको बढ़ाने के लिए अनेक संस्थाओं का गठन किया। परिषद् अपने क्षेत्र-सलाहकारों के कार्यालयों की मार्फत सभी राज्य सरकारों के साथ निकट सम्पर्क रखती है।

परिषद् का प्रधान कार्यालय दिल्ली में है।

5. दिल्ली में परिषद् का राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान है। इस संस्थान का मुख्य संबंध अनुसंधान, अल्पावधि प्रशिक्षण आदि से है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के अनेक विभाग हैं, जैसे पूर्व-प्राथमिक तथा प्राथमिक शिक्षा विभाग, पाठ्यपुस्तक विभाग, अध्यापक शिक्षा विभाग, सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी विभाग, शैक्षिक मनोविज्ञान तथा शिक्षा आधार विभाग, विज्ञान शिक्षा विभाग, अध्यापन साधन विभाग, आधार सामग्री प्रक्रिया तथा शैक्षिक सर्वेक्षण एकक, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान पुस्तकालय, प्रलेखीय तथा सूचना सेवाएँ। प्रत्येक विभाग का संबंध उसी को सौंपी गई परियोजनाओं से है। इसके अलावा परिषद् के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक कुछ आधारभूत कार्य भी किया जाता है। कुछ मिला कर, जो अधिकांश जाँच-पड़तालें की जाती हैं, वे व्यावहारिक किस्म की होती हैं और तात्कालिक उपयोगिता की दृष्टि से उन्हें महत्वपूर्ण माना जाता है।

6. केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली में, बी० एड०, एम० एड०, तथा पी-एच० डी० पाठ्यक्रमों का प्रबंध है। उसका संचालन दिल्ली विश्वविद्यालय के संघटक कालेज के रूप में परिषद् द्वारा किया जाता है। भारत सरकार ने इसको दिल्ली विश्वविद्यालय को हस्तांतरित करने के लिए आदेश जारी कर दिए हैं और इसके हस्तांतरण का कार्य किया जा रहा है।

7. परिषद् अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर तथा मैसूर में चार क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों का संचालन करती है। ये संस्थाएँ स्थानीय कालेज हैं जिनमें व्यापक प्रयोगशाला, पुस्तकालय तथा आवास सुविधाएँ हैं। वे चार-वर्षीय विषय वस्तु एवं शिक्षण पाठ्यक्रम का संचालन करते हैं जिन्हें पूरा करने पर विज्ञान में बी०एससी०, बी०एड० तथा भाषाओं में बी० ए०, बी० एड० उपाधियाँ मिलती हैं। ये पाठ्यक्रम विश्व के

कुछ अन्य देशों में प्रयुक्त विचारों को आत्मसात करते हुए तैयार किए गए हैं। अनेक देशों में आमतौर पर यह विश्वास किया जाता है कि शिक्षा को इंजीनियरी, औषधि-विज्ञान जैसे व्यावसायिक विषय के रूप में माना जाना चाहिए और छात्रों को इन विषयों में और शिक्षण में साथ-साथ प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। क्षेत्रीय कालेजों में चलाए जा रहे चार-वर्षीय पाठ्यक्रम इसी अवधारण को कार्यान्वित करने के लिए हैं। इसके अलावा, क्षेत्रीय कालेज एक-वर्षीय बी० एड० पाठ्यक्रम भी चलाते हैं। ऐसे एक-वर्षीय पाठ्यक्रमों में विशेष महत्व के वे पाठ्यक्रम हैं जो विज्ञान, कृषि, वाणिज्य तथा भाषा से संबंधित हैं। प्रशिक्षण पा रहे छात्रों को हर मुमकिन सीमा तक, कार्य-अनुभव प्राप्त करने के अवसर प्रदान किए जाते हैं, ताकि स्कूलों में अध्यापक बनने पर वे उसका प्रसार स्कूलों में कर सकें। अजमेर, भोपाल और भुवनेश्वर स्थित तीन क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में एम० एड० पाठ्यक्रमों का प्रबंध है। अजमेर और भुवनेश्वर के दोनों क्षेत्रीय कालेजों के अध्यापन स्टाफ के कुछ सदस्यों को अपने-अपने क्षेत्र से संबद्ध विश्वविद्यालों की पी-एच० डी० के लिए सरकारी गाइड की मान्यता प्राप्त है। चारों क्षेत्रीय कालेज मुख्यतया अपने संबन्धित क्षेत्रों में स्थित स्कूल शिक्षकों तथा शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्य-अनुभव के लिए सेवा-कालीन शिक्षा पाठ्यक्रमों का आयोजन भी करते हैं। क्षेत्रीय कालेजों का इस ढंग से विकास किया जा रहा है कि वे देश के चारों क्षेत्रों के लिए आदर्श अथवा विशिष्ट केन्द्रों के रूप में कार्य करें। वे संबंधित क्षेत्रों में स्थित विश्वविद्यालयों और संस्थाओं के साथ तथा राज्य के शिक्षा विभागों के साथ निकट सहयोग से कार्य करते हैं। प्रत्येक क्षेत्रीय कालेज के लिए एक प्रबंध-समिति है जिसका अध्यक्ष उस विश्वविद्यालय का कुलपति होता है जिससे वह संस्था संबद्ध है। यह प्रबंध-समिति कालेज के सीधे हित के मामलों पर कार्यकारी समिति को सलाह देती है।

8. परिषद् का एक प्रकाशन एकक है जो परिषद् के विभिन्न संघटक एककों द्वारा तैयार की गई शैक्षिक सामग्री को प्रकाशित करता है। शैक्षिक सामग्री निम्न-लिखित मुख्य श्रेणियों में विभक्त है :

(क) पाठ्यपुस्तकें और अध्यापक दर्शिकाएँ

(ख) पूरक पठन सामग्री

(ग) वार्षिक पुस्तकें (इयर बुक्स)

(घ) अनुसंधान अध्ययन तथा प्रबंध

(ङ) अनुदेश सामग्री

(च) विवरणिकाएँ और पुस्तिकाएँ

(छ) शैक्षिक पत्र-पत्रिकाएँ

(ज) विदेशी पुस्तकों के पुनर्मुद्रित संस्करण, आदि।

9. केन्द्रीय मंत्रिमंडल में शिक्षा संविभाग के मंत्री परिषद् की महासमिति के अध्यक्ष हैं। राज्यों के तथा विधानांगों वाले संघ राज्य क्षेत्रों के सभी शिक्षा मंत्री और दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद्, परिषद् के सदस्य होते हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय में भारत सरकार के सचिव, चार विश्वविद्यालयों के कुलपति (एक हर क्षेत्र से), भारत सरकार के 12 नामज़द व्यक्ति जिनमें से चार अध्यापक होते हैं और कार्यकारी समिति के सभी सदस्य परिषद् के अन्य सदस्य हैं। इस प्रकार के गठन से उच्चतम स्तर पर और पारस्परिक सहमति से नीति विषयक निर्णय लेना संभव हो जाता है।

10. परिषद् का प्रशासन एक कार्यकारी समिति करती है जिसमें शिक्षा और समाज कल्याण के केन्द्रीय मंत्री अध्यक्ष तथा शिक्षा और समाज कल्याण के राज्य मंत्री उपाध्यक्ष होते हैं। केन्द्रीय शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय का एक उप-मंत्री भी इसका सदस्य होता है। परिषद् के निदेशक और संयुक्त निदेशक, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का अध्यक्ष, केन्द्रीय शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय और वित्त मंत्रालय का एक-एक प्रतिनिधि, दो अध्यापक, परिषद् के संकायों के तीन सदस्य और दो जाने माने शिक्षाविद परिषद् की कार्यकारी समिति के अन्य सदस्य हैं। यह कार्यकारी समिति परिषद् के कार्यों से संबंधित सभी मामलों पर निर्णय लेती है। शैक्षणिक मामलों पर निर्णय लेने में कार्यकारी समिति की सहायता के लिए एक कार्यक्रम सलाहकार समिति है जो परिषद् के कार्यक्रमों की जाँच करती है और उन्हें चालू करती है। इस समिति में परिषद् की संकाय के अलावा विश्वविद्यालय के शिक्षा विभागों और राज्य शिक्षा संस्थानों के प्रतिनिधि होते हैं। एक वित्त समिति वित्तीय प्रभाव वाले सभी मामलों पर कार्यकारी समिति को सलाह देती है जबकि प्रशासनिक समिति प्रशासनिक मामलों में सहायता करती है।

11. इसके अलावा, कार्यकारी समिति आमतौर पर स्थायी समिति की नियुक्ति करती है, जो विभिन्न विशिष्ट प्रश्नों पर विचार करती है और जिनमें परिषद् के प्रतिनिधि और भारत के विभिन्न भागों के इस क्षेत्र के विशेषज्ञ होते हैं। इस प्रकार विज्ञान में अध्ययन समूहों से संबंधित समस्याओं, देश में विज्ञान शिक्षा में सुधार के लिए यूनेस्को-यूनीसेफ-सहायता प्राप्त परियोजनाओं से संबंधित समस्याओं, राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना आदि को पहले तो जाने-माने विशेषज्ञों के स्तर पर सुलझाया जाता है फिर विज्ञान सलाहकार समिति उन पर विचार करती है। इसी प्रकार परिषद् की पुस्तकों के प्रकाशन से संबंधित समस्याओं पर पहले प्रकाशन सलाहकार समिति विचार करती है और भवन निर्माण संबंधी समस्याओं आदि पर निर्माण तथा कार्य समिति विचार करती है।

12. शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय कई समितियों अथवा बोर्डों की नियुक्ति करता है। ऐसे बोर्डों में आमतौर पर परिषद् का प्रतिनिधित्व होता है। और जहाँ भी आवश्यक होता है, ऐसे बोर्डों और समितियों को उनके प्रति दिन के कार्य में

सहयोग देने के अलावा, परिषद् अपेक्षित विशेषज्ञ सलाह देती है। इस प्रकार परिषद् केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड, राष्ट्रीय स्कूल पाठ्यपुस्तक बोर्ड आदि के साथ निकट सहकारिता में कार्य करती है। एक ओर शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय व उसकी समितियाँ और दूसरी ओर परिषद्, इनके बीच का संबंध इतना अविरत और निकट का है कि इस संबंध को अथवा अलग इकाई के रूप में परिषद् जिस विशिष्ट ढंग से कार्य करती है, उसे स्पष्ट शब्दों में परिभाषित करना असंभव सा है। इस प्रकार का घनिष्ठ संबंध परिषद् के प्रभावी कार्य संचालन में सहायक सिद्ध होता है और असाधारण सीमा तक इसके काम में, विशेषकर इसके कार्यक्रमों के कार्यान्वियन में सहायता करता है।

13. परिषद् ने भारत भर में स्कूल शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा पर पहले ही पूर्ण महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। इसने विविध प्रकार की आदर्श स्कूल पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की हैं, जिन्होंने देश में ही नहीं प्रत्युत बाहर भी शिक्षाविदों का ध्यान आकृष्ट किया है। इसने राज्य शिक्षा बोर्डों की परीक्षा पद्धतियों में सुधार करने में सहायता की है। इसने यूनेस्को-यूनीसेफ की सहायता से विज्ञान अध्यापन की पर्याप्त सामग्री का विकास किया है। इसके अलावा, यूनेस्को-यूनीसेफ पाइलट परियोजना के अंतर्गत प्रकाशित विज्ञान पुस्तकों का कई प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

14. परिषद् राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना के अंतर्गत विज्ञान क्षेत्र में प्रतिभाशील छात्रों के चयन के लिए एक अखिल भारतीय प्रतियोगिता का आयोजन करती हैं। यह योजना अत्यंत लोकप्रिय हुई है और इस से निर्धन परिवारों के भी छात्रों को शिक्षा में उच्चतम स्तर तक अर्थात् पी-एच० डी० तक अविच्छिन्न और वित्तीय चिन्ता से मुक्त रहकर अपना अध्ययन करने का अवसर मिला है। इस योजना के लिए परीक्षाएँ अब संघ की सभी भाषाओं में हो रही हैं और समूची कार्य विधि को निरंतर समीक्षाधीन रखा जाता है ताकि सुधार किए जा सकें।

15. परिषद् प्रतिवर्ष विचार गोष्ठी पठन कार्यक्रम की एक अखिल भारतीय प्रतियोगिता का आयोजन करती है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य है : (1) अध्यापकों और मुख्याध्यापकों को अपने अर्जित अनुभवों, अपने कार्यों में प्रयोग और अध्ययन द्वारा प्राप्त ज्ञान और शैक्षिक समस्याओं पर सृजक विचारों को लिखने के लिए प्रेरित करना, और (2) ऐसे साधन प्रदान करना जिनके द्वारा अध्यापकों और मुख्याध्यापकों के सृजक विचारों और प्रयोगिक परिणामों को वाद-विवाद के लिए दूसरे अध्यापकों के समक्ष रखा जा सके और सामान्यतया प्रशिक्षकों को विस्तृत रूप से अवगत कराया जा सके।

अधिक से अधिक 500 रुपये के तीस नकद पारितोषक राष्ट्रीय स्तर पर छाँटे गए प्रत्येक पत्रक को प्रदान किए जाते हैं। चुने गए पत्रकों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाता है।

16. परिषद् ने विभिन्न संगठनों द्वारा तैयार की गई पाठ्यपुस्तकों का विभिन्न दृष्टिकोणों से मूल्यांकन किया है और लगातार मूल्यांकन कर रही है । अनेक राज्य संगठनों से परिषद् को इस आशय की प्रार्थनाएँ प्राप्त होती रहती हैं कि पुस्तकों की पांडुलिपियों का मूल्यांकन किया जाए । पाठ्यपुस्तक लेखकों और मूल्यांकन कर्ताओं के मार्गदर्शन के लिए परिषद् ने विभिन्न स्कूल विषयों की पाठ्यपुस्तकों के निर्माण और मूल्यांकन पर विवरणिकाएँ तैयार की हैं ।

17. अनुसंधान परियोजनाओं को सहायतार्थ अनुदान देने की परिषद् की योजना से बहुत से विश्वविद्यालय विभाग, अध्यापक प्रशिक्षण कालेज, अनुसंधान संस्थाएँ आदि महत्वपूर्ण अनुसंधान के कार्य में रत हो गई हैं । इन अनुसंधानों के कुछ परिणामों का स्कूल शिक्षा पर पहले ही जोरदार प्रभाव पड़ चुका है । परिषद् शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधानों को प्रकाशित करने में व्यक्तियों को वित्तीय रूप से सहायता भी देती है । इसके अलावा राष्ट्रीय व क्षेत्रीय स्तर के व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों को स्कूल शिक्षा में सुधार के लिए परिषद् अनुदान देती है । यह स्कूल अध्यापकों को कक्षा की समस्याओं को सुलझाने के लिए प्रयोगिक परियोजनाएँ करने में बढ़ावा देती है । उदीयमान युवा अनुसंधान कार्यकर्त्ताओं की सहायता करने के लिए परिषद् 300 रुपए तथा 500 रुपये के मूल्य की क्रमशः अवर तथा प्रवर मासिक वृत्तियाँ प्रदान करती है और उनके व्यावसायिक अभिवर्द्धन के लिए सुविधाएँ प्रदान करती हैं ।

18. परिषद् ने अपने क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के माध्यम से अप्रशिक्षित शिक्षकों की बहुलता कम करने की एक विशेष परियोजना बनाई है । इस योजना में शिक्षकों को बी० एड० करने में सहायता देने के लिए अवकाश एवं पत्राचार अध्यापन उपलब्ध कराया जाता है ।

19. परिषद् स्कूली और अध्यापक प्रशिक्षण के विभिन्न पहलुओं पर योजना हेतु मौलिक तथ्यों को उपलब्ध करने के लिए शैक्षिक सर्वेक्षण करती है ।

20. परिषद् के कार्य की एक सामान्य विशिष्टता, स्कूल अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों को विकास की सुविधाएँ और अवसर प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रकार के ग्रीष्म-कालीन संस्थानों का आयोजन करना है । इनमें से विज्ञान के ग्रीष्म कालीन संस्थानों का बड़ा महत्त्व है । इसके अतिरिक्त, अपने कार्य को सार्थक बनाने के लिए परिषद् देश में फैले हुए प्राथमिक तथा माध्यमिक विस्तार सेवा केन्द्रों का शैक्षणिक मार्गदर्शन भी करती है । इसके अलावा परिषद् भारत के सभी भागों से लिए गए शिक्षा कर्मचारियों तथा अध्यापकों एवं अल्प विशेषज्ञों को प्रशिक्षण देने के लिए विचार गोष्ठियों और कार्यक्रमों का संचालन करती है । परिषद् में नियोजित विशेषज्ञों के लिए भारत के अनेक राज्यों एवं राज्य शिक्षा बोर्डों सहित स्कूल शिक्षा में रुचि रखने वाले बहुत से संगठनों से निरन्तर तथा अनन्त माँग आती रहती है ।

21. राष्ट्रीय सम्पूर्णता और भारत की मौलिक एकता का विचार बच्चों के मस्तिष्क में भरने के लिए, परिषद् मूल्यवान साहित्य का प्रकाशन करती है और विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के लिए अन्तर राज्यीय शिविरों का आयोजन करती है। परिषद् द्वारा विकसित पाठ्य सामग्री आदि ने स्कूलों का विशेष ध्यान आकृष्ट किया है।

22. परिषद् ने जनसंख्या शिक्षा के क्षेत्र में कार्य प्रारम्भ किया है। जनसंख्या शिक्षा के विचार को विभिन्न स्कूल विषयों और अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में प्रस्तुत करने के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया गया है।

23. परिषद् में हाल ही में शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र की स्थापना की गई है।

उपरोक्त विवरण परिषद् में हो रहे विभिन्न कार्यकलापों तथा उसके व्यवस्थित और प्रशासित कार्यों का विस्तृत चित्रांकन करता है।

1972-73 के महत्त्वपूर्ण कार्य

1972-73 के महत्त्वपूर्ण कार्य

1. परिचय

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने 1972 में अपने अस्तित्व के ग्यारह वर्ष पूरे कर लिए। इस अवधि में परिषद् का महत्त्वपूर्ण विस्तार हुआ है। इसने नई दिल्ली में आई० आई० टी० के समीप अपने कैम्पस में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान और अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में चार क्षेत्रीय विद्यालयों की स्थापना की है।

इस अनुभाग में परिषद् द्वारा 1972-73 में किए गए महत्त्वपूर्ण कार्यों पर प्रकाश डाला गया है।

2. कार्यक्रम

प्रतिवेदन वर्ष में परिषद् के विभिन्न संघटक एककों द्वारा बहुत से कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए। कुछ अनुसंधान परियोजनाएँ जो गत वर्षों से चालू थीं उनको पूरा किया गया जबकि कुछ नई परियोजनाएँ प्रारम्भ की गईं। सदा की भाँति, परिषद् के सभी कार्यक्रमों को चालू करने से पहले कार्यक्रम सलाहकार समिति के सुझावों के आधार पर उनको पुनर्गठित किया गया।

परिषद् के 1972-73 में समाप्त/चालू मुख्य कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है।

(क) पाठ्यक्रम विकास :

पाठ्यक्रम विकास राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की सितम्बर 1961 में स्थापना के समय से ही एक चालू कार्यकलाप है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के सम्बद्ध विभागों द्वारा विभिन्न स्कूल विषयों में बहुत कुछ कार्य किया गया है। परन्तु सम्पूर्ण स्कूल स्तर के लिए समन्वित व संयुक्त पाठ्यक्रम तैयार करने पर गम्भीरता से प्रयत्न नहीं किया गया। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने शिक्षा आयोग (1964-66) की सिफारिश पर सबसे पहले स्कूल शिक्षा

के प्रथम 10 वर्षों के लिए 10+2 के ढाँचे के आधार पर एक समन्वित कार्यक्रम विकसित करने का प्रयास किया। परन्तु इस पाठ्यक्रम को किसी स्कूल पद्धति में पूर्ण रूप से नहीं चलाया गया। जनवरी 1973 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने स्कूल शिक्षा के प्रथम 10 वर्षों के लिए एक पाठ्यक्रम का मसौदा तैयार किया ताकि प्रस्तावित स्कूल शिक्षा के 10+2 के ढाँचे के कार्यान्वयन में सुविधा हो। शिक्षा आयोग की रिपोर्ट प्रकाशित होने के बाद से विभिन्न स्कूल विषयों के पढ़ाने के ढंग और विषय सामग्री में हुए परिवर्तनों का पाठ्यक्रम मसौदा बनाते समय पूरा ध्यान रखा गया। इस मसौदे को विभिन्न राज्य सरकारों को भेजा गया। कुछ राज्यों से इस सम्बन्ध में प्राप्त टिप्पणियों की जाँच की जा रही है।

परिषद् का इस पाठ्यक्रम को विशेष अनुभागों जैसे आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों व बड़े शहरों की गन्दी बस्तियों से आए बच्चों, प्रतिभाशील और मन्द बुद्धि वाले बच्चों और बालिकाओं के लिए संशोधित करने हेतु विशेष कार्यक्रम आरम्भ करने का प्रस्ताव है। परिषद् का पाँचवी पंच वर्षीय योजना में राज्यों में इस नए पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन पर गहन कार्य करने का भी प्रस्ताव है।

वर्ष 1972-73 में पाठ्यक्रम विकास के क्षेत्र में परिषद् द्वारा किए गए कार्य का विवरण परिशिष्ट 6 में दिया गया है।

(ख) स्कूल-विज्ञान-परियोजना

वर्ष 1967 से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् भारत सरकार की ओर से स्कूल स्तर पर विज्ञान शिक्षण के पुनर्गठन और विस्तार की एक परियोजना को युनेस्को/यूनीसेफ की सहायता से प्रचालित कर रही है। इस परियोजना के अन्तर्गत परिषद् ने विज्ञान और गणित में नए पाठ्यक्रम के आधार पर नई अनु-देश सामग्री विकसित की और कर रही है। परिषद् ने साधारण और सस्ते प्रयोग-शाला उपकरण भी विकसित किए हैं और कर रही है। इस परियोजना के पहले चरण में बहुत से राज्यों ने इस परियोजना को परिषद् द्वारा किटों सहित विकसित अनुदेश सामग्री का प्रयोग करते हुए कार्यान्वित किया है। राज्य सरकारों ने पाठ्य-पुस्तकों और शिक्षक दर्शिकाओं को क्षेत्रीय भाषा में अनुवाद करके छाप लिया है। 1972-73 में इस परियोजना के दूसरे चरण का कार्य आरम्भ किया गया। इस चरण में जिन कार्यों को पूरा करने का प्रस्ताव है वह हैं नए पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक तैयार करना, तथा उनका अनुवाद करना और छापना। 500 अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों को विज्ञान प्रयोगशाला उपकरणों से सजाना, 24,000 प्राथमिक और 31,000 माध्यमिक स्कूलों को नए विज्ञान किट उपलब्ध करना, राज्यों के मुख्य कार्मिकों और अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण का प्रबन्ध करना, 55,000 अध्यापकों के प्रशिक्षण का आयोजन करना, स्कूल

विज्ञान उपकरण से सुसज्जित चलती फिरती प्रयोगशाला का प्रत्येक राज्य/संघ क्षेत्र के लिए व्यवस्था करना; प्रत्येक राज्य/संघ क्षेत्र को पाठ्यपुस्तकों और दूसरी अनुदेश सामग्री छापने के लिए कागज देना। दूसरे चरण में एक दर्जन से अधिक राज्य इस परियोजना को विस्तृत रूप से प्रारम्भ करने के लिए सहमत हो गए हैं।

(ग) राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना

राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना एक अभियान परियोजना के रूप में 1963 में दिल्ली संघ क्षेत्र में प्रारम्भ की गई थी जिसने 1964 में अखिल भारतीय योजना के रूप में व्यापक स्वरूप धारण कर लिया। योजना का उद्देश्य विज्ञान अभि-रुचि रखने वाले होनहार युवा छात्रों की खोज करना और उन्हें पी०-एच० डी० स्तर तक के अध्ययन के लिए शैक्षणिक और वित्तीय सुविधाएँ सुलभ करना है। इस योजना के तीन मुख्य ध्येय यह हैं :

1. चुने हुए विद्यार्थियों को देश भर में उत्तम संस्थाओं में दाखिला दिलाना।

2. निजी मार्गदर्शन कार्यक्रम जिसके द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी ख्याति प्राप्त अध्यापकों द्वारा निजी और शैक्षिक मार्ग दर्शन प्राप्त कर सके।

3, अवरस्नातक विद्यार्थियों के लिए ग्रीष्मकालीन विद्यालयों का आयोजन करना जिसका कार्यक्रम मुख्यतः उदगामी-परियोजना है और स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए ग्रीष्मकालीन कार्यक्रमों का आयोजन करना जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी को विशेष प्रयोगशाला में सर्जक वैज्ञानिक योग्यताओं के आधार पर विशेष उदगामी-परियोजना कार्यक्रम के कार्य-सम्पादन के लिए भेजा जाता है।

जब यह योजना प्रारम्भ की गई थी उस समय विद्यार्थियों को चुनने के लिए प्रतियोगिता परीक्षा केवल अंग्रेजी भाषा में आयोजित होती थी। इससे बड़े शहरों से आए छात्रों को ग्रामीण क्षेत्रों से आए छात्रों की तुलना में सुविधा रहती थी। इसलिए ऐसा अनुभव किया गया गया कि प्रतियोगिता परीक्षा सभी प्रादेशिक भाषाओं में आयोजित की जाए। वर्ष 1969 से अब सभी प्रादेशिक भाषाओं में परीक्षाओं का आयोजन हो रहा है।

1972-73 वर्ष में राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या निम्नलिखित थी :—

बी० एससी०	621
एम० एससी०	319
पीएच० डी०	131
जोड़	1,071

इस योजना के अन्तर्गत स्कूल छात्रों की वैज्ञानिक सृजनशीलता का पता लगाने के लिए परीक्षण विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है । इस नए विस्तार का समावेश वर्ष 1972-73 में इस योजना की चयन कार्यविधि में किया गया । इन परीक्षणों पर प्रारंभिक कार्य समाप्त कर लिया गया है और इनको आजमाने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं ।

इस योजना के वर्तमान नियमों में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किया गया है जिसके अनुसार छात्रों को विदेशी संस्थाओं में स्नातकोत्तर और शोध अध्ययन के लिए भी छात्रवृत्ति मिल सकेगी । यदि छात्र स्नातकोत्तर या शोध अध्ययन के लिए भारत से बाहर जाना चाहता है तो उसको उस संस्था की, जिसमें उसे दाखिला लेना है, मान्यता की शर्तों और भारत में उसको छात्रवृति की रुपए में अदायगी के संबन्ध में परिषद् से पूर्व सूचना प्राप्त करनी होगी ।

एक और परिवर्तन जो विशेष रूप से उल्लेखनीय है वह यह है कि राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना के अन्तर्गत प्राप्त छात्रवृत्तियों के अतिरिक्त अब छात्र दूसरी संस्थाओं से किसी प्रकार की वित्तीय सहायता परिषद् की पूर्व अनुमति से स्वीकार कर सकते हैं ।

इस योजना के अनुवर्ती अध्ययन से पता चलता है कि राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज छात्रों ने देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों की पारम्परिक लोक परीक्षाओं में महत्त्वपूर्ण स्थान ग्रहण किया है । इनमें से कुछ ने अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रमुख शोध लेख छपने के लिए भेजकर विज्ञान के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा दिखाई है ।

ऐसा भी पता चला है कि देश के कुछ भागों में विज्ञान की शिक्षा अच्छे पाठ्यक्रम, बेहतर प्रयोगशाला तकनीकों का प्रयोग, प्रयोग, अध्यापकों की अधिक योग्यताओं और विज्ञान की उपयोगी पाठ्य व पूरक पठन सामग्री अपनाने के कारण उत्तम है । परिणामों के राज्यानुसार विश्लेषण से पता चलता है कि जो राज्य पहले पिछड़े हुए थे वह अब तेजी से विज्ञान शिक्षण के स्तर को सुधार रहे हैं जैसा कि उनके विद्यार्थियों की हर वर्ष की होने वाली राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज परीक्षाओं में प्राप्त सफलताओं से विदित है ।

इस सम्पूर्ण योजना की जाँच परिषद् द्वारा स्थापित एक उच्चाधिकार समिति द्वारा इस दृष्टि से की जा रही है ताकि राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा की खोज परीक्षा में बैठने वाले ग्रामीण छात्रों की सफलताओं के स्तर में सुधार किया जा सके और इन छात्रवृत्तियों को देश के विभिन्न भागों में समान रूप से वितरित करने के उपायों को खोजा जा सके ।

1972-73 में इस योजना के कार्यान्वयन की रिपोर्ट परिशिष्ट 7 में दी गई है ।

(घ) अध्यापकों की सेवा-पूर्व और सेवा-कालीन शिक्षा

शिक्षा का विकास मुख्यतः अध्यापकों के गुणों पर निर्भर है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् अपने सेवा-पूर्व और सेवाकालीन शिक्षा के कार्यक्रमों और विभिन्न विस्तार सेवा केन्द्रों द्वारा शिक्षकों के लाभ के लिए और उनके सुधार के लिए प्रयत्न कर रही है। प्रतिवेदन वर्ष में परिषद् ने अपने क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में भाषा और विज्ञान में चार-वर्षीय बी० ए०, बी० एड० और बी० एससी०, बी० एड० पाठ्यक्रम चालू रखे। इसके अलावा, क्षेत्रीय कालेजों और केन्द्रीय शिक्षा संस्थान में एक-वर्षीय बी० एड० पाठ्यक्रम भी चालू रखे। अजमेर, भोपाल और भुवनेश्वर स्थित तीन क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों और दिल्ली स्थित केन्द्रीय शिक्षा संस्थान में एम० एड० पाठ्यक्रमों की सुविधा दी जाती रही है। केन्द्रीय शिक्षा संस्थान पीएच० डी० की भी सुविधा प्रदान करता रहा है। राज्यों में अप्रशिक्षित अध्यापकों की बहुलता कम करने के लिए क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में ग्रीष्म कालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम का आयोजन होता रहा जिन्हें पूरा करने पर बी० एड० की डिग्री दी जाती है।

1972-73 में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों और क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों द्वारा शिक्षकों के लिए विभिन्न सेवा कालीन कार्यक्रमों का आयोजन होता रहा। इस सम्बन्ध में ग्रीष्म कालीन विज्ञान संस्थानों का विशेष उल्लेख किया जा सकता है। माध्यमिक स्कूलों/विश्वविद्यालय-पूर्व-पाठ्यक्रमों/माध्यमिक कालेजों के अध्यापकों के लिए 88 ऐसे संस्थानों का आयोजन किया गया। इसके अलावा विज्ञान शिक्षा की माँगों को पूरा करने के लिए 11 आनुक्रमिक और विशेष ग्रीष्म-कालीन संस्थानों का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त शिक्षा के दूसरे क्षेत्रों जैसे कार्यक्रमबद्ध अधिगम, प्रयोगिक भाषा विज्ञान तथा भाषा शिक्षण और भारतीय शिक्षा की समकालीन समस्याओं इत्यादि पर अध्यापक प्रशिक्षकों और शैक्षिक प्रबन्धकों के लिए ग्रीष्मकालीन संस्थानों का आयोजन किया गया। माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में प्रौद्योगिकी परियोजना पर चार ग्रीष्म-कालीन संस्थानों का आयोजन किया गया। इन संस्थानों का मुख्य उद्देश्य भाग ले रहे अध्यापकों को विभिन्न हस्तकार्यों की परियोजना कार्य में अनुदेश देना है ताकि उन माध्यमिक स्कूलों में जहाँ वे पढ़ाते हैं, इन हस्तकलाओं को कार्य-अनुभव के रूप में प्रारंभ कर सकें।

वर्ष 1972-73 में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों और शिक्षा के क्षेत्रीय कालेजों ने माध्यमिक स्कूल के अध्यापकों और प्राथमिक और माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के अध्यापक प्रशिक्षकों के लाभ के लिए बहुत से विस्तार कार्यक्रमों का आयोजन किया। परिषद् के क्षेत्रीय सलाहकारों ने भी देश के विभिन्न भागों के अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में स्थित विस्तार सेवा केन्द्रों का शैक्षणिक मार्गदर्शन किया है।

अध्यापकों के व्यावसायिक विकास के लिए परिषद् ने अपने विस्तार कार्य के अन्तर्गत संगोष्ठी-पठन कार्यक्रम चालू रखे। इस कार्यक्रम में अध्यापकों को शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए या शिक्षण के लिए अपनाई गई बेहतर तकनीकों के सम्बन्ध में अपने अनोखे अनुभवों को लिखने के लिए प्रेरित किया जाता है। अध्यापक द्वारा लिखित निबन्धों को पहले विस्तार सेवा केन्द्रों में जाँचा जाता है। निबंधों की दूसरी जाँच राज्य स्तर पर राज्य शिक्षा विभागों द्वारा की जाती है। सबसे अच्छे लिखे निबन्ध परिषद् में अखिल भारतीय निर्धारण के लिए आते हैं। राष्ट्रीय स्तर पर लगभग 30 अच्छे निबन्ध चुने जाते हैं। इन निबन्धों के लेखकों को योग्यता प्रमाण-पत्र और पुरस्कार दिए जाते हैं और उनको राष्ट्रीय सभा (नेशनल मीट) में भी आमन्त्रित किया जाता है। यहाँ वह अपने-अपने निबन्ध पढ़ते हैं और विशेषज्ञों के साथ विचार विमर्श करते हैं। सबसे अच्छे निबन्ध परिषद् द्वारा "दि टीचर स्पीक्स" नामक पुस्तक में छापे जाते हैं। इस पुस्तक की प्रतियाँ सारे देश में दूर-दूर वितरित की जाती हैं।

"प्रयोगी परियोजना" परिषद् की दूसरी योजना का नाम है जिसका उद्देश्य अध्यापकों का व्यावसायिक विकास करना है। इसमें अध्यापकों को क्रिया अनुसंधान की छोटी परियोजनाएं लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। परिषद् इन परियोजनाओं पर उनको वित्तीय सहायता और शैक्षणिक मार्गदर्शन उपलब्ध करती है। 1972-73 में विकेन्द्रीकरण के बाद प्रायोगिक परियोजनाओं की योजना का प्रचालन क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों द्वारा हुआ क्योंकि इन कालेजों के कर्मचारी सम्बन्धित राज्य की विभिन्न भाषाओं से भलीभाँति परिचित थे और वे विषय विशेषज्ञ और अध्यापन-विज्ञान विशेषज्ञ भी थे। ऐसा अनुभव किया जाता था कि इन सुविधाओं से क्षेत्रीय कालेज, अध्यापकों को प्रादेशिक भाषाओं में परियोजना रिपोर्ट लिखने में सहायता प्रदान करने के उपयुक्त केन्द्र होंगे।

वर्ष 1972-73 में परिषद् द्वारा सेकैण्ड्री स्कूल अध्यापकों के लिए सेवा-पूर्व और सेवा-कालीन प्रशिक्षण और विभिन्न वर्गों के शैक्षिक कार्यकर्ताओं के लिए सेवा-कालीन प्रशिक्षण के लिए किए गए कार्यकलापों का और विवरण परिशिष्ट 15 में दिया गया है। प्रतिवेदन वर्ष में शैक्षिक विस्तार के क्षेत्र में किए गए कार्य का विवरण परिशिष्ट 16 में दिया गया है।

(ङ) कार्य-अनुभव

शिक्षा सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक परिवर्तनों का एक शक्तिशाली उपकरण है। भारत में राष्ट्रीय उद्देश्यों की प्राप्ति का एक साधन शिक्षा को उत्पादन से सम्बद्ध करना है। कार्य-अनुभव को सामान्य शिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में विशेष कर स्कूल स्तर पर प्रारम्भ करने से इस श्रृंखला को और दृढ़ किया जा सकता है क्योंकि वहाँ शिक्षा का उद्देश्य नागरिकता, चरित्र निर्माण और तौर-तरीकों का सही ज्ञान देना है।

परिषद् इस क्षेत्र में कई वर्षों से कार्य कर रही है । कार्य-अनुभव की संकल्पना का विकास परिषद् द्वारा प्रकाशित पुस्तिका में किया गया है जो बुनियादी शिक्षा के सामाजिक रूप से लाभदायक उत्पादक कार्य-संकल्पना का सुधरा हुआ रूप है। पुस्तिका कार्य-अनुभव पर शिक्षा आयोग की सिफारिशों का विश्लेषण करती है और इस निष्कर्ष पर पहुँचाती है कि कार्य-अनुभव यथा संभव वास्तविक उत्पादन अवस्थाओं में अर्थपूर्ण, शैक्षिक और उत्पादक शारीरिक कार्य है । इसका अन्तिम उद्देश्य छात्रों को औद्योगिक और कृषिक उपजों के उत्पादन में प्रयोग होने वाली बुनियादी सामग्रियों, बुनियादी उपकरणों और बुनियादी पद्धतियों से अवगत कराना है । कार्य-अनुभव के पाठ्यक्रम का ढाँचा विकसित कर लिया गया है और विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार कार्यक्रम तैयार कर लिया गया है । परिषद् द्वारा विकसित कार्य-अनुभव पाठ्यक्रम को आन्ध्र प्रदेश और मैसूर राज्यों और केन्द्रीय विद्यालय संगठन के कुछ स्कूलों में परखा गया है । कार्य अनुभव पर पाठ्यक्रम संदर्शिकाएँ और साधन पुस्तकें भी परिषद् दारा तैयार की जा रही हैं । कार्य-अनुभव कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम को रूप दिया जा चुका है । कार्य-अनुभव कार्यक्रम की प्रोन्नति के लिए जो परिषद् में नवीनतम कार्य हुआ है वह है एक अलग कार्य-अनुभव कक्ष की स्थापना । इस कक्ष के मुख्य कार्य होंगे :

(1) राष्ट्रीय स्तर पर कार्य-अनुभव कार्यक्रमों को विकसित करना और उनका आयोजन करना,

(2) इस क्षेत्र में सेवा-पूर्व और सेवा-कालीन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विकसित करने और आयोजन करने में मार्गदर्शन करना, और

(3) अभ्यास पुस्तिकाओं, अध्यापक दर्शिकाओं और प्रयोगशाला उपकरणों इत्यादि के रूप में कार्य- अनुभव सामग्री विकसित करना ।

(च) राष्ट्रीय विज्ञान-प्रदर्शनी

परिषद् ने तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली में 11 से 19 नवम्बर 1972 तक जवाहरलाल नेहरू स्मारक निधि के सहयोग से एक राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया ।

लगभग सभी राज्यों ने इस प्रदर्शनी में योगदान दिया । इस प्रदर्शनी ने बहुत अधिक छात्रों, अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों और शैक्षिक प्रशासकों का ध्यान आकर्षित किया ।

(छ) स्कूल विज्ञान उपकरण पर यूनेस्को यूनीसेफ क्षेत्रीय सेमिनार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने स्कूल विज्ञान उपकरण पर भारत सरकार के शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय की ओर से नई दिल्ली में

11 से 20 दिसम्बर 1972 तक दस दिवसीय यूनेस्को/यूनीसेफ सेमिनार का आयोजन किया। इस सेमिनार में एशिया के 14 राष्ट्रों के प्राथमिक और सेकेन्ड्री स्तरों के विज्ञान पाठ्यक्रम विकासकर्त्ताओं, उपकरण आकृति विशेषज्ञों और विज्ञान उपकरण निर्माण के विशेषज्ञों ने भाग लिया। इसमें विज्ञान शिक्षा/विज्ञान उपकरण निर्माण के यूनेस्को विशेषज्ञों और परामर्शदाताओं ने भी भाग लिया।

यह सेमिनार एशिया में अपने किस्म का पहला था जिसके द्वारा स्कूल विज्ञान उपकरण के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों, अनुभवों और ज्ञान का आदान प्रदान हुआ। इसने विज्ञान उपकरणों की आकृति की समस्याओं, नमूना निर्माणारी भ संख्या में उत्पादन वितरण, बिक्री, मरम्मत और संधारण की ओर ध्यान आकर्षित किया। इस सेमिनार ने अध्यापकों और प्रयोगशाला सहायकों को आधुनिक उपकरणों के प्रयोग में प्रशिक्षण देने की ओर भी विशेष ध्यान दिया।

(ज) भारत की स्वाधीनता की 25वीं वषगाँठ का समारोह

भारत सरकार ने भारत की स्वाधीनता की 25वीं वर्षगाँठ के समारोह के सम्बन्ध में निम्नलिखित कार्यक्रम राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को सौंपे :—

(1) 'अपना देश जानो' परियोजना

अगस्त 1972 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने 'अपना देश जानो' परियोजना पर एक प्रबंध तैयार किया जो राज्य सरकारों और केन्द्रीय शासित क्षेत्रों को भेजा गया। भारत की स्वाधीनता की 25वीं वर्षगाँठ के सम्बन्ध में इस प्रबंध में राज्य सरकारों का मार्गदर्शन करते हुए स्कूलों द्वारा आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रम सुझाए गये थे जिनमें अध्यापक और छात्र सक्रियता से भाग ले सकें। अधिकतर राज्य सरकारों ने रिपोर्ट भेजी है कि प्रबंध में सुझाए कार्यक्रमों को स्कूलों ने अपने-अपने क्षेत्रों में आयोजित किया।

(2) परिषद के दो प्रकाशनों "दि कांस्टीट्यूशन ऑफ इन्डिया फार दि यंग रीडर", और "सिम्बल्स ऑफ यूनिटी एन्ड फ्रीडम" का जयन्ती स्कूलों में वितरण

परिषद के दो प्रकाशन "दि कांस्टीट्यूशन ऑफ इन्डिया फॉर दि यंग रीडर" और "सिम्बल्स ऑफ यूनिटी एन्ड फ्रीडम" राज्य सरकारों और केन्द्र शासित प्रदेशों को 5000 जयंती स्कूलों अर्थात् प्रत्येक सामुदायिक खण्ड-विभाग में एक-एक वितरण के लिए भेजे गये।

(3) गाँव के स्कूलों की समुन्नति

(अ) प्राथमिक स्कूलों में उपहार सामग्री का वितरण

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ने लगभग 200 रुपये कीमत की सामग्रियों की एक सूची तैयार की जिनको भारत सरकार की ओर से

देश के प्रत्येक प्राथमिक स्कूलों को उपहार स्वरूप देना है। इस सूची को शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय के पास आगे कार्यवाही के लिए भेज दिया गया है।

(ब) स्कूलों में सफाई प्रचार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा अध्यापकों के लिए स्कूल सफाई कार्यक्रमों पर एक हस्तपुस्तिका का प्रारूप तैयार किया गया जिसमें व्यक्तिगत सफाई, व्यक्तिगत वस्तुओं की सफाई, कक्षा की सफाई, स्कूल की सफाई और वातावरण की सफाई से सम्बन्धित सुझाव दिए गए हैं। इस हस्तपुस्तिका के प्रारूप को सारे राज्य सरकारों और केन्द्र शासित क्षेत्र को टिप्पणी के लिए भेजा गया और राज्यों से प्राप्त सुझावों को ध्यान में रखते हुए इसको अन्तिम रूप दिया गया।

(4) **चित्रमय पैकजों की छपाई**

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को गत 25 वर्षों में देश के विभिन्न भागों में हुई प्रगति को दर्शाते हुए चित्रमय पैकज तैयार करने, छपवाने और राज्य सरकारों द्वारा स्कूलों में बँटवाने को कहा गया था। तदनुसार अध्यापन साधन विभाग ने राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के समाजिक विज्ञान तथा मानविकी विभाग, विज्ञान शिक्षा विभाग और पूर्व-प्राथमिक तथा प्राथमिक शिक्षा विभाग के सहयोग से चित्रमय पैकज तैयार किए। मूलतः 10″ × 12″ नाप के 50,000 चित्रमय पैकजों को (25,000 अंग्रेजी और 25,000 हिन्दी) छपवाने का विचार था। परिषद् ने प्रकाशन एकक को यह कार्य पूरा करने के लिए सौंपा। प्रकाशन एकक ने टेंडर आमंत्रित किए परन्तु बाद में यह फैसला किया गया कि 20″ × 30″ नाप के 20,000 चित्रमय पैकेज (10,000 हिन्दी और 10,000 अंग्रेजी) छापे जाएँ। प्रकाशन एकक ने इस कार्य के लिए फिर से टेंडर आमन्त्रित किए हैं।

(ग) अनुसंधान

आरम्भ से ही परिषद् का एक मुख्य कार्यकलाप अनुसंधान है। वर्ष 1972-73 में परिषद् के विभन्न संघटक एककों ने बाल विकास, शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन, अध्यापक शिक्षा, भाषा शिक्षा, मूल्यांकन तथा मापन इत्यादि क्षेत्रों में अध्ययन करने का कार्य हाथ में लिया। इसके अतिरिक्त शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर सर्वेक्षण किए गए। इस सम्बन्ध मे मणिपुर सरकार के अनुरोध पर परिषद् द्वारा मणिपुर राज्य में शिक्षा पर किया गया सर्वेक्षण मुख्यतः उल्लेखनीय है।

यद्यपि परिषद् द्वारा 1972-73 में किए गए बहुत से अध्ययन व्यावहारिक प्रकृति के थे फिर भी कुछ मूल अनुसंधान भी किए गए। ऐसे ही एक अन्वेषण

अर्थात् 2½ से 5 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के लिए विकासात्मक प्रतिमान परियोजना में विकास के इन चार पहलुओं पर अध्ययन किया गया—(1) अनुकूलन, (2) व्यक्तिगत—सामाजिक, (3) प्रेरक और (4) भाषा। 8,000 बच्चों पर किए गए इस अध्ययन से स्कूल पूर्व स्तर के बच्चों के विकास, शहरी-ग्रामीण-औद्योगिक तीन प्रकार के बच्चों में भिन्नता और बच्चों की अन्तर केन्द्रीय भिन्नताओं के नमूने प्राप्त हुए हैं। इस अध्ययन से यह भी पता चलता है कि देहाती बच्चे 5+वर्ष की आयु पर शहरी बच्चों के मुकाबले में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए कम तैयार हैं। इस अध्ययन से यह भी पता चलता है कि 2½ से 5 वर्ष की आयु के बच्चों के मस्तिष्क का विकास बड़ी तेजी से होता है।

दूसरी सहकारी अनुसंधान परियोजना जिस पर काम हो रहा है वह है 5½ से 11 वर्ष की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए विकासात्मक प्रतिमान परियोजना। इस परियोजना का उद्देश्य केवल स्कूल के प्राथमिक स्तर के विकास के नमूने विकसित करना ही नहीं है वरन् मुख्यतः स्कूल और घर की विशेष भिन्नताओं और बच्चों की स्कूली उपलब्धि, ज्ञानात्मक विकास और सामाजिक विकास के सम्बन्धों का अध्ययन भी करना है। इस परियोजना के अंतर्गत देश के विभिन्न भागों के देहाती कौर शहरी 4,200 बच्चों का अध्ययन किया जा रहा है।

"स्कूल-पूर्व बच्चों के अध्ययन व्यवहार और सामाजिक पुनर्बलन" नामक अध्ययन के निष्कर्ष भी अब उपलब्ध हैं। इस अध्ययन के नतीजे से यह पता चलता है कि अध्यापक सामान्य कक्षा शिक्षण में सामाजिक पुनर्बलन तकनीक का प्रयोग करके बच्चों को अपने अध्ययनों में उच्चतर स्तर प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। औसत योग्यता के बच्चों को इस तकनीक से अधिक लाभ होने की सम्भावना है। इस अध्ययन से यह भी पता चलता है कि इस तकनीक से लाभ उठाकर उच्च योग्यता के बच्चे दूसरा स्थान ग्रहण करते हैं और इसके बाद निम्न योग्यता के बच्चों के दल का नम्बर आता है।

स्कूल पूर्व वर्गों में दो विधियों से शिक्षित संकल्पना निर्माण का एक अध्ययन परिषद् द्वारा किया गया जिसके नतीजे अब उपलब्ध हैं। नतीजों से यह पता चलता है कि जिन बच्चों को व्यवस्थित क्रमन्यास चरणों और सार्वजनिक स्थितियों के निरावरण द्वारा भावना प्रशिक्षण दिया गया था उनके निष्पादन आयु, सामाजिक आर्थिक स्थिति और बुद्धि का पक्षपात न करते हुए नियंत्रित दल के बच्चों से बहुत भिन्न है। परन्तु नियंत्रित दल के बच्चों और दूसरे दल के बच्चों की सामाजिक परिपक्वता में कोई फर्क नहीं था।

भाषा और भाषा-विषयक व्यवहारों पर बुनियादी अनुसंधान की एक परियोजना परिषद् ने हाथ में ली जिसके अन्तर्गत मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र, न्यूरोफिजियोलॉजी, धर्म, सहित्य और योग के क्षेत्रों में भाषा की मूल प्रकृति से

संबंधित विचारों को एकत्र करने का प्रयत्न किया गया था। इस परियोजना के अन्तर्गत भाषा के अधिगम और अध्यापन पर इन विचारों की प्रासंगिकता निर्धारण करने का विचार है।

विभिन्न बोली क्षेत्रों में के ध्वन्यात्मक परिवर्तनों के विश्लेषण और विवरण पर एक विशेष परियोजना परिषद् द्वारा आरम्भ की गई। इस परियोजना के पहले चरण का कार्य समाप्त कर लिया गया है जिसमें कि तथ्य सामग्री वाक नमूनों के रूप में उन्नीस हिन्दी भाषी क्षेत्रों से टेप पर एकत्र की गई है। तथ्य सामग्री का अनुकरण और विश्लेषण कर लिया गया है। इस परियोजना के दूसरे चरण में वाक-संबंधी विशेष खण्डों का अध्ययन किया गया है। इस परियोजना के नतीजों के आधार पर विभिन्न प्रकार की अनुदेशीय सामग्री विकसित करने का विचार है।

मणिपुर राज्य में शिक्षा के व्यापक सर्वेक्षण की रिपोर्ट तैयार कर ली गई है और उसको अन्तिम रूप दे दिया गया है। इस सर्वेक्षण की रिपोर्ट दो भागों में विभक्त है—एक 1947-48 से पहले के शिक्षा के विकास पर और दूसरा 1947-48 के बाद के विकास पर है। इस में व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा सहित स्कूल पूर्व शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक की सम्पूर्ण शिक्षा का सर्वेक्षण किया गया है। इस सर्वेक्षण के कुछ मुख्य नतीजे निम्नलिखित हैं।

(1) नामांकन की दृष्टि से एक स्कूल का कुल औसत आकार 87 है, शहरी स्कूल का औसत आकार 210 और ग्रामीण स्कूलों का 78 है।

(2) एक छात्र को प्राथमिक स्तर पर 23 पाठ्यपुस्तकें और माध्यमिक स्तर पर 40 पाठ्यपुस्तकें पढ़नी पड़ती हैं।

(3) स्कूल शिक्षा के सभी स्तरों के केवल 45·7 प्रतिशत अध्यापक प्रशिक्षित हैं।

(4) कुल स्कूल अध्यापकों में से 14·1 प्रतिशत विज्ञान पढ़ा रहे हैं। राज्य में दो अध्यापक ऐसे हैं जिन्होंने विज्ञान आठवीं कक्षा तक पढ़ी है और दसवीं कक्षा तक विज्ञान पढ़ाते हैं, 42 ने विज्ञान दसवीं कक्षा तक पढ़ी है और 51 अध्यापकों में से जो विज्ञान ग्यारहवीं कक्षा तक पढ़ा रहे हैं, एक ने विज्ञान दसवीं कक्षा तक पढ़ी है और तीन ने इस विषय को ग्यारहवीं कक्षा तक पढ़ा है।

1972-73 वर्ष में पूरी की गई तथा हाथ में ली गई अनुसंधान परियोजनाओं, अन्वेषणों तथा शैक्षिक सर्वेक्षणों का संक्षिप्त विवरण परिशिष्ट 13 में दिया गया हैं।

(ञा) राज्यों के साथ सम्बंध

गत वर्षों की तरह 1972-73 में भी परिषद् ने स्कूल शिक्षा के गुणात्मक सुधार के सम्बन्ध में राज्य शिक्षा विभागों, राज्य माध्यमिक शिक्षा बोर्डों, और दूसरी राज्य शैक्षिक संस्थाओं को सहायता देना जारी रखा। विशेषकर राज्य शिक्षा विभागों ने स्कूल पाठ्यक्रम के आधुनिकीकरण, पाठ्यपुस्तकों के निर्माण, परीक्षा सुधार, इत्यादि क्षेत्रों में परिषद् की विशेषज्ञता से लाभ उठाया।

राज्यों के साथ परिषद् के घनिष्ठ सम्बन्ध उसके तीन मुख्य कार्यक्रमों के द्वारा हुए। पहला तो सारे स्कूल स्तर पर विज्ञान शिक्षण को दृढ़ करने के लिए यूनेस्को-यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजना है। 1972-73 में परिषद् ने इस परियोजना के कार्यान्वयन के लिए करीब-करीब सभी राज्यों और संघ क्षेत्रों के साथ घनिष्ठता से कार्य जारी रखा। राज्यों ने परिषद् द्वारा तैयार किए गए नए विज्ञान पाठ्यक्रम, अनुदेशीय सामग्री और विज्ञान किटों का प्रयोग किया। परिषद् ने राज्यों की, उनके मुख्य कार्मिकों को प्रशिक्षण देकर भी सहायता की है।

परिषद् और राज्यों में सहयोग बढ़ाने वाला दूसरा मुख्य कार्यक्रम राष्ट्रीय एकीकरण की दृष्टि से पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन का प्रचंड कार्यक्रम है। करीब-करीब सभी राज्यों ने इस परियोजना को हाथ में लिया।

इस परियोजना के अन्तर्गत सब से पहले शिक्षा निदेशालय या राज्य सेकैंड्री शिक्षा बोर्डों द्वारा 1 से 11 की कक्षाओं के लिए निर्धारित पुस्तकों की सूची तैयार की जाती है। प्रत्येक पुस्तक की चार प्रतियां खरीदी जाती हैं। प्रत्येक पुस्तक की समीक्षा मूल्यांकन के लिए विशेष रूप से विकसित उपकरण की सहायता से तीन स्वतन्त्र समीक्षकों द्वारा (जो अधिकतर स्कूल अध्यापक होते हैं) की जाती है। मूल्यांकन के यह तीन माध्यम राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों और राज्य सरकारों द्वारा आयोजित किए गए थे। इन तीन माध्यमों से प्राप्त मूल्यांकन रिपोर्टों को एकत्रित करके परिषद् द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति के समक्ष पेश करने से पूर्व विषय विशेषज्ञों द्वारा इन की जाँच की जाती है।

अधिकतर राज्य सरकारों ने परिषद् के साथ पूरा सहयोग किया है और पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन में सहायता की है। विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों के अनुसार लगभग दो प्रतिशत पुस्तकें ऐसी हैं जिनका भविष्य में प्रयोग बंद करने की आवश्यकता है, लगभग 20 से 30 प्रतिशत पुस्तकें ऐसी हैं जिनकी कुछ सामग्री या तो निकाल दी जानी है या फिर निर्दिष्ट भागों को पुनः लिखना है। राज्य सरकारों ने अधिकतर इन सिफारिशों पर अमल किया है।

परिषद् और राज्यों को समीप लाने की दिशा में जो तीसरा मुख्य कार्यक्रम था वह था परिषद् के क्षेत्रीय सलाहकारों के कार्यालयों की राज्यों में स्थापना। इन

अधिकारियों का मुख्य कार्य राज्यों व राज्य समूहों और परिषद् के बीच सम्पर्क बनाए रखना है। ये क्षेत्रीय सलाहकार राज्यों को पेश आ रही कठिनाइयों की ओर राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के सम्बन्धित विभागों और क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों का ध्यान आकर्षित करते हैं ताकि वे उनका अध्ययन कर सकें और उनके हल निकाल सकें। ये परिषद् के विभिन्न संघटक एककों द्वारा तैयार की गई सामग्री और अध्ययनों के नतीजों को राज्यों में प्रचारित करते हैं। स्कूल शिक्षा के गुणात्मक सुधार से सम्बंधित विस्तार सेवा केन्द्रों और दूसरी राज्य स्तरीय संस्थाओं का शैक्षणिक मार्गदर्शन करना क्षेत्रीय सलाहकारों का दूसरा मुख्य उत्तरदायित्व है। इस समय क्षेत्रीय सलाहकारों के 9 कार्यालय विभिन्न राज्यों में कार्य कर रहे हैं। इनमें से कुछ राज्यों के एक समूह के लिए जिम्मेदार हैं। देश के प्रत्येक मुख्य राज्य में एक क्षेत्रीय कार्यालय स्थापित करना परिषद् का अन्तिम लक्ष्य है। यह जानकर प्रसन्नता होगी कि परिषद् के क्षेत्रीय सलाहकारों द्वारा शैक्षणिक मार्गदर्शन से बहुत से राज्यों ने अपने कार्यक्रमों में सुधार किया है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् और राज्य सरकारों/केन्द्र शासित प्रदेशों के बीच 1972-73 में हुए सहयोग कार्यकलापों का ब्योरा परिशिष्ट 17 में दिया गया है।

3. शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र

परिषद् की कार्यकारी समिति ने 4 सितम्बर 1972 को हुई बैठक में परिषद् के नियमों के नियम 42 के अन्तर्गत यह फैसला किया कि वह शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र को एक एजेंसी के रूप में चलाने का कार्य अपने हाथ में ले। केन्द्र की स्थापना कर दी गई है और उसने कार्य करना शुरू कर दिया है। 22 मार्च 1973 को हुई एक और बैठक में परिषद् की कार्यकारी समिति ने यह फैसला किया कि शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र को अब एक एजेन्सी के रूप में कार्य न करके राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की एक संस्था के रूप में कार्य करना चाहिए।

केन्द्र के कार्यों की देखभाल के लिए एक प्रबन्ध समिति गठित की गई है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का निदेशक शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र के निदेशक का कार्य भार सम्भालता है। वह केन्द्र की प्रबन्ध समिति का अध्यक्ष भी है। शैक्षिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र के विशेषज्ञों के अतिरिक्त शिक्षा मंत्रालय, वित्त मंत्रालय और आकाशवाणी का प्रतिनिधित्व भी इस प्रबंध समिति में होता है। प्रबन्ध समिति को विभिन्न समस्याओं को सुलझाने के लिए उप-समितियां स्थापित करने का अधिकार है। ऐसी उप-समितियों में प्रबन्ध समिति के सदस्यों के अतिरिक्त दूसरे प्रतिनिधियों को भी आमन्त्रित किया जा सकता है।

जहाँ तक शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र के कार्यों का सम्बन्ध है, वह शिक्षा के सभी स्तरों और सभी पहलुओं से सम्बन्धित है। इस प्रकार से यह पूर्व-प्राथमिक,

प्राथमिक, सेकेण्ड्री और विश्वविद्यालय शिक्षा, स्कूल के बाहर की शिक्षा, अविरल शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा इत्यादि से सम्बन्धित है। दूसरे कार्यों के साथ-साथ केन्द्र पत्राचार पाठ्यक्रमों और ग्राफिक कलाओं से भी सम्बन्धित है।

यह केन्द्र शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों, क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों और इसी तरह की दूसरी संस्थाओं से, जो शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष उपयोग से सम्बन्धित हैं, निकट सहयोग से कार्य करेगा।

प्रारम्भ में केन्द्र अनुसंधान और सेवा कार्यों पर जोर देगा।

4. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की पाँचवीं पंच-वर्षीय योजना का प्रारूप :

प्रतिवेदन वर्ष में परिषद् की पाँचवीं पंचवर्षीय योजना के प्रारूप बनाने का कार्य प्रारम्भ किया गया। पाँचवीं योजना के प्रस्ताव बनाने का वास्तविक कार्य प्रारम्भ करने से पहले परिषद् के विभिन्न संघटक एकक के लिए मार्ग-दर्शन का बहुत सा प्रारम्भिक कार्य करना पड़ा। इस मार्गदर्शन में स्कूल शिक्षा के गुणात्मक सुधार के सम्बन्ध में पाँचवीं पंच-वर्षीय योजना के दौरान राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को जो भूमिका निभानी है वह निर्धारित की गई और शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय द्वारा तैयार 1972 के काम-चलाऊ प्रपत्र "पाँचवीं पंच-वर्षीय योजना में शिक्षा (1974-79)" को ध्यान में रखते हुए निर्धारित भाग के अनुसार कार्यक्रमों और प्राथमिकताओं की रूपरेखा प्रस्तुत की गई। मंत्रालय के प्रपत्र के अनुसार शैक्षिक पद्धति के परिवर्तन को पाँचवीं पंच-वर्षीय योजना में परम अग्रता दी गई है, जिसका आशय शिक्षा की विषय-सूची और उससे सम्बन्धित शिक्षण के समुन्नत तरीकों के अपनाने, परीक्षा सुधार और पाठ्यपुस्तकों तथा दूसरे अध्यापन साधनों के सुधार में मौलिक परिवर्तन करना है। ऐसे मौलिक परिवर्तन लाने में परिषद् की भूमिका शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय को सलाह देना और सहायता करना है। इस उद्देश्य से परिषद् का कार्य विशेष रूप से सेवा पूर्व और सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा द्वारा शिक्षण के समुन्नत तरीकों को विकसित करना और अध्यापक शिक्षा में अनुसंधान व विकासात्मक कार्य करना होगा। परीक्षा सुधार में परिषद् की भूमिका राज्य शिक्षा सेकेण्डरी बोर्डों और दूसरी परीक्षा संस्थाओं को परीक्षा समस्याओं के विश्लेषण में सहायता करना और विश्लेषण के आधार पर परीक्षा के बेहतर तरीके विकसित करना होगा। पाठ्यपुस्तकें सुधारने के विषय में परिषद् ने उच्च स्तरीय पाठ्यपुस्तकें लिख कर पहले ही अपने आपको देश में एक मुख्य संस्था के रूप में स्थापित कर लिया है। परिषद् का यह कार्य आगे और मजबूत होगा। विभिन्न प्रकार के अधिगम और अध्यापन साधनों की ओर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होगी और इस सम्बन्ध में परिषद् की भूमिका

होगी—अनुसंधान, विकास और प्रशिक्षण हाथ में लेना, ताकि ऐसे साधनों का और अधिक प्रभावपूर्ण उपयोग हो सके। इस सम्बन्ध में परिषद् के कार्य का आशय परिषद् की विभिन्न संस्थाओं के साथ निकट सहयोग बढ़ाना है।

प्राथमिक और सेकेंड्री स्तरों के स्कूलों को स्थापित और क्रमोन्नति कर के स्तरों के सुधारने के विषय में परिषद् का कार्य ऐसे स्कूलों के लिए योजना और कार्यक्रम विकसित करना तथा पाठ्यक्रम और अध्यापक दर्शिकायें इत्यादि विकसित करना होगा। परिषद् ऐसे स्कूलों के मूल्यांकन का कार्य भी करेगी।

स्कूल-पूर्व शिक्षा पर स्वामीनाथन समिति की रिपोर्ट के कार्यान्वयन के लिए पूर्व-प्राथमिक स्तर की शिक्षा की समस्याओं पर विस्तृत रूप से कार्य करना होगा। परिषद् को इस विषय में शिक्षा के पूर्व-प्राथमिक स्तर के लिए अनुसंधान, प्रशिक्षण, विकासात्मक और विस्तार सेवाएँ आयोजित करने में अगुआ की भूमिका निभानी होगी।

6-11 वर्ष की आयु वर्ग के लिए प्राथमिक शिक्षा की सर्वव्यापकता की पाँचवीं योजना में केवल राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं वरन् राज्य से लेकर तालुकों तक के हर स्तर पर परम अग्रता दी जाएगी। इस में परिषद् का कार्य उपयुक्त अध्ययनों और अन्वेषणों, अध्यापक प्रशिक्षकों, निरीक्षकों और दूसरे शैक्षिक प्रशासकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों, लोगों में प्राथमिक शिक्षा की सर्वव्यापकता के महत्व के संबंध में अधिक चेतना उत्पन्न करने के लिए प्रचार सामग्री के नमूनों का विकास, शैक्षिक पद्धति में अनेक लक्ष्यों को प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त कार्यक्रमों का विकास, विभिन्न राज्यों द्वारा अपनाई गई योजनाओं का मूल्यांकन इत्यादि द्वारा इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन में शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय और राज्य स्तर की संस्थाओं को सलाह देना और उनकी सहायता करना होगा।

हाई स्कूल स्तर तक कार्य-अनुभव और उच्चतर माध्यमिक स्तर तक शिक्षा के व्यवसायीकरण के विषय में परिषद् धारणाओं के स्पष्टीकरण में, अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों और अनुदेशीय सामग्री विकसित करने में और राज्यों के मुख्य कार्मिकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम उपलब्ध करने में अगुआ की भूमिका निभाएगी।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने 1963 से राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज कार्यक्रम द्वारा एक राष्ट्रीय योजना चालू रखकर पर्याप्त अनुभव प्राप्त कर लिया है। पाँचवीं योजना में परिषद् की अगुआ भूमिका और विकसित की जाएगी ताकि यह प्रतिभाशील छात्रों के लिए, विशेषकर समाज के पिछड़े वर्गों से आए हुए छात्रों के लिए उपयुक्त छात्रवृत्ति योजनाओं को विकसित करने में शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय और राज्य सरकारों को सलाह दे सके और सहायता कर सके। इस क्षेत्र में परिषद् का मुख्य कार्य अनुसंधान और विकासात्मक कार्य करना होगा।

उपरोक्त वर्णित भूमिकाओं को प्रभावपूर्ण ढंग से निभाने के लिए, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् स्कूल शिक्षा के गुणात्मक सुधार से संबंधित राज्य स्तरीय संस्थाओं, राज्य शिक्षा विभागों, राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थानों और सैकेंड्री शिक्षा के राज्य बोर्डों के साथ निकट सहयोग से कार्य करेगी।

पाँचवीं पंच-वर्षीय योजना में 6·22 करोड़ रुपए के सम्भावित व्यय की तुलना में परिषद् की पाँचवीं योजना के लिए 15 करोड़ रुपए के प्रारूप का प्रस्ताव है। इस प्रारूप के अंतर्गत विस्तृत प्रस्ताव बनाए जा रहे हैं।

5. व्यय

परिषद् को लगभग 40 लाख रुपए की अल्प आय प्रकाशनों की बिक्री आदि से होती है। इसके अतिरिक्त अन्य व्यय सरकार से प्राप्त अनुदानों से होता है। 1970-71 में 3·72 करोड़ रुपए और 1971-72 में 3·10 करोड़ रुपए के व्यय के विरुद्ध 1972-73 में परिषद् के विभिन्न कार्यकलापों पर व्यय (अन्त:कालीन) 3·15 करोड़ रुपए था। इस अनुदान में 32 लाख रुपए राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज के छात्रों को छात्रवृत्तियाँ देने के लिए, 8 लाख रुपए विज्ञान और दूसरे शैक्षिक क्षेत्रों में आयोजित ग्रीष्म संस्थानों के लिए, 26 लाख रुपए पुस्तकों की छपाई व उसके लिए कागज खरीदने के वास्ते, 93 लाख रुपए क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों के लिए और 10 लाख रुपए केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के लिए, 43 लाख रुपए राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों के लिए और 103 लाख रुपए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के प्रधान कार्यालय (भवन निर्माण सहित) और राज्यों में स्थित परिषद् के क्षेत्रीय सलाहकारों के कार्यालय के लिए हैं। 1970-71 के व्यय की तुलना में 1971-72 और 1972-73 में व्यय कम होने का कारण यह था कि विस्तार सेवा केन्द्रों का वित्तीय दायित्व अप्रैल 1971 से राज्य सरकारों को हस्तांतरित कर दिया गया और परिषद् की निधि में से केन्द्रों को दिए जाने वाले अनुदान उस दिन से बंद कर दिए गए। इसके अतिरिक्त प्रौढ़ शिक्षा विभाग 1 मार्च 1971 से भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय को हस्तांतरित कर दिया गया जिसके फलस्वरूप परिषद् के बजट में वित्तीय वर्ष 1971-72 से उस विभाग के लिए कोई व्यवस्था नहीं की गई। 1970-71 के व्यय की तुलना में 1971-72 और 1972-73 में हुए व्यय में महत्वपूर्ण कमी ऐसे उपायों द्वारा ही संभव हो सकी थी जिस से न तो कार्य स्तर पर कोई प्रभाव पड़ा और न ही उपयोगी कार्यक्रमों की संख्या में कमी हुई। पत्राचार एवं ग्रीष्म स्कूल के बी० एड० पाठ्यक्रम के छात्रों की छात्रवृत्तियाँ समाप्त कर दी गईं, शिक्षा महाविद्यालय के नामांकित विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्तियों की संख्या सीमित कर भर्ती की लगभग 50 प्रतिशत कर दी गई, समीक्षा समिति की सिफारिशों के अनुसार सेमिनारों, वर्कशापों, सम्मेलनों की संख्या कम कर दी गई और परिषद् के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने वालों के दैनिक भत्ते के भुगतान को युक्तिसंगत कर दिया गया।

1972-73 वर्ष में परिषद् की प्राप्तियों तथा भुगतान स्थिति का अधिक विस्तृत विवरण परिशिष्ट 3 में दिया गया है।

6. स्टाफ :

डा० शिव के० मित्र की परिषद् के संयुक्त निदेशक के रूप में नियुक्ति 1 सितम्बर 1972 (दोपहर से पहले) से हुई। श्री एस० ए० आबेदीन ने 31 अगस्त 1972 (दोपहर बाद) को परिषद् के सचिव के पद का कार्यभार छोड़ा और श्री एम० सी० वर्मा ने उसी दिन से सचिव के पद का कार्यभार संभाल लिया।

प्रो० एस० वी० सी० अय्या ने 31 मार्च 1973 (दोपहर बाद) को परिषद् के निदेशक के पद का कार्यभार छोड़ा। भारत सरकार ने आदेश दिया कि जब तक नये निदेशक की नियुक्ति नहीं होती है उस समय तक परिषद् के संयुक्त निदेशक डा० शिव के० मित्र निदेशक के वर्तमान कार्यों का प्रतिपादन करेंगे।

गत वर्ष स्थापित विशेष परियोजना संस्थापन में कार्य कर रहे बहुत से कर्मचारियों की सेवाएं परिषद् के विनियम 60 के अन्तर्गत स्थापित एक प्रवरण समिति द्वारा नियमित की गईं। ऐसा करने से परिषद् के चौथी श्रेणी के कर्मचारियों का काफी कुछ असन्तोष दूर कर दिया गया। क्योंकि भर्ती के नियमों को अन्तिम रूप नहीं दिया जा सका इसलिए परिषद् के बहुत से कर्मचारी जो ऊँचे पदों पर तदर्थ आधार पर पदोन्नत किए गए थे वह उन्ही पदों पर कार्य करते रहे। ऐसी आशा की जाती है कि भर्ती के नियमों को जल्दी ही अन्तिम रूप दे दिया जाएगा और कर्मचारियों को तदर्थ आधार पर पदोन्नति करने की प्रथा बंद कर दी जाएगी।

परिषद् की स्थापना समिति में परिषद् के अध्यक्ष द्वारा नामजद क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों और राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के एक-एक प्रतिनिधि को शामिल करने के लिए परिषद् के विनियम 10 को संशोधित किया गया। परिषद् की स्थापना समिति में परिषद् के संघटक एककों का प्रतिनिधित्व एक सही कदम था जिसने कर्मचारियों को परिषद् के प्रशासन में हाथ दिया।

एक नया विनियम (विनियम न० 63) बनाया गया जिसके अनुसार परिषद् के स्टाफ को व्यावसायिक, वैज्ञानिक और तकनीकी पत्रिकाओं में अनुसंधान प्रबंध और तकनीकी लेख छपवाने के लिए भेजने की स्वतन्त्रता मिल गई। इस से उनको समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं में उन सभी विषयों पर लेख लिखने की स्वतन्त्रता मिल गई जिनका सम्बन्ध परिषद् या उसके कार्यकलापों से न हो और न ही उनमें कोई गोपनीय सामग्री प्रकट की गई हो जो परिषद् में उनकी स्थिति को ध्यान में रखते हुए उनके पास हो। इसके अतिरिक्त इस विनियम से परिषद् के स्टाफ को एक वित्तीय वर्ष में 2,000 रुपये तक पारिश्रमिक प्राप्त करने की स्वतन्त्रता मिल

गई । यह सीमा परिषद् के कर्मचारी को परिषद् की पूर्व-अनुमति से एक वित्तीय वर्ष में 2,000 रुपए से अधिक पारिश्रमिक प्राप्त करने के लिए प्रतिबन्ध नहीं लगाती । परिषद् के शैक्षणिक स्टाफ को विभिन्न शैक्षिक पत्रिकाओं में अधिक से अधिक अनुसंधान प्रबंध या लेख छपवाने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए ऐसे विनियम के बनवाने की जरुरत महसूस की गई । राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् जैसी शैक्षणिक संस्था के लिए इस प्रकार की स्वतन्त्रता केवल स्टाफ सदस्यों के व्यावसायिक विकास के ही लिए नहीं वरन् स्वयं संस्था के लिए भी आवश्यक है ।

7. प्रकाशन

परिषद् पाठ्यपुस्तकें, छात्र अभ्यास पुस्तकें, अध्यापक दर्शिकाएँ, पाठ्यक्रम दर्शिकाएँ, पूरक पठन सामग्री, वार्षिक पुस्तकें, अनुसंधान प्रबन्ध, पत्रिकाएँ इत्यादि विविध प्रकाशन प्रकाशित करती है । इसके प्रकाशनों की देश में ही नहीं विदेशों में भी माँग है । परिषद् देश के सब से बड़े प्रकाशकों में से एक है जो लगभग 32 लाख रुपए मूल्य की पुस्तकें प्रतिवर्ष बेचती है ।

पुस्तकों की कीमत बिना लाभ-हानि के आधार पर निर्धारित की जाती है । वास्तविक मूल्य के ऊपर पुस्तक विक्रेताओं के कमीशन और ऊपरी खर्चों की गुंजायश रखी जाती है फिर भी परिषद् की पुस्तकें, विशेषकर पाठ्यपुस्तकें, बाजार में सब से सस्ती हैं । प्रो० एम०वी० माथुर के सभापतित्व में परिषद् द्वारा स्थापित एक समिति की सिफारिशों के अनुसार परिषद् के प्रकाशन एकक को व्यावसायिक विभाग में बदलने का विचार, जहाँ तक पाठ्यपुस्तकों को भारी संख्या में छापने से सम्बंध है, परिषद् के विचाराधीन है ।

हाल ही में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के प्रकाशन एकक ने तरक्की उर्दू बोर्ड के सहयोग से दो उर्दू की पुस्तकें प्रकाशित की हैं ।

प्रतिवेदन वर्ष में भारत सरकार के सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय द्वारा मुद्रण और आकृति श्रेष्ठता के लिए आयोजित पंद्रहवीं राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता में परिषद् की एक पूरक पठन पुस्तक "नॉन फ़्लावरिंग प्लांट्स ऑफ दि हिमालया" ने योग्यता प्रमाण-पत्र जीता । एक दूसरी पूरक पठन पुस्तक "दि रोमांस् ऑफ थ्येटर" के डस्ट जैकट को दिल्ली में 1972 में आयोजित विश्व पुस्तक प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार मिला ।

1972 में एन० आई० न्यूजलेटर का नाम बदलकर "एन० सी० ई० आर० टी० न्यूजलेटर" रखा गया जो परिषद् के सभी संघटक एककों के कार्यकलापों की प्रसिद्धि करेगा । एन० सी० ई० आर० टी० न्यूजलेटर का प्रथम अंक दिसम्बर 1972 में प्रकाशित हुआ ।

1972-73 की विषय वार प्रकाशित 111 पुस्तकों की सूची परिशिष्ट 20 में दी गई है। विभिन्न राज्य सरकारों/केन्द्र शासित प्रदेशों और दूसरी संस्थाओं द्वारा अपनाई/अनुकूलित/अनुवादित परिषद् की पाठ्यपुस्तकों की सूची इस परिशिष्ट के अनुबन्ध में दी गई है।

निम्नलिखित विषयों से संबंधित बिस्तृत व्यौरा उनके सामने लिखी हुई परिशिष्ट में दिया गया है।

परिषद् तथा उसकी समितियों के सदस्यगण	परिशिष्ट 1
1972-73 में हुई परिषद् और उसकी समितियों की बैठकों की कार्यवाहियों का संक्षिप्त विवरण	परिशिष्ट 2
कैम्पसों का विकास	परिशिष्ट 4
राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान पुस्तकालय	परिशिष्ट 5
राष्ट्रीय एकीकरण परियोजना	परिशिष्ट 8
जनसंख्या शिक्षा	परिशिष्ट 9
ग्रामीण प्रतिभा खोज योजना	परिशिष्ट 10
परीक्षा सुधार	परिशिष्ट 11
व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों को अनुदान	परिशिष्ट 12
स्वीकृत अनुसंधान परियोजनाओं को सहायता अनुदान	परिशिष्ट 14
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय के साथ सहयोग	परिशिष्ट 18
अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग	परिशिष्ट 19

परिशिष्ट

परिशिष्ट-1

परिषद् तथा उसकी समितियों के सदस्यगण

(क) परिषद्

1. प्रो० सैयद नूरुल हसन
   केन्द्रीय मंत्री
   शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
   शास्त्री भवन
   नई दिल्ली (अध्यक्ष)

2. डा० दौलत सिंह कोठारी
   अध्यक्ष
   विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
   बहादुर शाह जफर मार्ग
   नई दिल्ली

3. सचिव
   भारत सरकार
   शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
   नई दिल्ली

4. डा० के० एल० श्रीमाली
   उपकुलपति
   काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
   वाराणसी (30-9-72 तक)
   श्री गोपाल त्रिपाठी
   उपकुलपति
   लखनऊ विश्वविद्यालय
   लखनऊ (30-9-1972 के पश्चात्)

5. प्रो० एस० एन० सेन
   उपकुलपति
   कलकत्ता विश्वविद्यालय
   कलकत्ता (30-9-1972 तक)
   श्री एम० एम० गनी
   उपकुलपति
   कालीकट विश्वविद्यालय
   कालीकट (30-9-1972 के पश्चात्)

6. श्री एन० डी० सुन्दरवडिवेलु
   उपकुलपति
   मद्रास विश्वविद्यालय
   मद्रास (30-9-1972 तक)
   डा० आर० मोहन्ती
   उपकुलपति
   उत्कल विश्वविद्यालय
   भुवनेश्वर (30-9-1972 के पश्चात्)

7. श्रीमती शारदा दीवान
   उपकुलपति
   एस० एन० डी० टी०
   महिला विश्वविद्यालय
   1, नाथीभाई ठाकरसी रोड
   बम्बई (30-9-72 तक)

श्री एन० के० वकील
उपकुलपति
महाराजा सियाजीराव विश्वविद्यालय
बड़ौदा (30-9-1972 के पश्चात्)

8. शिक्षा मन्त्री
आंध्र प्रदेश
हैदराबाद

9. शिक्षा मन्त्री
असम
शिलांग

10. शिक्षा मन्त्री
बिहार
पटना

11. शिक्षा मन्त्री
गुजरात
अहमदाबाद

12. शिक्षा मन्त्री
हरियाणा
चंडीगढ़

13. शिक्षा मन्त्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला

14. शिक्षा मन्त्री
जम्मू तथा कश्मीर
श्रीनगर

15. शिक्षा मन्त्री
केरल
त्रिवेन्द्रम

16. शिक्षा मन्त्री
मध्यप्रदेश
भोपाल

17. शिक्षा मन्त्री
महाराष्ट्र
बम्बई

18. शिक्षा मन्त्री
मणिपुर
इम्फाल

19. शिक्षा मन्त्री
मेघालय
शिलांग

20. शिक्षा मंत्री
मैसूर
बंगलौर

21. शिक्षा मंत्री
नागालैंड
कोहिमा

22. शिक्षा मंत्री
उड़ीसा
भुवनेश्वर

23. शिक्षा मन्त्री
पंजाब
चण्डीगढ़

24. शिक्षा मन्त्री
राजस्थान
जयपुर

25. शिक्षा मन्त्री
तमिलनाडु
मद्रास

26. शिक्षा मन्त्री
त्रिपुरा
अगरतल्ला

27. शिक्षा मन्त्री
उत्तर प्रदेश
लखनऊ

28. शिक्षा मन्त्री
पश्चिमी बंगाल
कलकत्ता

29. मुख्य कार्यकारी पार्षद
दिल्ली प्रशासन
दिल्ली

30. शिक्षा मन्त्री
गोआ, दमन, और दीव
पानाजी

31. शिक्षा मन्त्री
पांडिचेरी सरकार
पांडिचेरी

32. प्रो० डी० पी० यादव
उप-मंत्री
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली

33. प्रो० सं० वि० चन्द्रशेखर अय्या
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

34. प्रो० एम० वी० माथुर
निदेशक
शैक्षिक योजना-निर्माताओं और
प्रशासकों का राष्ट्रीय स्टाफ कालेज
नई दिल्ली

35. प्रो० शान्ति नारायण
कालेजों के शाखाध्यक्ष
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

36. श्री एस० उदापाचार
मुख्य अध्यापक
नरुपतुंग बहुद्देशीय उच्चतर माध्य-
मिक विद्यालय
हैदराबाद

37. श्री डी० एस० बाजपेयी
प्रधानाचार्य
केन्द्रीय विद्यालय
भारत टैक्नॉलॉजी संस्थान
कानपुर

38. डा० शिव के० मित्र
संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

39. प्रो० प्रभुदत्त शर्मा
अध्यक्ष
पाठ्यपुस्तक विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

40. डा० मोहनचन्द्र पंत
अध्यक्ष
विज्ञान शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

41. प्रो० जे० के० शुक्ल
प्रधानाचार्य,
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
अजमेर

42. श्री टी० आर० जयरामन्
संयुक्त सचिव
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
शास्त्री भवन, नई दिल्ली

43. श्री ओ० पी० मोहला
वित्तीय सलाहकार
(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्)
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
नई दिल्ली

44. श्री भक्त दर्शन
15, गुरुद्वारा रकाब गंज मार्ग
नई दिल्ली (30-9-72 तक)
श्रीमती वी० कुटेस्वारम्मा
प्रधानाचार्य
चिल्ड्रेन्स मांटेसरी हाई स्कूल
विजयवाड़ा (30-9-72 के पश्चात्)

45. श्री एच० नरसिंहय्या
प्रधानाचार्य
नेशनल कालेज
बंगलौर (30-9-1972 तक)
श्री गुरदयाल सिंह जस्सल
मुख्याध्यापक
राजकीय महाविद्यालय
अबोहर (30-9-1972 के पश्चात्)

46. श्री आई० जे० पटेल
अध्यक्ष
राज्य अध्यापक शिक्षा बोर्ड
राज्य शिक्षा संस्थान, रायखड
अहमदाबाद (30-9-1972 तक)
श्री एम० डी० कुलकरनी
प्रधानाचार्य
धर्मप्रकास श्रीनिवासियाह
महाविद्यालय
स्कीम 6, सड़क नं० 24 (सी०)
सिअोन (पश्चिम)
बम्बई (30-9-1972 के पश्चात्)

47. श्री एस० पी० वर्मा
उप-सचिव
मध्यप्रदेश सरकार
भोपाल (30-9-72 तक)
श्री गोविन्द चन्द्र साहा
मुख्याध्यापक
तूफानगंज शहर प्राथमिक विद्यालय
डाकखाना तूफानगंज
जिला कूच बिहार (30-9-72 के पश्चात्)

48. प्रो० रईस अहमद
अध्यक्ष
भौतिक विज्ञान विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

49. श्री डी० बी० फटंगारे
थोम्बर बिल्डिंग
कोपार गाँव
जिला अहमदनगर (30-9-72 तक)
श्री बी० मारी राज
सार्वजनिक शिक्षा निदेशक
मैसूर
पो० बाक्स नं० 49
बंगलौर (30-9-72 के पश्चात्)

50. श्री एस० वी० चित्तीबाबू
स्कूल शिक्षा निदेशक
तमिलनाडु
मद्रास (30-9-1972 तक)
श्री एल० एन० गुप्ता
शिक्षा निदेशक
(प्राथमिक और माध्यमिक)
बीकानेर (30-9-1972 के पश्चात्)

51. कुमारी के० पसरीचा
प्रधानाचार्य
कन्या महाविद्यालय
जालन्धर शहर (30-9-1972 तक)
श्री प्रकाश चन्द
सचिव (शिक्षा)
हिमाचल प्रदेश सरकार
शिमला (30-9-1972 के पश्चात्)

52. डा० डी० एन० गोखले
12, फर्गुसन कालेज कैम्पस
पूना (30-9-1972 तक)

डा० ए० यू० शेख
सचिव
शिक्षा विभाग
महाराष्ट्र सरकार
सचिवालय
बम्बई (30-9-1972 के पश्चात्)

53. डा० के० कुरुविला जैकब
प्रधानाचार्य
दि कैथड्रल एण्ड जॉन कॉमन स्कूल
6, अउट्रम रोड
बम्बई (30-9-1972 तक)
कुमारी अहल्या चारी
आयुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
नेहरू हाउस
4, बहादुर शाह जफर मार्ग
नई दिल्ली (30-9-1972 के पश्चात्)

54. श्री एम० अब्दुल गनी साहब
429, पी० आर० स्ट्रीट
मुस्लिमपुर
वनियामवाड़ी
जिला उत्तरी अर्काट (30-9-1972 तक)

प्रो० बी० वेंकटरामन
टाटा इन्स्टीच्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च
होमी भाभा रोड
बम्बई (30-9-1972 के पश्चात्)

सचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली (**सचिव**)

(ख) कार्यकारी समिति

1. प्रो० सैयद नूरुल हसन
केन्द्रीय मन्त्री
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली (**अध्यक्ष**)

2. प्रो० डी० पी० यादव
उप-मन्त्री
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली

3. प्रो० सं० वि० चन्द्रशेखर अय्या
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

4. डा० दौलत सिंह कोठारी
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली

5. प्रो० एम० वी० माथुर
निदेशक
शैक्षिक योजना-निर्माताओं और प्रशासकों का राष्ट्रीय स्टाफ कालेज
नई दिल्ली

6. प्रो० शान्ति नारायण
कालेजों के शाखाध्यक्ष
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

7. श्री एस० उदापाचार
मुख्य अध्यापक
नुरुपतुंग बहुद्देश्यीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
हैदराबाद

8. श्री डी० एस० बाजपेयी
प्रधानाचार्य
केन्द्रीय विद्यालय,
भारतीय टैक्नॉलॉजी संस्थान
कानपुर

9. डा० शिव के० मित्र
संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

10. प्रो० प्रभुदत्त शर्मा
अध्यक्ष
पाठ्यपुस्तक विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

11. डा० मोहनचन्द्र पंत
अध्यक्ष
विज्ञान शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

12. प्रो० जे० के० शुक्ल
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
अजमेर

13. श्री टी० आर० जयरामन्
संयुक्त सचिव
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
नई दिल्ली

14. श्री ओ० पी० मोहला
वित्तीय सलाहकार (रा० शै० अ० प्र० प०)
शिक्षा तथा समाज कल्याण मत्रालय
नई दिल्ली

सचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली (सचिव)

(ग) वित्त समिति

1. श्री टी० आर० जयरामन्
संयुक्त सचिव
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
नई दिल्ली (अध्यक्ष)

2. प्रो० सं० वि० चन्द्रशेखर अय्या
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

3. प्रो० एम० वी० माथुर
निदेशक
शैक्षिक योजना-निर्माताओं और प्रशासकों का राष्ट्रीय स्टाफ कालेज
नई दिल्ली

4. प्रो० शान्ति नारायण
कालेजों के शाखाध्यक्ष
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

5. श्री ओ० पी० मोहला
वित्तीय सलाहकार (रा० शै० अ० प्र० प०)
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
नई दिल्ली

सचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली (सचिव)

(घ) कार्यक्रम सलाहकार समिति

1. निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली (**अध्यक्ष**)

2. संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली (**उपाध्यक्ष**)

3. प्रो० एच० बी० मजूमदार
प्रधानाचार्य
विश्वभारती विश्वविद्यालय
डाकघर शान्तिनिकेतन

4. डा० डी० एम० देसाई
डीन
शिक्षा तथा मनोविज्ञान संकाय
एम० एस० यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा
बड़ौदा

5. श्रीमती एम० ए० ठंकम्मा
अध्यक्ष, शिक्षा विभाग
केरल विश्वविद्यालय
थाईकांड
त्रिवेन्द्रम

6. प्रो० वी० आर० तनेजा
डीन तथा अध्यक्ष
शिक्षा विभाग
पंजाब विश्वविद्यालय
चण्डीगढ़

7. प्रो० सी० एस० बैन्नूर
डीन तथा प्रधानाचार्य
विश्वविद्यालय शिक्षा कालेज
कर्नाटक विश्वविद्यालय
धारवाड़

राज्य शिक्षा संस्थानों के निदेशक

8. डा० (कुमारी) ए० नंदा
निदेशक
राज्य शिक्षा संस्थान
दिल्ली

9. डा० एन० के० उपासनी
श्री वी० वी० चिपलंकर
निदेशक
राज्य शिक्षा संस्थान
एम० एस० सदाशिव पीठ
कुमठेकर रोड
पूना

10. श्री एम० घोष
प्रधानाचार्य
राज्य शिक्षा संस्थान
वाणीपुर
डाकघर बैगाची
जिला 24 परगना

11. श्री टी० आर० दीनदयाल
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
6-2-688 चितलबस्ती, हैदराबाद

12. बेगम एम० कुरेशी
निदेशक
राज्य शिक्षा संस्थान, श्रीनगर

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के कर्मचारी सदस्य

13. श्री सोहनलाल अहलूवालिया
अध्यक्ष
शिक्षण साधन विभाग
नई दिल्ली

14. श्री शंकर नारायण
रीडर
शिक्षण साधन विभाग
नई दिल्ली

15. प्रो० जे० के० शुक्ल
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज
अजमेर

16. श्री टी० आर० वैंकटारमनिया
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज
अजमेर

17. प्रो० प्रभुदत्त शर्मा
अध्यक्ष
पाठ्यपुस्तक विभाग और
अध्यापक शिक्षा विभाग
नई दिल्ली

18. डा० (कुमारी) ई० मार
रीडर
अध्यापक शिक्षा विभाग
नई दिल्ली

19. डा० रामगोपाल मिश्र
क्षेत्रीय सलाहकार
पाठ्यपुस्तक विभाग
प्रभारी अध्यक्ष
आधार सामग्री प्रक्रिया तथा शैक्षिक
सर्वेक्षण एकक
नई दिल्ली

20. डा० श्रीमती पेरीन एच० मेहता
प्रभारी अध्यक्ष
शैक्षिक मनोविज्ञान तथा शिक्षा
आधार विभाग, नई दिल्ली

21. डा० आत्मानंद शर्मा
रीडर
शैक्षिक मनोविज्ञान तथा शिक्षा
आधार विभाग, नई दिल्ली

22. श्री त्रिभुवन शंकर मेहता
प्रभारी अध्यक्ष
सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी
विभाग, नई दिल्ली

23. डा० मोहन चन्द्र पन्त
अध्यक्ष
विज्ञान शिक्षा विभाग
नई दिल्ली

24. श्री निखिल कुमार सान्याल
क्षेत्रीय सलाहकार
विज्ञान शिक्षा विभाग
नई दिल्ली

25. प्रो० जी० बी० कानूनगो
प्रभारी प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज
भोपाल

26. डा० आर० सी० दास
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज
भुवनेश्वर

27. श्री जी० एस० श्रीकंतैया
प्रो० तथा अध्यक्ष
विज्ञान शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज
भुवनेश्वर

28. श्री सी० वी० गोविन्दाराव
प्रभारी प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर

29. प्रो० पी० के० राय
    प्रधानाचार्य
    केन्द्रीय शिक्षा संस्थान
    दिल्ली

30. डा० (कुमारी) एस० दत्त
    रीडर
    केन्द्रीय शिक्षा संस्थान
    दिल्ली

31. श्री निरंजन चक्रवर्ती
    प्रभारी अध्यक्ष
    प्रकाशन एकक
    नई दिल्ली

32. श्री एस० एन० साहा
    इंचार्ज
    राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान पुस्तकालय,
    प्रलेख और सूचना सेवाएँ
    नई दिल्ली

(ङ) प्रकाशन सलाहकार समिति

1. प्रो० ए० मुजीब
   उपकुलपति
   जामिया मिल्लिया इस्लामिया
   नई दिल्ली (अध्यक्ष)

2. श्री एन० के० सुन्दरम
   सहायक शिक्षा सलाहकार
   प्रकाशन एकक
   शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
   नई दिल्ली

3. कुमारी अहल्या चारी
   आयुक्त
   केन्द्रीय विद्यालय संगठन
   नेहरू हाऊस
   बहादुर शाह जफर मार्ग
   नई दिल्ली

4. श्री यू० एस० सीयोलकर
   निदेशक
   पाठ्य पुस्तक उत्पादन एवं
   पाठ्यक्रम ब्यूरो
   महाराष्ट्र राज्य
   'सुरेख', विश्वविद्यालय मार्ग
   पूना

5. श्री एम० पी० एन० शर्मा
   प्रबन्धक संचालक
   बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक
   निगम प्राइवेट लिमिटेड
   ह्वाइट हाऊस
   बुद्ध मार्ग
   पटना

6. श्री एन० नारायण राव
   निदेशक
   आन्ध्र प्रदेश पाठ्यपुस्तक प्रैस
   मिन्ट कम्पाउंड
   हैदराबाद

7. श्री ए० ई० टी० बैरो
   सचिव
   भारतीय स्कूल प्रमाण-पत्र
   परीक्षा परिषद्
   बी-27, पूर्वी निजामुद्दीन
   नई दिल्ली

8. श्री डी० आर० मनकेकर
   39,भारती नगर
   नई दिल्ली

9. बेगम एम० कुरेशी
   निदेशक
   राज्य शिक्षा संस्थान
   श्रीनगर

10. प्रो० सी० एस० बैन्नूर
    डीन तथा प्रधानाचार्य
    विश्वविद्यालय शिक्षा कालेज
    कर्नाटक विश्वविद्यालय
    धारवाड़

11. श्री टी० एस० सदाशिवन
    अध्यक्ष
    वनस्पति विज्ञान विभाग,
    मद्रास विश्वविद्यालय
    मद्रास

12. श्री टी० वी० थिमी गोडा
    पाठ्यपुस्तक निदेशक
    30/30 ए०, पश्चिम कुमार मार्ग
    बंगलौर

13. श्री के० एल० बोर्डिया
    अध्यक्ष
    माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
    राजस्थान
    अजमेर

14. श्री एस० एस० सोधी
    अध्यक्ष
    पंजाब स्कूल शिक्षा मंडल
    चण्डीगढ़

15. श्री डी० एस० बाजपेयी
    प्रधानाचार्य
    केन्द्रीय विश्वविद्यालय
    भारतीय टैक्नॉलाजी संस्थान
    कानपुर

16. श्री निरंजन चक्रवर्ती
    प्रभारी अध्यक्ष
    प्रकाशन एकक
    राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
    प्रशिक्षण परिषद्
    नई दिल्ली **(सदस्य सचिव(**

(च) विज्ञान सलाहकार समिति

1. डा० दौलतसिंह कोठारी
   अध्यक्ष
   विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
   नई दिल्ली **(अध्यक्ष)**

2. डा० आर० सी० महरोत्रा
   प्रोफेसर और अध्यक्ष
   रसायन शास्त्र विभाग
   राजस्थान विश्वविद्यालय
   जयपुर

3. डा० ए० एम० घोष
   प्रोफेसर
   बोस संस्थान
   9-3-1, आचार्य प्रफुल्लचन्द्र रोड
   कलकत्ता

4. श्री आर० के० रथ
   सचिव, उड़ीसा सरकार
   शिक्षा विभाग
   भुवनेश्वर

5. प्रो० बी० वैंकटरामन
   टाटा इंस्टीच्यूट ऑफ फंडामेंटल
   रिसर्च
   होमी भाभा रोड, बम्बई

9. डा० ए० आर० वासुदेव मूर्ति
   प्रोफेसर
   निरिन्द्री और खनिज रसायन
   विज्ञान
   भारतीय विज्ञान संस्थान
   बंगलौर-12

7. प्रो० रईस अहमद
प्रोफेसर
भौतिक विज्ञान विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

8. डा० बी० एम० जौहरी
अध्यक्ष
वनस्पति विज्ञान विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

9. श्री एस० उदापाचार
मुख्य अध्यापक
नरुपतुंग बहुद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
हैदराबाद

10. प्रो० बी० आर० तनेजा
डीन तथा अध्यक्ष
शिक्षा विभाग
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

11. श्री एम० घोष
प्रधानाचार्य
राज्य शिक्षा संस्थान
बाणीपुर
डाकघर बैगाची
जिला 24 परगना

12. डा० आर० सी० दास
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज
भुवनेश्वर

13. डा० मोनहचन्द्र पन्त
अध्यक्ष
विज्ञान शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद
नई दिल्ली
(सदस्य-सचिव)

(छ) निर्माण तथा कार्य समिति

1. प्रो० सं० वि० चन्द्रशेखर अय्या
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली **(अध्यक्ष)**

2. निर्माण सर्वेक्षक अधीक्षक (1)
केन्द्रीय लोक-निर्माण विभाग
निर्माण भवन
नई दिल्ली

3. सहायक वित्तीय सलाहकार (कार्य)
वित्त मंत्रालय
निर्माण भवन
नई दिल्ली

4. ज्येष्ठ वास्तुक (1)
केन्द्रीय लोक-निर्माण विभाग,
(परिषद् का परामर्शी वास्तुक)
निर्माण भवन
नई दिल्ली

5. श्री ओ० पी० मोहला
वित्तीय सलाहकार
(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्)
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली

6. श्री टी० आर० जयरामन्
संयुक्त सचिव
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली

7. उप-प्रधान प्रबन्धक
दिल्ली बिजली पूर्ति निगम
राजघाट बिजली घर
नई दिल्ली

8. कार्यपालक इंजीनियर (भवन)
दिल्ली नगरपालिका निगम
टाउन हाल
दिल्ली

9. प्रो० शान्ति नारायण
कालेजों के शाखाध्यक्ष
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

10. डा० शिव के० मित्र
संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली (सदस्य-सचिव)

11. सचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली (सदस्य-सचिव)

(ज) स्थापना समिति

1. डा० दौलतसिंह कोठारी
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली (अध्यक्ष)

2. प्रो० सं० बि० चन्द्रशेखर अय्या
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

3. डा० शिव के० मित्र
संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

4. श्री टी० आर० जयरामन्
संयुक्त निदेशक
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
नई दिल्ली

5. श्री ओ० पी० मोहला
वित्तीय सलाहकार (परिषद्)
शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय
नई दिल्ली

6. प्रो० शान्ति नारायण
कालेजों के शाखाध्यक्ष
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

7. प्रो० एस० पी० लूथरा
भारतीय टैक्नॉलॉजी संस्थान
नई दिल्ली

8. डा० बी० एन० गांगुली
ईश्वर भवन
7-बी० हौज खास इनक्लेव
नई दिल्ली

9. डा० बी० आर० शेषाचार
अध्यक्ष
प्राणिशास्त्र विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

10. सचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली (**सदस्य-सचिव**)

परिशिष्ट 2

1972-73 में हुई परिषद् और उसकी समितियों की बैठकों की कार्यवाहियों का सारांश

परिषद् की महासमिति की एक बैठक 21 जुलाई 1972 को अन्य बातों के साथ-साथ परिषद् की 1970-71 और 1971-72 की वार्षिक रिपोर्टों के प्रारूप और उसकी 1969-70 की लेखा परीक्षा रिपोर्ट पर विचार करने के लिए हुई।

परिषद् की कार्यकारी समिति की, प्रतिवेदन वर्ष में छः बैठकें 4 अप्रैल, 17 जुलाई, 4 सितम्बर और 7 अक्तूबर 1972 को और 1 तथा 22 मार्च, 1973 को हुईं। इन बैठकों में लिए गये महत्त्वपूर्ण फैसलों का सारांश निम्नलिखित है :

(1) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों/एककों के स्टाफ के पुन-विभाजन के प्रश्न की जाँच के लिए एक विशेष समिति की स्थापना की गई।

(2) अजमेर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज में विज्ञान शिक्षा में एम० एड० पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की स्वीकृति दे दी गई।

(3) यह फैसला किया गया कि पत्राचार एवं ग्रीष्म स्कूल के बी० एड० पाठ्यक्रम को सभी क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में चौथी योजना के अन्त तक चालू रखा जाए।

(4) कार्यकारी समिति ने क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों से संलग्न बहुद्देशीय प्रदर्शन स्कूलों में शिक्षा के 10+2 नमूने को आरम्भ करने के पक्ष में फैसला किया है।

(5) कार्यकारी समिति ने यह फैसला किया है कि सारे भरे जाने वाले रिक्त पदों को, उनकी निर्धारित योग्यताओं का उल्लेख करते हुए मुख्य समाचार-पत्रों में विज्ञापित किया जाए। समिति ने यह भी आदेश

दिया है कि इन पदों पर दो वर्ष के शर्तनामे के आधार पर नियुक्तियां कर ली जाएँ।

(6) क्षेत्रीय सलाहकारों के पदनामों को राज्यों में संपर्क कार्य कर रहे अधिकारियों तक सीमित रखने का फैसला किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान और क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में यह पदनाम समाप्त कर दिया गया और इन संस्थाओं में कार्य कर रहे क्षेत्रीय सलाहकारों को अब रीडर कहा जाएगा और उनके वेतन-मान की रक्षा की जाएगी।

(7) यह फैसला किया गया कि 28 फरवरी 1973 या इससे पहले ही राष्ट्रीय एकीकरण शिविरों के आयोजन का उत्तरदायित्व शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय सँभाले और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् इस सम्बन्ध में केवल शैक्षणिक मार्गदर्शन करे।

(8) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान और क्षेत्रीय कालेजों में कार्य कर रहे शैक्षणिक कर्मचारियों के वर्तमान वेतन ढाँचे को जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के लिए निर्धारित आधार पर हैं, चालू रखा जाए। केन्द्रीय विश्वविद्यालय में तदनुरूप पदों के लिए निर्धारित योग्यताओं का मुख्यतः अनुसरण करते हुए कार्यकारी समिति समय-समय पर विभिन्न पदों के लिए योग्यताएँ निर्धारित करेगी।

(9) यह फैसला किया गया कि परिषद् के विभिन्न संघटक एककों में कार्य कर रहे अध्यापकों की योग्यताएँ और वेतन-मान केन्द्रीय विद्यालय संगठन के अध्यापकों के समान होना चाहिये। लिपिक-वर्गीय कर्मचारियों की योग्यताएँ और वेतन-मान केन्द्रीय सरकार के सचिवालय के स्टाफ के समान होना चाहिए। जहाँ तक शैक्षणिक, आनुषंगिक और दूसरे वर्गों के सहायक स्टाफ का संबंध है उसकी योग्यताएँ और वेतन-मान केन्द्रीय विश्वविद्यालय के तदनुरूप पदों के लिए निर्धारित ढाँचे के अनुसार होने चाहिए।

(10) यह फैसला किया गया कि परिषद् के स्थायी शैक्षणिक स्टाफ की सेवा निवृत्ति आयु वही होगी जो केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में है जबकि परिषद् के स्थाई प्रशासनिक और दूसरे स्टाफ की सेवा निवृत्ति आयु वही होगी जो भारत सरकार में है।

(11) कार्यकारी समिति ने एक नया विनियम (विनियम न० 63) बनाया जिसके अनुसार परिषद् के स्टाफ को व्यावसायिक, वैज्ञानिक, और

तकनीकी पत्रिकाओं में अनुसंधान प्रपत्र और तकनीकी लेख छपवाने की स्वतन्त्रता मिल गई। परिषद् के स्टाफ को समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं में उन सभी विषयों पर लेख लिखने की स्वतन्त्रता मिल गई जिनका सम्बन्ध परिषद् और उसके कार्यकलापों या राज्य और केन्द्रीय सरकारों और उनके कार्यकलापों से न हो। परिषद् का स्टाफ उपरोक्त लिखित योगदानों पर एक वित्तीय वर्ष में 2,000 रुपये तक परिश्रमिक प्राप्त कर सकेगा।

(12) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् की एक संस्था के रूप में एक शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र की स्थापना का फैसला किया गया। केन्द्र के कार्यों की देखभाल के लिए एक प्रबन्ध समिति गठित की गई।

(13) सभी क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में उर्दू भाषा के शिक्षण की व्यवस्था करने का फैसला किया गया।

(14) अध्यक्ष को एक शैक्षणिक सलाहकार समिति गठित करने के लिए प्राधिकृत किया गया जिसमें परिषद् के सभी संस्थानों से हर स्तर से लिये गए 20 सदस्य और शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय के प्रतिनिधि होंगे।

(15) परिषद् के अशैक्षणिक कर्मचारियों के लिए एक सम्मिलित परामर्श व्यवस्था और अनिवार्य मध्यस्थता के गठन के एक प्रस्ताव को मूल रूप से स्वीकार कर लिया गया।

(16) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् में परीक्षा सुधार का एक विशेष कक्ष दो वर्ष की अवधि के लिये स्थापित करने का फैसला किया गया है।

(17) कार्यकारी समिति ने राज्यों में क्षेत्रीय सलाहकारों के दफ्तरों को 28 फरवरी 1973 के बाद भी कार्य करते रहने की अनुमति दे दी।

प्रतिवेदन वर्ष में परिषद् की वित्त समिति की दो बैठकें 8 जून और 8 दिसंबर 1972 को हुईं। इन बैठकों में समिति ने कार्यकारी समिति को जो सिफारिशें कीं वह हैं—परिषद् में जनसम्पर्क अधिकारी के पद का सृजन, 1969-70 वर्ष की लेखा-परीक्षा रिपोर्ट का अनुमोदन, प्रशासन द्वारा स्वीकृत परिषद् की पाठ्यपुस्तकों की बिक्री और वितरण के लिए दिल्ली प्रशासन के साथ हुए करारनामे की अवधि बढ़ाने के प्रस्ताव का अनुमोदन, क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों से संलग्न बहुद्देशीय प्रदर्शन स्कूलों के अध्यापकों के वेतन मानों का पुनरीक्षण, मुख्य लेखा-अधिकारी को परिषद् का आन्तरिक वित्त-सलाहकार बनाने की घोषणा, सामाजिक अध्ययन की अभ्यास

पुस्तकों के लेखकों को संशोधित दरों से भुगतान की अनुमति, ग्रीष्म विज्ञान संस्थानों के शैक्षणिक कक्ष के लिए पदों का सृजन, परिषद् के 1972-73 के परिशोधित अनुमानों और 1973-74 के बजट अनुमानों का अनुमोदन ।

इस वर्ष कार्यक्रम सलाहकार समिति की एक ही बैठक 6 और 7 सितम्बर 1972 को हुई। इस समिति ने 1972-73 के परिशोधित कार्यक्रमों और राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों, क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों और केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के 1973-74 के प्रारूप प्रस्तावों पर विचार किया और उन्हें स्वीकृत किया। समिति ने इस बात पर संतोष प्रकट किया कि परिषद् के विभिन्न संघटक एककों ने 1973-74 के लिए बहुत से उपयोगी कार्यक्रमों और परियोजनाओं को प्रस्तावित किया। फिर भी समिति ने ऐसा अनुभव किया कि प्रस्तावित कार्यक्रमों की प्राथमिकताएँ निर्धारित करने में प्रर्याप्त सावधानी नहीं बरती गई। इसलिए समिति ने प्रत्येक संघटक एकक को प्राथमिकताओं के अनुसार कार्यक्रमों को रखने का निदेश दिया है। इसके अतिरिक्त समिति ने निम्नलिखित सुझाव दिए हैं :

(1) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के अध्यापक प्रशिक्षण सहित स्कूल शिक्षा के गुणात्मक सुधार जैसे कार्यक्रमों को विकसित करने की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए जिनको किसी दूसरी संस्था ने नहीं लिया है ।

(2) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को ऐसे कार्यक्रमों को हाथ में नहीं लेना चाहिए जिनका देश में व्यापक प्रभाव न पड़े ।

(3) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् भारत में शैक्षणिक अनुसंधान का विश्वकोष तैयार करने का कार्यक्रम प्रारम्भ कर सकती है।

(4) देश में विभिन्न विश्वविद्यालय शिक्षा विभागों में किए जा रहे कार्यों के समन्वय के लिए परिषद् उपयुक्त कार्यक्रम विकसित करे।

(5) परिषद् की व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों की अनुदान योजना का और अधिक प्रचार किया जाना चाहिए।

(6) परिषद् को स्कूलों में विज्ञान क्लबों को स्थापित करने और सुदृढ़ करने के कार्यक्रम को और बढ़ाना चाहिए। समिति ने ऐसा अनुभव किया कि क्षेत्रीय आधार पर क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों द्वारा इस योजना का कार्यान्वयन परिषद् के लिए सुविधाजनक होगा।

(7) परिषद् को विज्ञान शिक्षा में नवीन कार्यक्रमों और विचारों पर विचार-विमर्श करने के लिए 5-6 दिन की अवधि का राज्य विज्ञान

शिक्षा संस्थानों और राज्य शिक्षा संस्थानों के निदेशकों का एक सम्मेलन आयोजित करना चाहिए। व्यावसायिक संगठनों, अध्यापक प्रशिक्षण स्कूलों और कालेजों के कुछ प्रतिनिधियों को भी सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमन्त्रित करना चाहिए।

(8) प्राथमिक अध्यापकों के लिए विचार गोष्ठी पठन कार्यक्रम प्रादेशिक भाषाओं में आयोजित होना चाहिए और इस कार्यक्रम का कार्यभार क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों को सम्भालना चाहिए।

(9) परिषद् को अनुसंधान कार्यकर्ताओं के प्रयोग के लिए आधार सामग्री बैंक स्थापित करने का प्रयत्न करना चाहिए।

(10) परिषद् द्वारा मणिपुर राज्य में शिक्षा के व्यापक सर्वेक्षण के प्रस्ताव का समिति ने स्वागत किया। समिति ने सिफारिश की कि परिषद् प्रत्येक राज्य की शैक्षिक पद्धति का अध्ययन करे और उसकी महत्त्वपूर्ण बातों को पत्रिका में प्रकाशित करे।

(11) परिषद् को अध्यापकों के व्यावसायिक विकास के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम विकसित करना चाहिए। यह भी अनुभव किया गया कि बहुत से योग्य अध्यापकों को सेवा निवृत्ति के पश्चात् अपनी प्रायोगिक परियोजनाएँ और दूसरे अनुसन्धान कार्य करने का अवसर नहीं मिलता। इसलिए यह सुझाव दिया गया कि परिषद् सेवा निवृत्त अध्यापकों को अनुसन्धान कार्य करने के लिए प्रेरित करने की उपयुक्त योजना विकसित करे। यह भी सुझाव दिया गया कि परीक्षण और अनुसन्धान कार्य कुछ स्कूलों द्वारा समूह परियोजना के रूप में किया जाना चाहिए। व्यावसायिक संगठनों के पृथक-पृथक अध्यापकों को भी ऐसे प्रायोगिक अनुसंधान कार्य हाथ में लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए। ऐसा अनुभव किया गया कि इस प्रकार का कार्य राज्य शिक्षा संस्थानों और राज्य स्तर की दूसरी संस्थाओं द्वारा सुचारु रूप से चलाया जा सकता है। एक विशेष समिति इस समस्या का अध्ययन करने और परिषद् को रिपोर्ट देने के लिए गठित की गई।

(12) समिति ने सुझाव दिया कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् स्कूल शिक्षा के 10+2 ढाँचे के अनुसार पाठ्यक्रम विकसित करने के लिए एक एकक की स्थापना करे।

(13) समिति ने सुझाव दिया कि परिषद् अध्यापक प्रशिक्षण की सेवाकालीन योजना को अग्रता आधार पर विकसित करे। यह भी अनुभव किया गया कि इस कार्य की देखभाल के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के लिए यह आवश्यक है कि वह एक पृथक एकक की स्थापना करे।

परिशिष्ट-3

वर्ष 1972-73 के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की लेखा विवरणी

समेकित प्राप्तियाँ तथा भुगतान खाता

प्राप्तियाँ

	(संख्या रुपए में)
अल्पशेष	41,31,141
भारत सरकार से सहायतार्थ अनुदान	
(क) रा० शै० अनु० प्रशि० परि० को सामान्य अनुदान	2,88,85,000
(ख) विशेष अनुदान	17,00,539
अन्य स्रोतों से अंशदान	—
प्राप्तियाँ : (क) प्रकाशन आदि की बिक्री	30,91,782
(ख) अन्य प्राप्तियाँ	11,32,528
भविष्य निधियाँ	15,14,003
जमा रकमें, पेशगियाँ, उचंत और प्रेषण	10 45,400
जोड़	4,15,00,393

भुगतान

			(संख्या रुपए में)
योजनेतर व्यय			2,13,96,956
(क) वेतन तथा भत्तों और कार्य-क्रमों आदि पर व्यय		2,08,93,304	
(ख) ऋण तथा पेशगियाँ	11,28,663		
वसूलियाँ घटाकर	6,54,448	4,74,215	
(ग) विशेष अनुदान में से व्यय (योजनेतर)		29,437	
योजना व्यय			1,15,75,147
(क) वेतन, भत्तों और कार्य-क्रमों आदि पर व्यय	1,01,18,126		
(ख) विशेष अनुदान में से व्यय	14,57,021		
भविष्य निधि			8,97,309
जमा रकमें, पेशगियाँ, उचंत और प्रेषण			13,14,440
इतिशेष			63,16,541
जोड़			4,15,00,393

परिशिष्ट-4

कैम्पसों का विकास

(क) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान कैम्पस

प्रतिवेदन वर्ष में टाइप II के 32 और टाइप III के 32 क्वाटरों और निदेशक बंगले का निर्माण कार्य पूरा कर लिया गया। इसके अतिरिक्त टाइप I के 32, टाइप IV के 16 और V के 8 क्वाटरों का निर्माण-कार्य भी प्रारम्भ किया गया।

दिल्ली बिजली पूर्ति निगम से राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान कैम्पस में एक बिजली का सब-स्टेशन लगाने की प्रार्थना की गई।

प्रकाशन एकक के लिए माल रखने के लिए तीन ट्यूब के आकार की संरचनाओं के बीच उपलब्ध स्थान पर अस्थाई शैडों का निर्माण किया गया।

(ख) क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों के कैम्पस

क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों के कैम्पसों में वर्ष 1972-73 में कोई निर्माण-कार्य प्रारम्भ नहीं किया जा सका क्योंकि यह कार्य राज्य लोक निर्माण विभाग के बजाए केन्द्रीय निर्माण विभाग के सुपुर्द कर दिया गया था। फिर भी स्टाफ क्वाटरों के निर्माण के लिए निम्नलिखित प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षा कालेज के नाम के सामने लिखी गई राशि केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के पास जमा करा दी गई---

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, अजमेर	1.95 लाख रुपया
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भुवनेश्वर	2.00 लाख रुपया
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल	3.99 लाख रुपया
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर	2.95 लाख रुपया

परिशिष्ट-5

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान पुस्तकालय

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन० आई० ई०) के नई दिल्ली स्थित कैम्पस में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान का काफी बड़ा पुस्तकालय है। यह पुस्तकालय विशेष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों के अनुसंधान कर्मचारियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इसके उपयोग कर्त्ताओं में वह लोग भी सम्मिलित हैं जो दूसरे अनुसंधान और शैक्षणिक संगठनों में कार्य करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान कैम्पस में सारे वर्ष आयोजित सेमिनारों और कर्मशालाओं आदि में आए राज्य स्तर के प्रतिनिधियों और अध्यापक प्रशिक्षकों द्वारा भी पुस्तकालय का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त यह पुस्तकालय बहुत-सी स्थानीय संस्थाओं को अन्तर-पुस्तकालय उधार सुविधाएँ भी प्रदान करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान पुस्तकालय में लगभग एक लाख पुस्तकें और लगभग 4,500 पत्र-पत्रिकाओं के जिल्द बँधे हुए अंक हैं। इनमें लगभग 3,500 भारतीय तथा विदेशी पत्र-पत्रिकाएँ हैं जो वार्षिक चन्दा देकर प्राप्त की जाती हैं और लगभग 75 बिना मूल्य के प्राप्त होती हैं।

उपयोग कर्त्ताओं की बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान पुस्तकालय हर मास शैक्षणिक विचार-धाराओं से सम्बन्धित विषयों पर लगभग 150 नई पुस्तकें खरीदता है।

प्रतिवेदन वर्ष में लगभग 1,675 नई पुस्तकें पुस्तकालय में बढ़ाई गयीं। इन नई पुस्तकों की एक सूची राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के सब विभागों में घुमाई गई।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के निदेशक ने राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान पुस्तकालय के लिए उपयुक्त पुस्तकों को छाँटने और उनको खरीदने के लिए पुस्तकालय समिति का गठन किया है। इस समिति में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों का एक-एक प्रतिनिधि है। प्रतिवेदन वर्ष में इस समिति की चार बैठकें हुईं।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान पुस्तकालय समिति, जिसे केशवन समिति भी कहते हैं और जिसने वर्ष 1971-72 में अपनी रिपोर्ट दे दी थी, उसने पुस्तकालय खंड की डिजाइन, उसकी भूसम्पत्ति और पुस्तकालय स्टाफ की आवश्यकताओं, उनके वेतनमानों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सिफारिशें की हैं। इस समिति की सिफारिशों का कार्यान्वयन विहित ढंग से किया जा रहा है।

परिशिष्ट-6

पाठ्यक्रम-विकास

वर्ष 1972-73 में पाठ्क्रम-विकास के क्षेत्र में की गई प्रगति का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है।

1. विज्ञान और गणित

1.01 प्राथमिक स्तर पर विज्ञान और गणित—कक्षा पाँच के लिए 1971-72 में लिखित पाठ्यपुस्तक "साइन्स इज डूइंग" को अंग्रेजी और हिन्दी में छापा गया और उनकी प्रतियाँ मार्गदर्शी परियोजना स्कूलों में वितरित की गयीं। कक्षा पाँच की पुस्तक "साइन्स इज डूइंग" पर एक मूल्यांकन पुस्तिका तैयार की गई और राज्यों को भेजी गई। कक्षा पाँच की अध्यापक दर्शिका का हिन्दी में अनुवाद भी किया गया, सम्पादन किया गया और अंग्रेजी व हिन्दी दोनों भाषाओं के संस्करणों को छपने के लिए भेज दिया गया। इसी बीच इसकी प्रतिलिपियाँ ग्रहण/अनुकूलन और क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद करने के लिए भेजी गयीं।

"इन्साइट इन्टू मैथेमेटिक्स पार्ट टू" को अन्तिम रूप देकर छपने भेज दिया। इस श्रृंखला का भाग तीन निर्माणाधीन है।

1.02 माध्यमिक विज्ञान शिक्षा परियोजना (यूनेस्को सहायता प्राप्त)—यह एक चालू परियोजना है। 1972-73 में माध्यमिक स्कूलों के ज्येष्ठ स्तर के लिए भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान और गणित विषयों पर पाठ्यक्रमीय सामग्री विकसित की गई। मिडिल स्कूल स्तर की सामग्री में संशोधन का कार्य लगातार किया जा रहा है। नवीं कक्षा की भौतिकी और रसायन विज्ञान पाठ्यपुस्तकों को प्रतिवेदन वर्ष में अन्तिम रूप दिया गया और छपने भेज दिया गया। कक्षा नौ की जीव विज्ञान और दसवीं कक्षा की भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान की पुस्तकें तैयार होने के विभिन्न चरणों में हैं। इन दोनों कक्षाओं के तदनुरूप अध्यापक दर्शिकाएं भी तैयार की जा रही हैं।

मिडिल स्कूल स्तर पर कक्षा 6 के लिए जीवविज्ञान और भौतिकी में किट पुस्तिकाओं की पांडुलिपियाँ कुछ नई सामग्रियों और चित्रों का समावेश करके संशोधित की गईं और उनको छपने के लिए भेजा गया। भौतिकी में कक्षा 7 और 8 की किट-पुस्तिकाएँ भी तैयार हैं। रसायन विज्ञान किट-पुस्तिका को संशोधित किया जा रहा है। मिडिल स्तर की पाठ्यपुस्तक भौतिकी भाग तीन को भी संशोधित किया गया।

कक्षा 9 और 10 की बीजगणित और रेखागणित की पाठ्यपुस्तकों के प्रारूप तैयार किए गए और उनका सम्पादन किया गया। मिडिल स्तर की बीजगणित और रेखागणित भाग एक और उनकी तदनुरूप अध्यापक दर्शिकाओं के अंग्रेजी संस्करणों को भी संशोधित किया गया। इन पुस्तकों के हिन्दी और अंग्रेजी दोनों संस्करण छपने के लिए तैयार हैं। मिडिल स्तर की बीजगणित और रेखागणित के भाग दो और बीजगणित भाग तीन के संशोधित संस्करण भी तैयार किए गए।

1.03 विज्ञान शिक्षा (अध्ययन दल) के विकास के लिए व्यापक योजना—प्रतिवेदन वर्ष में तीन गणित, चार भौतिकी और एक-एक रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान में अध्ययन दलों ने कार्य जारी रखा। भौतिकी पाठ्यपुस्तक का भाग तीन छपकर आ गया, भाग चार को अंतिम रूप दिया गया और भाग पाँच और छ: की पांडुलिपियों को अंतिम रूप दिया जा रहा था। रसायन विज्ञान अध्ययन दल ने कक्षा 9 और 10 की अध्यापक दर्शिकाओं को अंतिम रूप देने के लिए कार्य किया। रसायन विज्ञान पाठ्यपुस्तक के भाग चार और पाँच को और प्रयोगशाला, पुस्तिकाओं को छपने के लिए भेजा गया। जीव विज्ञान अध्ययन दल ने पाठ्यपुस्तकों और अध्यापक दर्शिकाओं के भाग चार, पाँच और छ: और लगभग 12 पूरक-पठन सामग्री की पुस्तकें छपने के लिए भेजीं। हाई स्कूल स्तर के पहले वर्ष के लिए बीजगणित और रेखागणित के सम्पूर्ण रूप के पहले प्रारूप गणित अध्ययन दल ने विकसित किए। इन्हीं पुस्तकों के भाग दो और तीन हाई स्कूल स्तर के दूसरे और तीसरे वर्ष के लिए तैयार किए जा रहे हैं। बीजगणित की पहली और दूसरी पुस्तकों की और रेखागणित की पहली, दूसरी और तीसरी पुस्तकों की अध्यापक दर्शिकाएँ और बीजगणित की तीसरी पुस्तक छापी गई।

1.04 विज्ञान फिल्मों, फिल्मस्ट्रिपों, स्लाइडों और किटों का उत्पादन—वर्ष 1972-73 में विज्ञान के नए पाठ्यक्रम के समर्थन में निम्नलिखित सामग्रियाँ विकसित की गईं।

(क) फिल्में

(1) "नो योर बायोलॉजी किट" पार्ट 1—वनस्पति विज्ञान की यह फिल्म कृत्रिम उपकरणों की जगह किटों के प्रयोग पर प्रकाश डालती है। यह फिल्म यह भी दिखाती है कि किटों की विभिन्न वस्तुओं का प्रभावपूर्ण ढंग से किस प्रकार प्रयोग किया जाए।

(2) "नो यौर वायलाजी किट" पार्ट III—मानव शरीर संरचना की यह फिल्म अध्यापकों को मानवीय इंद्रिय विज्ञान की प्रदर्शन तकनीकों को समझाती है।

(3) "टीचिंग एलीमेंट्री फिजिक्स टुडे"। यह फिल्म अध्यापकों के लिए है जिसमें यह प्रदर्शित किया गया है कि वायुमण्डल के दबाव के पाठ को किस प्रकार प्रभावपूर्ण ढंग से पढ़ाया जा सकता है।

(4) "इनर्जी इन इट्स वैरियस फार्म्ज"। यह फिल्म अध्यापकों के लिए ऊर्जा के पाठ के शिक्षण पर है।

(ख) फिल्मस्ट्रिपें

दो फ़िल्मस्ट्रिपें—"सिमेट्री" और "प्रेशर इन लिक्विड्ज" तैयार की गईं।

(ग) स्लाइडें

चार स्लाइडों का एक सेट भी तैयार किया गया। वह चार स्लाइडें है "नो योर वॉयोलॉजी किट—ह्यूमन फिजिओलॉजी"; "डाइवर्सिटी ऑफ प्लांट्स"; "फिजिक्स" और "मैथेमेटिक्स"।

(घ) किटें

मिडिल स्कूल स्तर के लिए आदर्श रूप में दो गणित प्रदर्शन किटों को तैयार किया गया।

1.05 विज्ञान में पूरक पठन सामग्री का उत्पादन

प्रतिवेदन वर्ष में, विज्ञान में पूरक पठन सामग्री तैयार करने का कार्य चालू रहा। इस कार्यक्रम की प्रगति का विवरण निम्नलिखित है :

(I) पुस्तकें जो प्रतिवेदन वर्ष में प्रकाशित हुईं

1. दि स्टोरी ऑफ ट्रांस्पोर्ट
2. रॉक्स अनफ़ोल्ड दि पास्ट
3. मेघनाद साहा का जीवन और कार्य
4. बर्ड्ज एण्ड बर्ड वाचिंग

(II) पुस्तकें जिनको छपने के लिए प्रेस में भेजा गया

1. मेरीन प्लांट्स
2. ऑवर ट्री नेबर्स

2. सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी

2·01 सामाजिक अध्ययन—प्राथमिक कक्षाओं के लिए दस वर्षीय कार्यक्रम के आधार पर सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम तैयार किया गया। उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए इसमें कुछ अर्थशास्त्र के तत्वों का समावेश किया गया। सामाजिक अध्ययन पाठ्यपुस्तक का दूसरा भाग तैयार किया जा रहा है। भारतीय संस्कृति और नागरिकता की शिक्षा पर एक पाठ्यक्रम विकसित किया गया।

2·02 इतिहास—इतिहास की पाठ्यपुस्तक "आधुनिक भारत" के अंग्रेजी संस्करण को अंतिम रूप दिया गया। मिडिल और हाई स्कूल स्तर के पाठ्यक्रम भी विकसित किए गए।

2.03 भूगोल—मिडिल और हाई स्कूल स्तरों के लिए स्कूल पाठ्यक्रम के दस वर्षीय कार्यक्रम के आधार पर पाठ्यक्रम विकसित किए गए।

2.04 नागरिक शास्त्र—कक्षा 8 की पाठ्यपुस्तक "स्वतंत्र भारत" का अंग्रेजी संस्करण तैयार किया गया। मिडिल, हाई स्कूल और उच्चतर माध्यमिक स्तरों के लिए नागरिकशास्त्र के पाठ्यक्रम विकसित किए गए। उच्चतर माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम की एक हस्तपुस्तिका को भी अंतिम रूप दिया गया। भारत की स्वाधीनता की 25 वीं वर्षगांठ समारोह कार्यक्रमों के अंतर्गत स्कूलों में बाँटने के लिए "कांस्टीट्यूशन ऑफ इंडिया फॉर दी यंग रीडर" पुस्तक को संशोधित किया गया।

2.05 अर्थशास्त्र—प्रतिवेदन वर्ष में हाई स्कूल स्तर के लिए अर्थशास्त्र का पाठ्यक्रम और उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के अध्यापकों के लिए एक हस्तपुस्तिका विकसित की गई।

2.06 समाज विज्ञान – स्कूल पाठ्यक्रम के दस वर्षीय कार्यक्रम के अन्तर्गत हाई स्कूल स्तर के लिए एक समाज विज्ञान का पाठ्यक्रम विकसित किया गया।

2.07 भाषाएँ—स्कूल की दस वर्षीय योजना अनुसार प्राथमिक, मिडिल और उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए मातृभाषा के रूप में हिन्दी के पाठ्यक्रम का प्रारूप समन्वित शिक्षण पर जोर देते हुए संशोधित किया गया। इसी प्रकार का हिन्दी शिक्षण पाठ्यक्रम द्वितीय भाषा के रूप में स्कूल शिक्षा के नए ढाँचे के अनुसार संशोधित किया गया। एक सेमिनार का आयोजन भाषा के शिक्षण और अधिगम के अतिरिक्त भाषात्मक और साहित्यिक पहलुओं को खोजने के लिए किया गया। उसमें पाठ्यक्रम का एक नया नमूना तैयार किया गया। उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं की हिन्दी गद्य और पद्य की दो नई पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की गईं। कक्षा दो की हिन्दी पाठ्यपुस्तक के लिए सामग्री एकत्रित करने का कार्य चल रहा है। कक्षा 6 में संस्कृत की उत्कृष्ठ भाषा पढ़ाने के लिए एक पाठ्यपुस्तक तैयार की जा रही है।

2.08 पूरक पठन सामग्री की तैयारी—

प्रतिवेदन वर्ष में निम्नलिखित पूरक पठन पांडुलिपियों को तैयार किया गया :

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई
2. पावन गंगा
3. काज़ी नज़रुल इस्लाम
4. बापू के पत्र चुन्नू मुन्नू के नाम
5. दि रोमांस ऑफ मनी

3. प्राथमिक स्तर के लिए न्यूनतम पाठ्यक्रम मानकों का विकास

प्राथमिक शिक्षा स्तर के लिए न्यूनतम पाठ्यक्रम मानकों को विकसित करने की परियोजना पाठ्यक्रम योजना क्षेत्र में एक नई परियोजना है। इसका मुख्य उद्देश्य प्राथमिक स्कूल के छात्रों के लिए शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर न्यूनतम ध्येयों की प्राप्ति है। प्रतिवेदन वर्ष में शैक्षिक अनुभवों को रेखांकित करने के लिए हुई कार्य-दलों की बैठकों के लिए विस्तृत पृष्ठभूमि सामग्री तैयार की गई। विभिन्न राज्यों के गृह विज्ञान पाठ्यक्रम का अध्ययन किया गया और कक्षा एक से चार के लिए गृह विज्ञान में एक सन्तुलित पाठ्यक्रम का प्रारूप विकसित किया गया।

4. प्राथमिक स्तर के लिए पाठ्यक्रम का विकास

दस-वर्षीय स्कूल कार्यक्रम के प्राथमिक स्तर अर्थात् कक्षा एक से पाँच के लिए एक पाठ्यक्रम तैयार किया गया। इसमें सामान्य विषयों और कार्य अनुभव के अतिरिक्त जनसंख्या शिक्षा और राष्ट्रीय एकीकरण के विचारों को शामिल किया गया है।

5. पूर्व-प्राथमिक अध्यापक शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम का विकास

पूर्व-प्राथमिक अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम को चुने हुए विशेषज्ञों से प्राप्त टिप्पणियों के आधार पर संशोधित किया गया। इस संशोधित पाठ्यक्रम को छपने के लिए प्रेस में भेज दिया गया।

6. कार्य-अनुभव और कला शिक्षा में पाठ्यक्रम का विकास

आंध्र प्रदेश के आवास-स्कूलों की कक्षा 5 से 10 तक के लिए कार्य-अनुभव पाठ्यक्रम तैयार किया गया। दस-वर्षीय स्कूल ढांचे के लिए कार्य-अनुभव और कला शिक्षा पर पाठ्यक्रम का प्रारूप विकसित किया गया।

7. शिक्षण में सहायक साधन

गत कई वर्षों से पूर्ण स्कूल स्तर पर उपयोग के लिए परिषद् विभिन्न प्रकार के शिक्षण में सहायक साधनों को तैयार करती रही है। इन साधनों में फिल्में, फिल्म-स्ट्रिपें, अल्प व्यय किट, चार्ट रेखाचित्र और ऐसी ही दूसरी सामग्रियाँ शामिल हैं। प्रतिवेदन वर्ष में निम्नलिखित सामग्रियों का उत्पादन किया गया :

(1) फिल्मस्ट्रिपें—"रोड सैफ्टी" "थ्री डाइमेन्शनल टीचिंग ऐड्स इन प्लास्टर ऑफ पेरिस" और "जम्मू और कश्मीर"।

(2) "भारत स्वाधीनता के 25 वर्षों" पर चित्रमय पैकेज।

(3) प्रमुख भारतीय वैज्ञानिकों के चित्र।

(4) "रॉक्स एंड सॉयल" और राष्ट्रीय एकीकरण कैम्पों के कार्यकलापों पर फिल्में।

राजस्थान, उत्तर प्रदेश, केरल, गुजरात और मैसूर पर फिल्मस्ट्रिपें तैयार की जा रही हैं।

परिशिष्ट 7

राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना

राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना के अन्तर्गत छात्रवृत्तियाँ देने और दूसरी वित्तीय और शैक्षिक सुविधाएँ प्रदान करने के लिए प्रत्येक वर्ष 350 विद्यार्थियों के चयन की व्यवस्था है।

राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना की 1973 की परीक्षाओं में 7,190 प्रत्याशियों ने भाग लिया जिनमें से लगभग 1,000 प्रत्याशी साक्षात्करण के लिए सफल हुए जिनमें से 346 प्रत्याशी अन्तिम रूप से छात्रवृत्तियों के लिए चुने गए। छात्र-वृत्ति पाने वाले प्रत्याशियों की संख्या का राज्यानुसार विवरण अनुबंध में दिया गया है।

अवर-स्नातक स्तर पर चुने गए प्रत्याशियों को 17 ग्रीष्मकालीन स्कूलों में भेजा गया, एम० एससी० प्रत्याशियों को राष्ट्रीय विज्ञान प्रयोगशालाओं और उच्च शिक्षा संस्थानों में भेजा गया और पीएच० डी० प्रत्याशियों पर उनकी अनुसंधान परियोजनाएँ पूरी करने में व्यक्तिगत ध्यान दिया गया।

अनुबंध

1972 में राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज छात्रवृत्तियों के लिए चुने गए प्रत्याशियों की संख्या का राज्य अनुसार विवरण

क्र० सं०	राज्य-संघ क्षेत्र का नाम	परीक्षाओं में भाग लेने वाले प्रत्याशियों की संख्या	छात्रवृत्तियों के लिए चुने गए प्रत्याशियों की संख्या
1.	आंध्र प्रदेश	442	34
2.	असम	69	1
3.	बिहार	243	10
4.	गुजरात	91	1
5.	हरियाणा	126	5
6.	जम्मू तथा कश्मीर	25	1
7.	केरल	228	34
8.	मध्य प्रदेश	566	3
9.	महाराष्ट्र	566	25
10.	तमिलनाडु	708	24
11.	मैसूर	340	23
12.	उड़ीसा	135	11
13.	पंजाब	98	6
14.	राजस्थान	592	7

15.	उत्तर प्रदेश	1,317	10
16.	पश्चिम बंगाल	591	66
17.	हिमाचल प्रदेश	36	—
18.	दिल्ली	863	83
19.	शेष संघ क्षेत्रों से	154	2
	कुल	7,190	346*

* इस संख्या में गणित के अध्ययन के लिए चुने गए 9 प्रत्याशी भी शामिल है।

परिशिष्ट 8

राष्ट्रीय एकीकरण परियोजना

लगभग चार वर्ष पहले राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने राष्ट्रीय एकीकरण परियोजना को केन्द्रीय शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय के कहने पर प्रारम्भ किया था। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से स्कूल के छात्रों में राष्ट्रीय एकीकरण को प्रोत्साहित करना है। परिषद् ने प्रतिवेदन वर्ष में इस परियोजना के अन्तर्गत जो कार्यक्रम प्रारम्भ किए वे निम्नलिखित हैं :

(क) छात्रों, अध्यापकों और मुख्याध्यापकों के लिए अन्तर्राज्यीय शिविरों का आयोजन करना,

(ख) चुने हुए स्कूलों में "हमारा भारत परियोजना" शुरू करना, और

(ग) छात्रों तथा अध्यापकों के लिए विषय से सम्बन्धित अनुदेशीय सामग्री तैयार करना।

1. शिविर परियोजना

(क) अन्तर्राज्यीय शिविरों का आयोजन

लगभग देश के सभी राज्यों में प्रतिवेदन वर्ष में 16 अन्तर्राज्यीय शिविरों का आयोजन किया गया। प्रत्येक शिविर में 75 छात्रों और 15 अध्यापकों ने 15 दिन तक भाग लिया। स्कूलों और शिविरों के आयोजन करने के स्थानों का चयन विभिन्न राज्यों के शिक्षा विभागों द्वारा किया जाता है। ग्रामीण तथा शहरी दोनों क्षेत्रों के स्कूल इसमें भाग लेते हैं। इन शिविरों में भाग लेने वाले छात्र विभिन्न समुदायों और जातियों के होते हैं। लड़के और लड़कियों के लिए अलग-अलग शिविरों का आयोजन किया गया। दोनों का एक मिला जुला शिविर इस वर्ष दिल्ली में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। शिविरों के कार्यक्रमों में परिभ्रमण और यात्राएँ, साहित्यिक कार्यक्रम, शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा की प्रोन्नति के लिए कार्यक्रम, और सांस्कृतिक तथा मनोरंजक कार्यक्रम सम्मिलित थे।

(ख) अध्यापकों तथा मुख्याध्यापकों के लिए शिविरों का आयोजन

प्रतिवेदन वर्ष में दो शिविर केवल अध्यापकों और एक मुख्याध्यापकों के लिए आयोजित किए गए। संघ के सभी राज्यों के प्रतिनिधियों ने इन शिविरों में भाग लिया। इन शिविरों के कार्यकलापों का मुख्य उद्देश्य छात्रों, अध्यापकों और कक्षा शिक्षण के लिए आयोजित अन्तर्राज्यीय शिविरों के कार्यक्रमों को सुधारना और छात्रों के लिए अनुवर्ती कार्यक्रमों और सामग्रियों को विकसित करना है।

2. हमारा भारत परियोजना

"हमारा भारत परियोजना" शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से राष्ट्रीय एकीकरण को प्रोत्साहित करने के समस्त कार्यक्रम का अभिन्न अंग है। उसका उद्देश्य बच्चों को विभिन्नताओं में एकता समझाना है जो हमारे भारत का विशिष्ट लक्षण है। प्रतिवेदन वर्ष में इस परियोजना को प्रारम्भ करने के लिए विभिन्न राज्यों से 76 स्कूल चुने गए। इस परियोजना के लिए प्रत्येक स्कूल को 1000 रुपए का अनुदान दिया गया। इस परियोजना के अन्तर्गत जो कार्यकलाप किए जाते हैं वह हैं आधार सामग्री एकत्रित करना, एकत्रित सामग्री से प्रदर्शित वस्तुएँ बनाना, एकत्रित सामग्री के आधार पर पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ निकालना, विभिन्न राज्यों के स्कूलों के बच्चों के साथ कलम मैत्री सम्बन्ध स्थापित करना, वाक्पटुता प्रतियोगताएँ आयोजित करना और विकसित सामग्री की प्रदर्शनी लगाना।

3. अनुदेशीय सामग्री तैयार करना

इस योजना का मुख्य उद्देश्य हस्तपुस्तिकाओं, पाठ्यक्रम दर्शिकाओं, पूरक-पठन सामग्रियों, फिल्मों और फिल्मस्ट्रिपों इत्यादि के रूप में सामग्री तैयार करके सामाजिक अध्ययन, इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र और मानविकी के स्कूल शिक्षण में सुधार करके छात्रों और अध्यापकों में राष्ट्रीय एकीकरण को प्रोत्साहित करना है। प्रतिवेदन वर्ष में निम्नलिखित सामग्री तैयार की गई :

शिविरों के आयोजन में मार्गदर्शन
"हमारा भारत परियोजना" के लिए मार्गदर्शन
अन्तर्राज्यीय शिविरों पर एक फ़िल्म
भूगोल शिक्षण और राष्ट्रीय एकीकरण (प्रेस में)
फूलों की माला—हिन्दी की पूरक रीडर (प्रेस में), और
वी सिंग टुगेदर (प्रेस में)

परिशिष्ट 9

जनसंख्या शिक्षा

प्रतिवेदन वर्ष में परिषद् के जनसंख्या शिक्षा कक्ष के कार्यकलापों का संबंध मुख्यतः पाठ्यक्रम विकास, वर्कशाप आयोजन, सामग्री के प्रकाशन, राज्यों से सहयोग और दूसरी संस्थाओं को सहायता से है।

प्रतिवेदन वर्ष में अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए एक पाठ्यक्रम का प्रारूप और अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए कार्यक्रम विकसित किए गए। इस कक्ष ने जनसंख्या शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर शिक्षण इकाइयों के नमूने और जनसंख्या आँकड़ों के चार्ट तैयार किए। कक्ष ने तीन वर्कशापों का आयोजन किया—दो शिक्षण इकाइयों को तैयार करने के लिए और एक राज्य स्तर पर कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए योजना-कार्य तैयार करने के लिए। कक्ष को कुछ राज्यों से उनके जनशिक्षा कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में सहायता देने के लिए बहुत से प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुए हैं। इसने हरियाणा और मध्यप्रदेश राज्यों के साथ निकट सहयोग से कार्य किया। इस कक्ष ने उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र राज्यों की, उनके सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम में जनसंख्या शिक्षा का समावेश करके उसको संशोधित करने में सहायता की है। कक्ष ने जनसंख्या शिक्षा के क्षेत्र में दूसरी संस्थाओं जैसे विश्व स्वास्थ्य संगठन, केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो और भारत की परिवार नियोजन संस्था की भी सहायता की है।

इस कक्ष ने निम्नलिखित साहित्य प्रकाशित किया :

पापुलेशन एजुकेशन—सलैक्टेड रीडिंग्स

टीचिंग यूनिट्स

एब्रोशर ऑन न्यूट्रीशन

रिपोर्ट ऑफ नेशनल कांफ्रेंस ऑन पापूलेशन ऐजुकेशन—प्राबलम्स ऑफ इम्पिलीमेंटेशन

भविष्य के सपने, और

दीनू डाकिया।

परिशिष्ट-10

ग्रामीण प्रतिभा खोज योजना

यह एक सामान्य अनुभव की बात है कि ग्रामीण छात्र शहरी छात्रों से तुलनात्मक दृष्टि से भिन्न है। इसीलिए भारत सरकार के शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के प्रतिभाशाली बच्चों का पता लगाने और उनको माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने में वित्तीय सहायता देने की एक विशेष योजना चालू की है।

छात्रवृति के लिए छात्रों का चयन दोहरी पद्धति के द्वारा किया जाता है। पहले चरण के चयन के लिए विभिन्न राज्य विभिन्न प्रक्रियाओं का अनुसरण करते हैं और इस योजना में ऐसे लचीलेपन की व्यवस्था है। इस योजना के दूसरे अर्थात् अंतिम चरण में राज्यानुसार परीक्षा की व्यवस्था है जिसमें डेढ़-डेढ़ घण्टे के दो प्रश्न-पत्र होंगे। यह परीक्षा कक्षा 7 या 8 में राज्य के शिक्षा ढाँचे के अनुसार आयोजित की जाती है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् दूसरे चरण की चयन परीक्षा के आयोजन के सम्बन्ध में राज्यों को शैक्षणिक मार्गदर्शन उपलब्ध कर रही है।

इस योजना के अन्तर्गत वह छात्र जो अपने घरों में रहकर माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करते हैं उनको 500 रुपया प्रतिवर्ष और जो अपने घरों से दूर छात्रावासों में रहकर माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करते हैं उनको 1000 रुपया प्रतिवर्ष की दर से छात्रवृत्ति दी जाती है। यह छात्रवृत्ति माध्यमिक शिक्षा की समाप्ति तक दी जाती है। छात्रवृत्ति के लिए प्रत्येक सामुदायिक विकास क्षेत्र से दो छात्रों का चयन किया जाता है। देश में 5,000 से अधिक सामुदायिक विकास क्षेत्र हैं और इसलिए छात्रवृत्ति पाने वालों की संख्या प्रत्येक वर्ष 10,000 के लगभग होती है। जब यह योजना समस्त रूप से प्रचालित की जाएगी तब इस योजना से 30,000 से अधिक ग्रामीण बच्चों के लाभ उठाने की सम्भावना है।

इस योजना को प्रचालित करने का वित्तीय दायित्व केन्द्रीय शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय पर है। इस योजना का प्रचालन राज्य स्तर पर होता है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् राज्यों को इस योजना के प्रचालन में शैक्षणिक मार्गदर्शन की व्यवस्था करती है। इसी उद्देश्य से इस योजना में

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् में एक एकक की स्थापना का प्रस्ताव है। अभी तक इस एकक की स्थापना नहीं हो पाई है।

निम्नलिखित राज्यों, संघ क्षेत्रों को इस योजना के प्रारम्भ करने पर परिषद् से माँगने पर शैक्षणिक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है :

आंध्र प्रदेश	मैसूर
बिहार	उड़ीसा
दिल्ली	मध्यप्रदेश
गुजरात	पांडिचेरी
हरियाणा	पंजाब
हिमाचल प्रदेश	राजस्थान
केरल	तमिलनाडु
	उत्तर प्रदेश

परिशिष्ट-11

परीक्षा सुधार

कई वर्षों से परिषद् स्कूल स्तर की परीक्षा प्रणाली के सुधार में जुटी हुई है। परिषद् के परीक्षा सुधार कार्यक्रम के दो मुख्य लक्ष्य हैं—

(1) छात्रों के विकास को नापने के लिए परीक्षाओं को विधिमान्य विश्वसनीय उपकरण बनाना, और

(2) सारी अध्यापन-अवबोधन विधियों को सुधारने के लिए परीक्षाओं को एक शक्तिशाली उपकरण बनाना।

परिषद् द्वारा विकसित परीक्षा सुधार के विस्तृत कार्यक्रम में जो सन्नहित है वह है लिखित परीक्षाओं से सम्बन्धित प्रश्नों, प्रश्न-पत्रों और अंक देने की विधियों में सुधार, व्यावहारिक परीक्षाओं में विषयसूची का निर्माण और मौखिक वर्णन का समावेश। यह कार्यक्रम निरीक्षण, इण्टर्व्यू और रेटिंग स्कूलों आदि में मूल्यांकन विधियों के विस्तार की सिफारिश करता है। इसका लक्ष्य परीक्षाओं के प्रबन्ध करने के तरीकों और श्रेणी प्रमाणीकरण और वर्गीकरण के लिए परीक्षण गणना के प्रयोग के लिए ही सुधार करना नहीं है वरन् अनुदेश उपायों, शैक्षणिक भविष्यवाणी और निरीक्षण उपायों आदि से भी है। इसके परिणामस्वरूप पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों, अनुदेश सामग्री व अनुदेश उपायों और अध्यापक प्रशिक्षण क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों को भी ध्यान में रखा गया है। परिषद् के परीक्षा सुधार कार्यक्रम के बहुत महत्वपूर्ण परिणाम निकले हैं जो निम्नलिखित हैं—

(1) पड़ोसी देशों, जैसे नेपाल, की इस कार्यक्रम में रुचि,

(2) विभिन्न राज्य स्तरीय शैक्षिक संस्थाओं द्वारा एन० सी० ई० आर० टी० के विकसित कार्यक्रम के अनुसरण में स्वैच्छिक चेष्टाएं,

(3) विभिन्न परीक्षा बोर्डों द्वारा परीक्षा में सुधार करना,

(4) कुछ विश्वविद्यालयों और राज्य शिक्षा के तकनीकी बोर्डों द्वारा एन० सी० ई० आर० टी० द्वारा विकसित सामग्री और तकनीकों का उपयोग, और

(5) इस कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रशिक्षित अनेक व्यक्तियों द्वारा शैक्षिक मूल्यांकन पर लेख तैयार करना।

प्रतिवेदन वर्ष में परीक्षा सुधार के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम किए गए:—

(1) राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सहयोग से आन्तरिक निर्धारण पद्धति के एक अध्ययन का मूल्यांकन,

(2) राज्य माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा रचित 1971 की परीक्षाओं का विश्लेषण,

(3) प्रश्न पत्र निर्माताओं और साधन व्यक्तियों के लिए बहुत से प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों, सेमिनारों और वर्कशापों का आयोजन, जैसे राजस्थान में संस्कृति और वाणिज्य साधन व्यक्तियों के लिए एक वर्कशाप, मैसूर राज्य के प्रश्न-पत्र निर्माताओं के लिये एक वर्कशाप, सैन्य शिक्षा दल के लिए एक वर्कशाप और गुजरात के प्रश्न-पत्र निर्माताओं के लिए एक वर्कशाप और गोवा में राष्ट्रीय पुलिस अकादमी के लिए अनुदेश और मूल्यांकन पर एक सेमिनार,

(4) निदानात्मक जाँच और उपचार कार्यों के लिए प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रम। राजस्थान में साधन व्यक्तियों को निदानात्मक जाँच और उपचार अभ्यासों की तकनीकों में प्रशिक्षित करने के लिए तीन वर्कशापों का आयोजन किया गया। लगभग 100 साधन व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया गया और बहुत सी सामग्री तैयार की गई जिसको प्रकाशन और स्कूलों में वितरण के लिए उदयपुर स्थित राजस्थान के राज्य शिक्षा संस्थान में जाँचा और सुधारा जा रहा है।

परिशिष्ट-12

व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों को अनुदान (1972-73)

देश में बहुत से व्यावसायिक संगठन हैं जो प्रत्यक्षतः अथवा परोक्ष रूप से स्कूली शिक्षा के लिए गुणकारी कार्य करते हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् गत कई वर्षों से ऐसे संगठनों को आर्थिक सहायता देने की परियोजना, केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय द्वारा प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान प्रारम्भ की गई स्वयंसेवी शैक्षिक संगठनों की सहायता की योजना के आधार पर चला रही है।

विभिन्न व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों को 1972-73 के दौरान दी गई वित्तीय सहायता का ब्यौरा नीचे दिया गया है—

क्रम संख्या	व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों के नाम	दी गई राशि (रुपयों में)
1.	भारतीय पठन संघ, नई दिल्ली	3,400
2.	अखिल भारतीय विज्ञान अध्यापक संघ, लोधी इस्टेट, नई दिल्ली	3,500
3.	भारतीय स्कूल-पूर्व शिक्षा संघ, नई दिल्ली	5,000
4.	विज्ञान शिक्षा विकास संघ, मद्रास	3,500
5.	भारतीय भूगोल अध्यापक संघ, मद्रास	2,400
6.	भारतीय अध्यापक शिक्षा संघ, दिल्ली	8,000
7.	भारतीय गणित अध्यापक संघ, मद्रास	5,500
8.	अखिल भारतीय शैक्षिक संस्थाओं की फेड्रेशन, नई दिल्ली	3,000

9.	भारतीय अभिभावक अध्यापक राष्ट्रीय संघ, नई दिल्ली	5,500
10.	अलम्नी संघ, केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली	2,500
11.	बंगीय विज्ञान परिषद्, कलकत्ता	2,600
12.	अखिल भारतीय शैक्षिक तथा मार्गदर्शन संघ, नई दिल्ली	2,000
	कुल जोड़—	46,900

परिशिष्ट-13

अनुसंधान अध्ययन, अन्वेषण और सर्वेक्षण

प्रतिवेदन वर्ष में परिषद् ने निम्नलिखित अध्ययनों, अन्वेषणों और शैक्षिक सर्वेक्षणों को पूरा किया या आरम्भ किया :

(क) अध्ययन

(1) परीक्षा विकास

1.01 विभेदक अभिक्षमता परीक्षण माला—इस परियोजना का उद्देश्य हिन्दी भाषी राज्यों के कक्षा 6 के बच्चों की विकसित योग्यताओं को मापने के लिए बहुत से परीक्षणों को विकसित करना है। अन्तिम माला में 11 विशेष परीक्षण होंगे। वर्ष 1972-73 में परीक्षण प्रशासकों के लिए अनुदेशों को तैयार किया गया। यह सामग्री प्रतिमानों पर आँकड़े एकत्रित करने के लिए 250 स्कूलों को उपलब्ध की गई।

1.02 "देशांक तथा करणी" सम्बन्धी नैदानिक परीक्षणों का विकास करना—इस परियोजना का उद्देश्य बीजगणित के इन दो विषयों पर नैदानिक परीक्षणों का विकास करना है। इनके लिए परीक्षण मदों को लिखा जा चुका है और मदों के विश्लेषण के लिए उनका परीक्षण किया जा रहा है।

1.03 विद्वानात्मक अभिक्षमता परीक्षण की मान्यता का अध्ययन—परिषद् द्वारा 1966-67 में विकसित विद्वानात्मक अभिक्षमता परीक्षणों की मान्यता का अध्ययन कार्य आरम्भ किया गया। छात्रों के निष्पादन और परीक्षण प्राप्तांकों के सम्बन्ध का अध्ययन करने के लिए 35 नमूना स्कूलों के छात्रों से आँकड़े एकत्रित किए जा रहे हैं।

(2) किशोरावस्था

2.01 किशोरों के लिए व्यक्तित्व सूची का विकास—यह एक चालू परियोजना है और इस अध्ययन का उद्देश्य किशोरों के लिए एक व्यक्तित्व सूची तैयार करना है। एकत्रित प्रतिमान आँकड़ों का विश्लेषण किया जा रहा है।

2.02 किशोरों की प्राधिकरण के प्रति अभिवृत्ति अध्ययन हेतु मापक्रम का विकास—यह एक चालू परियोजना है। आँकड़े एकत्रित कर लिए गए हैं और उनका विश्लेषण किया जा रहा है।

(3) शिशु विकास

3.01 पूर्व-स्कूल छात्रों का अध्ययन व्यवहार और सामाजिक पुनर्बलन—इस रिपोर्ट का प्रथम भाग तैयार कर लिया गया है। इस अध्ययन के नतीजों से पता चलता है कि अध्यापक सामाजिक पुनर्बलन तकनीकों का सामान्य कक्षा शिक्षण में प्रयोग करके छात्रों को उनके अध्ययनों में उच्चतर स्तर प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। औसत योग्यता के छात्रों को इस तकनीक से अधिक लाभ पहुंचने की सम्भावना है। यह अध्ययन यह भी सुझाव देता है कि इस तकनीक से लाभ उठाने वालों में उच्च योग्यता के छात्रों का दूसरा स्थान है और इसके बाद निम्न-योग्यता के दल का नम्बर आता है।

3.02 5½ से 11 **वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के लिए प्रतिमान परियोजना का विकास**—यह अध्ययन 6 विश्वविद्यालयों के सहयोग से किया जा रहा है। प्रतिवेदन वर्ष में लगभग सभी केन्द्रों में साधन और मार्गदर्शी अध्ययनों को विकसित करने का कार्य समाप्त कर लिया गया है। चार केन्द्रों पर मुख्य अध्ययन में प्रगति हुई है। परिषद् अगले वर्ष के दौरान सार-अध्ययन हाथ में लेगी।

(4) प्रतिभा

राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना के प्रत्याशियों और अप्रत्याशियों की विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन—राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना के प्रत्याशियों और अप्रत्याशियों की विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए एक परीक्षण माला बम्बई, जयपुर, अहमदाबाद, पूना, भुवनेश्वर, विशाखापटनम, मद्रास, चण्डीगढ़ और मैसूर के ग्रीष्मकालीन स्कूलों में भाग ले रहे प्रत्याशियों को उनके व्यक्तित्व के परिचय पूर्ण और अपरिचय पूर्ण पहलुओं को मापने के लिए दी गई। प्राप्त आँकड़ों पर आगे कार्यवाही की जा रही है।

(5) कार्यक्रमित अधिगम

कार्यक्रमित गणित सामग्री के संदर्भ में सामूहिक गतिक्रम बनाम व्यक्तिपरक गतिक्रम की प्रभावकारिता का एक अध्ययन—इस परियोजना को बीजगणित की एक यूनिट सांख्यिकी और पोलीनोमियल में कार्यक्रमित इकाइयाँ तैयार करने के लिए चालु किया गया था ताकि सापेक्ष प्रभावकारिता की जाँच की दृष्टि से इनका प्रयोग विभिन्न अवस्थाओं जैसे व्यक्तिपरक गतिक्रम, दल अधिगम जबकि दल का नियन्त्रण अध्यापक कर रहा हो, छोटे आकार का दल जो सदृश और विरुद्ध निपुणताओं पर आधारित

हो इत्यादि में किया जा सके। अब तक सांख्यिकी, पोलीनोमियल और पोलीनोमियल पर बाद के परीक्षणों पर तीन इकाइयाँ तैयार की जा चुकी हैं। इन इकाइयों का परीक्षण समाप्त करके प्राप्त नतीजों का विश्लेषण किया जा रहा है।

(6) शिक्षा का इतिहास

भारतीय स्कूलों में सामाजिक अध्ययन का शिक्षण और स्वाधीनता के बाद उसका विकास—यह एक चालू परियोजना है। प्रतिवेदन वर्ष में एक अखिल भारतीय सेमिनार में परियोजना के लिए मार्गदर्शन तैयार किया गया। इस मार्गदर्शन के आधार पर राज्यों से आधार सामग्री एकत्रित की जा रही है।

(7) शिक्षा का अर्थशास्त्र

शिक्षा व्यय पर अध्ययन—*पंजाब, महाराष्ट्र, केरल, आंध्र प्रदेश, जम्मू और* कश्मीर तथा उड़ीसा राज्यों में शिक्षा व्यय के अध्ययनों की एक योजना बनाई गई। पंजाब राज्य में किया गया अध्ययन अब समाप्ति पर है।

(8) तुलनात्मक शिक्षा

माध्यमिक शिक्षा में प्रवेश और विषयों के वरण का एक तुलनात्मक अध्ययन—इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य हैं : (1) विभिन्न देशों में माध्यमिक शिक्षा में प्रवेश पर तथा स्कूल के विषयों के वरण पर डाले जाने वाले दबावों की प्रकृति का विश्लेषण करना, और (2) व्यक्ति की सफलता तथा वरण की स्वतन्त्रता के परिमाण का पता लगाना। 1971-72 में पूरे किए गए इस अध्ययन के प्रथम चरण में 12 केन्द्रों पर किए गए कार्य के आधार पर तैयार प्रबन्धों का सम्पादन किया गया। 1972-73 में नेपाल, श्री लंका और फिलिपाइन से प्राप्त तथ्य सामग्री के आधार पर इस अध्ययन के दूसरे चरण की रिपोर्ट का प्रारूप तैयार किया गया।

(9) पाठ्यपुस्तक

9.01 मातृ भाषा की पाठ्यपुस्तकों का तुलनात्मक अध्ययन

प्राथमिक स्तर पर हिन्दी, गुजराती, उर्दू, बंगला, तेलगू भाषाओं की पाठ्य पुस्तकों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। इन भाषा पाठ्पुस्तकों का विषय, भावनाओं, मूल्यों, अभ्यासों और चित्रों इत्यादि की दृष्टि से विश्लेषण किया गया। इस अध्ययन की रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

9.02 भाषा पाठ्यपुस्तकों के अभ्यासों का तुलनात्मक अध्ययन

1972-73 में प्राथमिक, मिडिल और सेकेंडरी स्कूल स्तर की हिन्दी (दूसरी

भाषा के रूप में) उर्दू, मराठी, और गुजराती भाषा पाठ्यपुस्तकों के अभ्यासों का अध्ययन किया गया। इन अभ्यासों का अनदेशीय उद्देश्यों, प्रयोजनों, रूपों इत्यादि की दृष्टि से विश्लेषण किया गया। इस अध्ययन की रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

(10) भाषा-शिक्षण और भाषा विज्ञान

10.01 भारत में स्कूली पाठ्यक्रम में भाषाओं की स्थिति

भारत में स्कूली पाठ्यक्रम में भाषाओं की स्थिति पर आयोजित अनुसंधान परियोजना का कार्य समाप्त हो गया है। इसकी अंतिम रिपोर्ट दो भागों में तैयार की जा रही है। प्रथम भाग में सभी राज्यों और संघ क्षेत्रों के विभिन्न स्कूल स्तरों पर भाषा शिक्षण से संबंधित तथ्यपूर्ण रिपोर्ट होगी। दूसरे भाग में भारत में भाषा अनुदेशन का आलोचनात्मक अध्ययन होगा।

10.02 हिन्दी लिखने में प्रयोग की जाने वाली देवनागरी लिपि का वर्णात्मक विश्लेषण—

इस अध्ययन को पूरा किया गया जिसमें देवनागरी लिपि का वर्णात्मक और वर्णविन्यास दृष्टि से विश्लेषण किया गया है और अध्ययन की अंतिम रिपोर्ट भी तैयार कर ली गई।

10.03 केरल में बोली जाने वाली हिन्दी शिक्षण की समस्याओं का एक अध्ययन

यह अध्ययन मानक हिन्दी में भाषागत विश्लेषण और ध्वन्यात्मक परिवर्तनों के विवरण की अनुसंधान परियोजना का एक भाग था। यह अध्ययन समाप्त कर लिया गया है।

10.04 मानक हिन्दी में भाषागत विश्लेषण और ध्वन्यात्मक परिवर्तनों का विवरण

इस अध्ययन के दूसरे चरण का कार्य समाप्त कर लिया गया जिसमें 19 हिन्दी-भाषी क्षेत्रों से तथ्य सामग्री एकत्रित की गई और पंजीकृत की गई। विभिन्न बोली क्षेत्रों में विभिन्न स्तरों पर स्तरीय उच्चारण प्रतिमानों के ध्वन्यात्मक परिवर्तनों को नोट किया गया। रिपोर्ट को अन्तिम रूप दिया जा रहा है।

10.05 स्कूल बच्चों के लिए हिन्दी में शैक्षिक शब्दावली का विकास

हिन्दी को प्रथम भाषा के रूप में पढ़ने वाले छात्रों के लिए पहले तैयार की गई शब्द सूची को स्कूल शिक्षा के विभिन्न स्तरों के अनुसार पुनः वर्गीकृत किया गया।

10.06 भाषा सम्बन्धी मूल भूत अनुसंधान और भाषात्मक व्यवहार

प्रतिवेदन वर्ष में 1971 और 1972 में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनारों में प्रस्तुत प्रबन्धों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने के लिए सम्पादित किया गया।

10·07 भारत में भाषा शिक्षण और अधिगम पर अपेक्षित अनुसंधान

एक छोटी हस्त पुस्तिका विकसित की गई जिसमें भारत में भाषा नीति और भाषा शिक्षण अधिगम के ढाँचे पर विचार-विमर्श किया गया है और भाषा शिक्षण में अनुसंधान के विभिन्न क्षेत्रों को पहचाना गया है। हस्तपुस्तिका को छपने के लिए भेज दिया गया है।

(11) मूल्यांकन

11.01 आंतरिक आकलन कार्यक्रम के मूल्यांकन करने के लिए अध्ययन

राजस्थान में आंतरिक आकलन कार्यक्रम के मूल्यांकन का कार्य इस वर्ष के दौरान चालू रहा जिसने राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को कार्यक्रम में सुधार करने के लिए शक्तिमान किया।

11·02 हाई स्कूल-उच्चतर माध्यमिक परीक्षाओं के परिणामों का विश्लेषण

यह परिषद् के कार्यकलापों का एक वार्षिक कार्य है। विभिन्न राज्यों के माध्यमिक शिक्षा बोर्डों द्वारा 1971 में संचालित हाई स्कूल-उच्चतर माध्यमिक परीक्षाओं के परिणामों के विश्लेषण का कार्य समाप्त कर लिया गया।

11.03 प्राथमिक स्कूल के बच्चों के मूल्यांकन आदर्शों का विकास

प्रतिवेदन वर्ष में प्राथमिक बच्चों के मूल्यांकन के नियम तैयार किए गए।

(12) अध्यापक शिक्षा

12.01 शिक्षा कालेजों में अनुसंधान का संवर्धन

उत्तरी क्षेत्र के शिक्षा कालेजों के अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए अनुसंधान परियोजनाओं की योजना पर पाँचवां सेमिनार राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान कैम्पस में 18 से 27 दिसम्बर 1972 तक आयोजित हुआ। भागीदारों द्वारा तैयार की गई अनुसंधान रूपरेखाओं पर विचार-विमर्श किया गया और साधन व्यक्तियों के सहयोग से उनको संशोधित किया गया। भागीदारों द्वारा तैयार की गई अनुसंधान रूपरेखाएँ माप और मूल्यांकन क्षेत्रों, स्कूल शिक्षा के विकास और स्कूल और अध्यापक शिक्षा की समस्याओं से संबंधित थीं।

12.02 शिक्षा कालेजों के श्रेणीकरण के लिए उपस्कर का विकास

यह एक चालू परियोजना है। प्रतिवेदन वर्ष में विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा शिक्षा कालेजों के श्रंगीकरण से संबंधित नियमों और विनियमों, अवस्थाओं औरश र्तों इत्यादि पर तथ्य सामग्री एकत्रित की गई। कालेजों के श्रेणीकरण के लिए एक उपकरण तैयार करने की दृष्टि से तथ्य सामग्री का विश्लेषण किया जा रहा है।

12.03 अध्यापक शिक्षा में मनुष्य शक्ति योजना

राज्यों में अध्यापक शिक्षा में मनुष्य शक्ति योजना पर एक अध्ययन प्रारम्भ किया गया। अध्ययन के उद्देश्य हैं : (1) राज्यों में अध्यापकों के विभिन्न वर्गों की आवश्कताओं के अनुसार भविष्य की योजनाएँ तैयार करने के लिए वर्तमान प्रक्रियाओं का पता लगाना, (2) अध्यापकों की आवश्यकताओं का अनुमान लगाने के लिए विधिक्रम विकसित करना और (3) अध्यापक शिक्षा में मनुष्य शक्ति योजनाओं को बनाने में राज्यों की सहायता करना।

प्रतिवेदन वर्ष में अध्यापक शिक्षा में मनुष्य शक्ति योजना पर एक व्याख्या-कृत संदर्भग्रन्थ सूची तैयार की गई। ऊपर लिखे पहले उद्देश्य से संबन्धित एक प्रश्नमाला तैयार करके तथ्य सामग्री एकत्रित करने के लिए राज्यों को भेजी गई।

12.04 माध्यमिक शिक्षा कालेजों में अपनाई गई दाखिले की प्रक्रिया का अनुसरण-अध्ययन

दाखिले की प्रक्रियाओं के अध्ययन की सिफ़ारिशों पर कहाँ तक अमल किया गया है इस बात का पता लगाने के लिए दाखिले की प्रक्रियाओं के अनुसरण-अध्ययन पर एक प्रश्नमाला तैयार की गई और देश के सभी शिक्षा कालेजों में भेजी गई। 25 प्रतिशत संस्थाओं से आँकड़े प्राप्त हो चुके हैं।

(13) श्रव्य दृश्य शिक्षा

भारत में 1939 से 1963 तक श्रव्य दृश्य शिक्षा में किए गए अध्ययनों की समीक्षा

देश के विभिन्न भागों में श्रव्य दृश्य शिक्षा में किए गए अध्ययनों की समीक्षा का कार्य समाप्त कर लिया गया और उसकी रिपोर्ट प्रकाशित की गई।

(14) पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक शिक्षा

14.01 चुने हुए पूर्व-प्राथमिक स्कूलों में प्रमुख कार्य-प्रणालियों का एक अध्ययन :—देश के विभिन्न राज्यों के चुने हुए पूर्व प्राथमिक स्कूलों से एकत्रित तथ्य इन स्कूलों की प्रमुख कार्य प्रणालियों का पता लगाने के लिए अध्ययन किया गया।

14.02 पूर्व-प्राथमिक बच्चों के लिए उपयुक्त साहित्य का विकास :—पूर्व-प्राथमिक बच्चों के लिए एकत्रित किए गए गीतों का उनके आयु-वर्ग की उपयुक्तता के अनुसार विश्लेषण किया गया।

14.03 बहुकक्षीय शिक्षण अवस्थाओं में शिक्षण और अधिगम प्रक्रियाओं में सुधार के लिए अभियान परियोजना :— 1971-72 में हरियाणा राज्य के गुड़गाँव के कुछ चुने प्राथमिक स्कूलों में बहुकक्षीय शिक्षण में शामिल अध्यापकों के लिए शिक्षण तकनीकों और साहित्य को विकसित करने के लिए अभियान परियोजना आरम्भ की गई। विकसित सामग्री में प्राथमिक स्तर के विभिन्न स्कूली विषयों पर तैयार की गई शिक्षण इकाइयाँ भी हैं। प्रतिवेदन वर्ष में कक्षा तीन और चार की सामग्री पर आगे कार्रवाई की गई।

14.04 शैक्षिक बरबादी को कम करने के लिए क्रिया-कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्ययन :—इस परियोजना के कार्यकलापों के अन्तर्गत आन्ध्र प्रदेश राज्य में एक अध्ययन किया जाना था पर 1972-73 वर्ष के दौरान राज्य में राजनैतिक उपद्रवों के कारण कोई कार्य न हो सका। राजस्थान में इस परियोजना में भाग ले रहे अध्यापकों और पर्यवेक्षण अधिकारियों को अनुस्थापित किया गया। राज्य के लिए इस अध्ययन के परिचालित नमूने तैयार किए गए और उनको अन्तिम रूप दिया गया।

14.05 बरबादी तथा गतिरोध को कम करने के लिए अवर्गीकृत स्कूल प्रणाली की एक अभियान परियोजना :—उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के लोनी ब्लाक में अवर्गीकृत स्कूल प्रणाली के सम्बन्ध में परिषद ने 1971 में यह परियोजना प्रारम्भ की थी जिसका उद्देश्य प्राथमिक स्कूलों में बरबादी तथा गतिरोध कम करने में इसके प्रभाव का अध्ययन करना था। वर्ष 1972-73 के दौरान इस परियोजना में भाग ले रहे स्कूलों का मूल्यांकन किया गया। सामान्य विज्ञान में 29 शिक्षण इकाइयाँ तैयार करने के लिए एक वर्कशाप का भी आयोजन किया गया।

14.06 विभिन्न स्कूली विषयों में छात्रों की उपलब्धियों पर पठन के प्रभाव का पता लगाने के लिए एक अध्ययन :—हिन्दी भाषा में विकसित किए जा रहे पठन योग्यता परीक्षणों के आधार पर I से V स्तरों के बच्चों की पठन योग्यताओं का पता लगाने के लिए इस अध्ययन को प्रारम्भ किया गया था। पहले पहल हिन्दी शब्दावली की स्तरित सूचियाँ तैयार की जा रही हैं। 1972-73 के दौरान I से V स्तरों के बच्चों के लिए बोलने, लिखने और पढ़ने से सम्बन्धित शब्दावली एकत्रित की गई और उसका विश्लेषण किया गया।

(ख) शैक्षणिक सर्वेक्षण

1. माध्यमिक अध्यापक शिक्षा का तीसरा राष्ट्रीय सर्वेक्षण :

भारत में माध्यमिक अध्यापक शिक्षा के तीसरे राष्ट्रीय सर्वेक्षण के लिए तथ्य सामग्री एकत्रित करने का कार्य चल रहा है । 367 में से 299 शिक्षा कालेजों ने प्रश्नावली भर कर लौटा दी है। दूसरे कालेजों से प्रश्नावली भर कर मँगवाने के प्रयत्न किए जा रहे हैं । अब तक प्राप्त प्रश्नावलियों के विश्लेषण का कार्य भी किया जा रहा है ।

2. प्रारम्भिक अध्यापक शिक्षा का दूसरा राष्ट्रीय सर्वेक्षण :

प्रारम्भिक अध्यापक शिक्षा के दूसरे राष्ट्रीय सर्वेक्षण पर भरी हुई प्रश्न-मालाएँ राज्य शिक्षा संस्थानों द्वारा एकत्रित की जा रही है। सात राज्य शिक्षा संस्थानों ने अपने राज्य से सम्बन्धित रिपोर्ट भेज दी है। कुछ भरी हुई प्रश्नमालाएँ संघ क्षेत्रों और ऐसे राज्यों से भी प्राप्त हुई है जहाँ राज्य शिक्षा संस्थान नहीं हैं। इन प्रश्नमालाओं द्वारा प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया जा रहा है। राज्य रिपोर्टों के आधार पर राष्ट्रीय रिपोर्ट तैयार करने का कार्य भी प्रारम्भ कर दिया गया है।

3. मणिपुर राज्य में शिक्षा का व्यापक सर्वेक्षण :—

मणिपुर राज्य सरकार के अनुरोध पर परिषद् ने वहाँ की शिक्षा के व्यापक सर्वेक्षण का कार्य प्रारम्भ किया। इस सर्वेक्षण में शैक्षणिक सुविधाओं की उपलब्धता, छात्रों, अध्यापकों, पाठ्यचर्याओं, पाठ्यपुस्तकों, भवनों, छात्रों के शैक्षणिक विकास की सुविधाओं, परीक्षा और मूल्यांकन प्रशासन और पर्यवेक्षण इत्यादि शिक्षा के संरचनात्मक और कार्य सम्बन्धी पहलुओं का तथ्यात्मक अध्ययन किया गया है। विभिन्न पहलुओं पर 1972-73 में अलग-अलग रिपोर्ट तैयार करके राज्य प्राधिकारियों को भेज दी गई।

4. स्कूल स्तर पर एक्स्टर्नल परीक्षाओं में अनुचित साधनों के प्रयोग पर सर्वेक्षण

यह एक चालू परियोजना है। इसमें प्रश्न-पत्र निर्माताओं, निरीक्षकों, अधीक्षकों, विद्यार्थियों, परीक्षकों, संकलकों इत्यादि द्वारा किए गए अनाचारों का अध्ययन किया गया है। माध्यमिक स्तर पर एक्स्टर्नल परीक्षाएँ आयोजित करने वाले राज्य बोर्डों और सम्बद्धी संस्थाओं द्वारा प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया गया और रिपोर्ट को अन्तिम रूप दिया गया।

5. जनजातीय शिक्षा का सर्वेक्षण :

यह सर्वेक्षण आधार सामग्री प्रक्रिया तथा शैक्षिक सर्वेक्षण एकक द्वारा पूर्व-प्राथमिक तथा प्राथमिक शिक्षा विभाग के सहयोग से विभिन्न राज्यों के जनजातीय जिलों के लिए किया जाना था। इस सर्वेक्षण के लिए प्रश्नमाला तैयार की गई, आजमाई गई और उसको अन्तिम रूप दिया गया। यह सर्वेक्षण अब तीसरे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण के एक अंग के रूप में किया जाएगा।

6. तीसरा अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण

तीसरे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण के लिए तैयार की गई प्रश्नमालाओं को विभिन्न संस्थाओं के पास टिप्पणी और सुझावों के लिए भेजा गया। प्राप्त उत्तरों का विश्लेषण कर लिया गया है और उसको भारत सरकार द्वारा तीसरे सर्वेक्षण के लिए गठित सलाहकार समिति के समक्ष रखा जाएगा।

7. माध्यमिक स्कूलों/इंटरमीडिएट कालेजों के छात्रों की शैक्षणिक प्रगति के लिए उपलब्ध सुविधाओं का सर्वेक्षण

गत दो वर्षों में सारे देश के 6 नमूना स्कूलों से एकत्रित की गई तथ्य सामग्री के विश्लेषण का कार्य चल रहा है।

8. मध्य प्रदेश और गुजरात में अध्यापक शिक्षा का सर्वेक्षण

भोपाल के शिक्षा क्षेत्रीय कालेज ने गुजरात और मध्य प्रदेश राज्यों में अध्यापक शिक्षा के सर्वेक्षण का कार्य प्रारम्भ किया है।

9. माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण कालेजों में श्रव्य-दृश्य उपकरण तथा सामग्री की उपलब्धता, उपयोगिता और आवश्यकता के सम्बन्ध में सर्वेक्षण

उपरोक्त अध्ययन के लिए तथ्य सामग्री एकत्रित कर ली गई है और उसका सारणीकरण किया जा रहा है।

10. अनुदेशीय फिल्मों के कीमत निर्धारण ढांचे और उपलब्धता पर सर्वेक्षण

1972-73 के दौरान भारत में शैक्षिक संस्थाओं में अनुदेशीय फिल्मों की उपलब्धता और उनके कीमत-निर्धारण ढाँचे का सर्वेक्षण प्रारम्भ किया गया।

(ग) प्रयोगात्मक परियोजनाएँ

यह परिषद् के चालू कार्यक्रमों में से एक है। प्रतिवेदन वर्ष में माध्यमिक स्कूलों के 297 परियोजना प्रस्तावों को मंजूरी दी गई जिनमें कुल 68,050 रुपए के अनुदान की स्वीकृति की गई।

अध्यापक प्रशिक्षकों को साधन अधिकारी की भूमिका निभाने के लिए और शिक्षकों का शैक्षणिक मार्गदर्शन करने के लिए दो अनुस्थापना वर्कशापों का आयोजन किया गया। इन वर्कशापों में 37 अध्यापक प्रशिक्षकों ने भाग लिया।

विभिन्न राज्यों में स्थित प्राथमिक स्कूलों और जूनियर अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के लिए प्रयोगात्मक परियोजनाओं को प्रतिवेदन वर्ष में मंजूरी दी गई जिसमें लगभग 10,000 रुपए अनुदान के रूप में दिए गए।

परिशिष्ट-14

अनुमोदित अनुसंधान परियोजनाओं के लिए सहायतानुदान (जी० ए० आर० पी०) 1972-73

इस योजना के अन्तर्गत परिषद् विश्वविद्यालय शिक्षा विभागों, अध्यापक प्रशिक्षण कालेजों, अनुसंधान संस्थाओं इत्यादि को शिक्षा में अनुसंधान के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है। यदि परिषद् की कार्यक्रम सलाहकार समिति की अनुसंधान उप-समिति द्वारा स्वीकृति मिल जाए तो सफलतापूर्वक समाप्त की गई अनुसंधान परियोजनाओं की रिपोर्ट परिषद् द्वारा छापी जाती है।

प्रतिवेदन वर्ष में 3 नई और 12 चालू परियोजनाओं को, जिनका विवरण अनुबंध में दिया गया है, वित्तीय सहायता दी गई।

अनुबंध

शिक्षा में अनुमोदित अनुसंधान परियोजनाओं के लिए सहायतानुदान योजना के अन्तर्गत 1972-73 में दिए गए अनुदान की विवरणी

क्रम संख्या	संस्था का नाम	परियोजना का शीर्षक	दी गई अनुदान राशि (रुपए में)
1.	कलकत्ता विश्वविद्यालय कलकत्ता	बच्चों में समय की भावना का विकास	4,000
2.	राजनीति विज्ञान विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर	राजस्थान में पंचायती राज के अधीन प्राथमिक स्कूलों का प्रबंध	15,000
3.	प्रिंसिपल एम० एल० वी० राजकीय कालेज भीलवाड़ा (राजस्थान)	राजस्थान के उच्चतर माध्यमिक स्तर तक वाणिज्य शिक्षा का मूल्यांकन	9,000

1	2	3	4
4.	शिक्षा विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ	भारतीय पब्लिक स्कूलों द्वारा प्रस्तुत नेतृत्व के आदर्शों के विशेष संदर्भ में उनके विकास और वृद्धि का अध्ययन	7,000
5.	मनोविज्ञान विभाग उत्कल विश्वविद्यालय भुवनेश्वर	सामाजिक-सांस्कृतिक उत्तेजनात्मक वातावरण का ज्ञानात्मक विकास	1,0000
6.	उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद	बच्चों की भाषाओं के अध्यापन के कार्य-क्रम बद्ध अधिगम तथा रूढ़िगत तकनीकों की तुलना	10,900
7.	इंस्टीट्यूट ऑफ इंग्लिश कलकत्ता	पश्चिमी बंगाल के स्कूलों में दूसरी भाषा के रूप में बंगला भाषा का अध्यापन	7,500
8.	कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र	हरियाणा के अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों और स्कूलों में नूतन पद्धतियों और परिवर्तनों की उपयोगिता का गहन अध्ययन	5,000
9.	विमेंस ट्रेनिंग कालेज दयालबाग, आगरा	वर्तमान पर्यवेक्षी विधियाँ: उनका मूल्यांकन तथा सुधार	1,775
10.	उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद	मूल्यों के एकीकरण तथा मूल्यों में परिवर्तन लाने के माध्यम के रूप में शिक्षा	3,000

1	2	3	4
11.	रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर	हिन्दी की विभिन्न बोलियों और दूसरी राष्ट्रीय भाषाओं के देशी वक्ताओं की स्तरीय हिन्दी में विचलन	6,000
12.	श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय तिरुपति	बच्चों में तर्कयुक्त विचारों के विकास का अध्ययन	5,000
13.	केरल विश्वविद्यालय त्रिवेंद्रम्	द्राविड़ भाषाओं के लिए बनाई सजातीय-भाषा-युक्ति का और विकास	10,000
14.	मनोविज्ञान विभाग रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर	क्षेत्रीय-संघीय हिन्दी में मूल दक्षताओं के नैदानिक परीक्षण का मानकीकरण तथा निर्माण	6,000
15.	राजकीय अध्यापक प्रशिक्षण कालेज, अजमेर	'यूनिट योजना' की गुणता पर अन्वेषण	2,000
		कुल जोड़	1,02,175

परिशिष्ट-15

प्रशिक्षण कार्यक्रम

गत वर्षों की भाँति 1972-73 में भी परिषद् ने नीचे दिए गए अपने विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा अध्यापकों तथा अध्यापक-शिक्षकों की सेवा-पूर्व तथा सेकाकालीन शिक्षा की ओर पूरा-पूरा ध्यान दिया।

1. सेवापूर्व शिक्षा

1.01 केन्द्रीय शिक्षा संस्थान

दिल्ली स्थित केन्द्रीय शिक्षा संस्थान ने दिल्ली विश्वविद्यालय के बी० एड० और एम० एड० की डिग्रियों के नियमित पाठ्यक्रम जारी रखे। संस्थान ने एम० एड० डिग्री के दो वर्षीय अंशकालिक पाठ्यक्रम और इस विश्वविद्यालय की पीएच०डी० डिग्री के लिए शिक्षा अनुसंधान पाठ्यक्रम को भी जारी रखा। वर्ष 1972 में 156 छात्र बी० एड० की परीक्षा में बैठे, जिनमें से 146 डिग्री की उपाधि के लिए सफल हुए और उनमें से 7 को विशिष्टता प्राप्त हुई। 19 छात्रों ने एम० एड० की डिग्री प्राप्त की जिनमें से 6 को विशिष्टता प्राप्त हुई। 20 अंशकालिक एम० एड० छात्रों में से 17 परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। चार शोध छात्रों को शिक्षा में पीएच० डी० की डिग्री प्रदान की गई।

1.02 क्षेत्रीय शिक्षा कालेज

1972-73 के दौरान अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर के चारों क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों के बी० एससी०, बी० एड० के विज्ञान में चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम जारी रखे गए। भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में बी० ए०, बी० एड० का अंग्रेजी में चार वर्षीय पाठ्यक्रम चलाया गया। जहाँ तक एक वर्षीय बी० एड० पाठ्यक्रमों का संबंध है, चारों क्षेत्रीय कालेजों में विज्ञान का; अजमेर, भोपाल और भुवनेश्वर में वाणिज्य का, और कृषि तथा भाषाओं का पाठ्यक्रम केवल अजमेर व भोपाल में चलाया गया। विज्ञान के चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम को इस प्रकार तैयार किया गया है कि वह न केवल विषय-सूची क्षेत्र के विकास को संतुष्ट करता है

वरन् सम्बन्धित विषय के शिक्षण संबन्धी प्रशिक्षण के तरीकों, विषय विकास से सम्बन्धित कुछ विशिष्ट सामान्य शिक्षा और उपयुक्त व्यावसायीकरण या कार्य अनुभव को भी ध्यान में रखता है।

प्रतिवेदन वर्ष में अजमेर, भोपाल और भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में एम० एड० पाठ्यक्रम चालू रहे। 1972-73 के शैक्षणिक सत्र में सभी क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में 4 वर्षीय बी० एससी०, बी० एड० और बी० ए०, बी० एड० डिग्रियों और एक वर्षीय बी० एड० डिग्री के लिए लगभग 2,000 छात्र नामांकित थे। अजमेर, भोपाल और भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में एम० एड० के पाठ्यक्रम के लिए क्रमश: 8, 6 और 10 छात्र दाखिल हुए।

देश के उच्च/उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के अप्रशिक्षित अध्यापकों की संख्या समाप्त करने के लिए, परिषद् ग्रीष्मकालीन स्कूलों एवं पत्राचार पाठ्यक्रमों का आयोजन करती रही है जिनके बाद इसके चारों क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों से बी० एड० की डिग्री ली जा सकती है। इस पाठ्यक्रम में दो गर्मी की छुट्टियों (4 महीनों) के दौरान पूर्ण कालिक आशु प्रशिक्षण और दो गर्मियों की छुट्टी के बीच की दस महीने की अवधि में पत्राचार के द्वारा अनुदेश सम्मिलित है। 1972-73 में चारों क्षेत्रीय कालेजों में इस पाठ्यक्रम के छात्रों की कुल संख्या 1,800 थी।

2. सेवा-कालीन शिक्षा

प्रतिवेदन वर्ष में परिषद् द्वारा अध्यापकों तथा स्कूली शिक्षा से संबद्ध अन्य शैक्षिक कार्यकर्ताओं के लिए सेवा के दौरान अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन पाठ्यक्रम प्रस्तुत किए जाने के लिए किए गए कार्य का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है।

2.01 ग्रीष्मकालीन विज्ञान संस्थान

माध्यमिक स्कूल/विश्वविद्यालय-पूर्व/इंटरमीडिएट कालेज/स्नातक-पूर्व कालेज के विज्ञान तथा गणित के अध्यापकों को उनके विषयों में हुए नवीनतम विकास से अवगत कराने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा परिषद् के सहयोग से पिछले कुछ वर्षों के दौरान ग्रीष्मकालीन संस्थानों का आयोजन करती रही है। वर्ष 1972 से परिषद् अनन्य रूप से इस संस्थानों के चलाने के लिए उत्तरदायी है। ये ग्रीष्मकालीन संस्थान सामान्यत: 5-6सप्ताह की अवधि के लिए होते हैं और इनका आयोजन विश्वविद्यालयों/कालेजों के ज्ञान साधन व्यक्तियों की सहायता से विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों की अध्यक्षता में किया जाता है। प्रतिवेदन वर्ष में विज्ञान तथा गणित के 88 ग्रीष्मकालीन संस्थानों का देश के विभिन्न केन्द्रों में आयोजन किया गया।

2.02 अन्य शैक्षिक क्षेत्रों में ग्रीष्मकालीन संस्थान

(क) भारतीय शिक्षा की समकालीन समस्याओं पर ग्रीष्मकालीन संस्थान—मई-

जून 1972 के दौरान गोआ में भारतीय शिक्षा की समकालीन समस्याओं पर एक ग्रीष्मकालीन संस्थान का आयोजन किया गया। इस संस्थान का उद्देश्य भाग लेने वालों में भारतीय शिक्षा की समकालीन समस्याओं पर जोर देते हुए शिक्षा के आधार क्षेत्रों के ज्ञान को बढ़ाना और इन समस्याओं पर अनुसंधान कार्य करने के लिए प्रेरित करना था। विभिन्न राज्यों से आए 36 लोगों ने इस संस्थान में भाग लिया।

(ख) **शिक्षा में अनुसंधान प्रणाली पर ग्रीष्मकालीन संस्थान**—हैदराबाद स्थित उस्मानिया विश्वविद्यालय में शिक्षा में अनुसंधान प्रणाली पर ग्रीष्मकालीन संस्थान का आयोजन किया गया। इस पाठ्यचर्या में अनुसंधान परियोजनाओं की युक्तियाँ और योजनाएँ बनाना, उपकरणों को विकसित करना, सांख्यिकीय विश्लेषण और अनुसंधान रिपोर्टों का लिखना शामिल है। 26 अध्यापक प्रशिक्षकों ने इस संस्थान में भाग लिया।

(ग) **प्रायोगिक भाषा विज्ञान तथा भाषा शिक्षण पर ग्रीष्मकालीन संस्थान**—5 जून से 20 जुलाई 1972 तक भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज में प्रायोगिक भाषा विज्ञान तथा भाषा प्रशिक्षण पर एक ग्रीष्मकालीन संस्थान का आयोजन किया गया। यह संस्थान दो स्तरों—एक तो सामान्य स्तर और दूसरा अग्रिम स्तर, पर आयोजित किया गया। 16 व्यक्तियों ने सामान्य स्तरीय पाठ्यक्रम में और 16 ने अग्रिम स्तरीय पाठ्यक्रम में भाग लिया।

2.03 शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन डिप्लोमा पाठ्यक्रम

शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन सम्बन्धी 12वाँ पूर्णकालिक स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम 1972-73 के दौरान आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम का रूपांकन राज्य मार्गदर्शन ब्यूरो के सलाहकारों और प्रशिक्षण कालेजों में मार्गदर्शन बढ़ाने वाले अध्यापक प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए किया गया था। 21 व्यक्तियों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया और पूरा किया। भाग लेने वालों में से चार राज्य सरकारों द्वारा प्रतिनियुक्त किए गए थे।

2.04 अन्य अल्पकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम

विभिन्न क्षेत्रों में अन्य अनेक अल्पकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों की संक्षिप्त रिपोर्ट नीचे दी गई है।

1. केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और मैसूर राज्यों के पूर्व-प्राथमिक तथा प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं में शिशु मनोविज्ञान पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए लगभग दो सप्ताह अवधि का एक अल्पकालीन पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। 28 अध्यापकों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया।

2. कार्यक्रमबद्ध अधिगम पर सातवें आनुक्रमिक पाठ्यक्रम का आयोजन 25 और 15 दिनों की अवधि के दो चरणों में हुआ। 57 लोगों ने अपने-अपने विषयों में कार्यक्रम विकसित करने के लिए इस पाठ्यक्रम में भाग लिया। उनको विभिन्न योजना त्रुटियों और क्षेत्रीय परीक्षण तकनीकों में भी प्रशिक्षण दिया गया।

3. बिहार के जिला भागलपुर के हिन्दी के अध्यापकों को दिन-प्रतिदिन पेश आ रही समस्याओं को सुलझाने के लिए एक अल्पकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 50 अध्यापकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

4. मिडिल कक्षाओं में सामाजिक अध्ययन पढ़ा रहे अध्यापकों के लिए 3 सप्ताह की अवधि का जयपुर में एक प्रशिक्षण और अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

5. परमाणु ऊर्जा आयोग द्वारा संचालित स्कूलों में सामाजिक अध्ययन के अध्यापकों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन बम्बई में किया गया।

6. राजस्थान के प्रारम्भिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के सामाजिक अध्ययन के अध्यापक प्रशिक्षकों को विषय तत्व में हुई नई तब्दीलियों और प्रशिक्षण तकनीकों से अवगत कराने के लिए उदयपुर में एक सप्ताह के कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

7. महाराष्ट्र राज्य के माध्यमिक शिक्षा कालेजों के इतिहास के अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए पूना में दो सप्ताह के गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

8. राज्य शिक्षा संस्थानों के निदेशकों/प्रिंसिपलों या उनके प्रतिनिधियों के लिए स्कूल शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में हुए नए विकासों और अपने-अपने अनुभवों के आदान-प्रदान के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम और सम्मेलन का आयोजन किया गया। 12 राज्यों/संघ क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले 19 व्यक्तियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

9. श्रव्य-दृश्य शिक्षा सम्बन्धी दो अखिल भारतीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का 21 अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए आयोजन किया गया। प्रत्येक पाठ्यक्रम की अवधि 8 सप्ताह थी।

10. श्रव्य-दृश्य शिक्षा में 4 सप्ताह के एक क्षेत्रीय पाठ्यक्रम का 13 अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए हैदराबाद में आयोजन किया गया।

11. इस वर्ष के दौरान श्रव्य-दृश्य शिक्षा सम्बन्धी चार सप्ताह के एक तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

12. प्राथमिक स्कूल के अध्यापकों को सामाजिक अध्ययन और विज्ञान में कम दाम वाले श्रव्य-दृश्य साधनों को तैयार करने में प्रशिक्षण देने के लिए एक एक सप्ताह की अवधि के तीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों और वर्कशापों का आयोजन किया गया ।

13. दिल्ली राज्य शिक्षा संस्थान के लगभग 100 व्यक्तियों के लिए एक सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम और वर्कशाप का आयोजन किया गया ।

14. जनजातीय क्षेत्रों में तैनात शिक्षा अधिकारियों के लिए जनजातीय संस्कृति और जीवन पर दो प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का आयोजन किय गया । इन क्षेत्रों में कार्य कर रहे प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के लिए भी ऐसे ही दो पाठ्यक्रमों का आयोजन किया गया ।

15. ग्रीष्मकालीन संस्थानों के निदेशकों के लिए ग्रीष्मकालीन संस्थानों के उद्देश्यों पर विचार करने के लिए और इन संस्थानों में अनुदेशीय कार्य-क्रमों के आयोजन के लिए मार्गदर्शन करने के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।

16. बिहार, त्रिपुरा, मेघालय, नागालैण्ड, अण्डमान और निकोबार द्वीप समूहों के विज्ञान के विशेष अधिकारियों को प्राथमिक विज्ञान कार्यक्रमों, विज्ञान किटों और सामग्रियों के नए ढंगों से अवगत कराने के लिए एक अभि-विन्यास पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया ।

17. क्षेत्रीय कालेजों के ग्रीष्मकालीन संस्थानों के निर्देशकों के लिए राज्यों की यूनीसेफ-सहायता प्राप्त विज्ञान शिक्षण परियोजना के कार्यक्रमों के विस्तार पर विचार-विमर्श करने के लिए एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया ।

18. त्रिवेन्द्रम में 3 से 10 मई 1972 तक इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र स्कूल पाठ्यपुस्तकों के लेखकों और मूल्यांककों के प्रशिक्षण के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।

19. जनवरी 1973 में नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान कैम्पस में भाषा पाठ्य पुस्तकों के लेखकों और मूल्यांककों के लिए एक अल्पकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया । उत्तर प्रदेश और राजस्थान राज्यों से आए 30 व्यक्तियों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया ।

20. पंजाब राज्य के पाठ्यपुस्तक लेखको और मूल्यांककों के लिए फरवरी 1973 में चंडीगढ़ में एक प्रशिक्षण और वर्कशाप का आयोजन किया गया । 32 व्यक्तियों ने पाठ्यपुस्तक सामग्री छाँटने और उसको पेश करने की तकनीकों और नियमों और पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के सम्बन्ध में आयोजित अभिविन्यास कार्यक्रम में भाग लिया । इन लोगों ने हिन्दी

और पंजाबी भाषाओं की प्रवेशिकाएँ तैयार करने के लिए इन भाषाओं की एक शब्द सूची भी तैयार की।

21. मैसूर राज्य के विषय निरीक्षकों के लिए 6 सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। गणित, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, कन्नड़ और शारीरिक शिक्षा के 69 निरीक्षकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

22. सालेम के सहकारी स्कूलों के 29 विज्ञान अध्यापकों और कालीकट के सहकारी स्कूलों के 43 विज्ञान अध्यापकों के लिए जुलाई-अगस्त 1972 में मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज द्वारा विज्ञान प्रशिक्षण अभिविन्यास कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

23. माध्यमिक स्कूल के 100 अध्यापकों, विषय निरीक्षकों और प्रशिक्षण कालेजों के अध्यापकों को विज्ञान शिक्षा के नवीनतम विकासों और तकनीकों में प्रशिक्षित करने के लिए विज्ञान में एक सेवा-कालीन प्रशि-क्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

24. दिल्ली के स्कूल अध्यापकों के लिए छायाचित्रण में 6 दिवसीय एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन नवम्बर 1972 में किया गया। दस अध्यापकों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया।

25. उड़ीसा, पश्चिम बंगाल और बिहार के माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए कृषि के नए विकासों के सम्बन्ध में एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। 6 राज्यों से आए 14 अध्यापकों ने इस पाठ्य-क्रम में भाग लिया।

26. पूर्वी क्षेत्र के माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए रसायन विज्ञान में एक सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य भाग लेने वालों को कम दाम वाले उपकरण और उद्देश्यात्मक परीक्षण तैयार करने में प्रशिक्षित करना था।

27. पूर्वी क्षेत्र के भौतिकी के अध्यापकों के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा तैयार की गई भौतिकी पाठ्यपुस्तकों के सम्बन्ध में एक सेवाकालीन अभिविन्यास प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया।

28. पूर्वी क्षेत्र के माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए वाणिज्य में प्रशि-क्षण इकाइयाँ, यूनिट योजनाएँ, परीक्षण मद इत्यादि तैयार करने के

संबंध में एक सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया।

29. उड़ीसा के माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए इतिहास और भूगोल में सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इन दो विषयों को पढ़ाने वाले 35 अध्यापकों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया।

30. बोली जाने वाली अंग्रेजी के सम्बन्ध में पूर्वी क्षेत्र के केन्द्रीय विद्यालयों के 26 प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के लिए एक सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

परिशिष्ट 16

विस्तार और क्षेत्र सेवाएँ

1972-73 के दौरान परिषद् द्वारा विस्तार और क्षेत्र सेवाओं की व्यवस्था के लिए किए गए कार्यों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित पैराग्राफों में दिया गया है—

1. विस्तार सेवा केन्द्र

प्राथमिक और माध्यमिक विस्तार सेवा केन्द्रों का नियन्त्रण राज्य सरकारों या विश्वविद्यालयों द्वारा किया जाता है। तथापि राज्यों में स्थित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के क्षेत्रीय सलाहकारों तथा राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों और क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों के अधिकारियों द्वारा इन केन्द्रों के शैक्षणिक मार्गदर्शन का कार्य जारी रहा। इन केन्द्रों को दिए गए मार्गदर्शन का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है—

1. भुवनेश्वर के क्षेत्र सलाहकार ने पश्चिमी बंगाल, बिहार और उड़ीसा के विस्तार सेवाकेन्द्रों के समन्वयकों के लिए पश्चिमी बंगाल के बाणीपुर स्थित राज्य शिक्षा संस्थान में एक तीन दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में विस्तार कार्यक्रमों में सुधार, प्रायोगिक परियोजनाओं और पठन सेमिनारों की लोकप्रियता, विस्तार कार्यक्रमों के आयोजन में क्षेत्र सलाहकारों का कार्य, विस्तार कार्यक्रमों के आयोजन में पेश आ रही समस्याओं और इन कठिनाइयों को दूर करने के मुमकिन तरीके इत्यादि विषयों पर विचार-विमर्श किया गया।

2. दिल्ली और उत्तर प्रदेश क्षेत्र के क्षेत्र सलाहकार ने मेरठ में विस्तार सेवा केन्द्रों के समन्वयकों के लिए एक रिफ्रेशर पाठ्यक्रम का आयोजन किया। पाठ्यक्रम का ढाँचा विस्तार सेवा केन्द्रों के अवैतनिक निदेशकों और समन्वयकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया था। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने भाग लेने वालों के समक्ष भाषण दिया। क्षेत्र

सलाहकार ने उत्तर प्रदेश सरकार के साथ राज्य में स्थित विस्तार सेवा केन्द्रों को अपने अधिकार में लेने के लिए और विस्तार आन्दोलन को दृढ़ करने के लिए नए केन्द्रों की स्थापना करने के लिए प्रयत्न किए। राज्य सरकार द्वारा नियुक्त मूल्यांकन दल ने विस्तार सेवा केन्द्रों को राज्य सरकार द्वारा अधिकार में लेने की समस्याओं की जाँच कर ली है पर अभी तक अपनी रिपोर्ट नहीं दी है। क्षेत्र सलाहकार के प्रयत्नों से नई दिल्ली नगरपालिका ने एक विस्तार एवं विज्ञान केन्द्र की स्थापना की है जिसका अवैतनिक निदेशक एक शिक्षा अधिकारी है और दिल्ली के दरियागंज स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान से संबद्ध प्राथमिक विस्तार सेवा केन्द्र का कार्यभार दिल्ली प्रशासन ने सम्भाला है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा तैयार किए गये अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम प्रारूप के अनुकूलन/निर्धारण के लिए इलाहाबाद, आगरा और वाराणसी में अर्थशास्त्र अध्यापकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

3. क्षेत्र सलाहकार (त्रिवेन्द्रम्) ने विस्तार अधिकारियों और प्राथमिक विस्तार केन्द्रों के समन्वयकों को अनियमित हाजिरी, प्रभावहीन पढ़ाई और स्कूल छोड़ने वालों की समस्याओं को सुलझाने के लिए प्रशिक्षित करने के लिए एक संयुक्त सम्मेलन के आयोजन में केरल सरकार की सहायता की। क्षेत्र सलाहकार के प्रयत्नों से स्थानीय उपलब्ध सामग्री द्वारा विज्ञान शिक्षण के सुधरे अध्यापन साधनों को तैयार करने की प्रतियोगिताओं के आयोजन को राज्य सरकार ने विज्ञान क्लब कार्यकलापों का एक आवश्यक कार्य माना है।

4. क्षेत्र सलाहकार (बंगलौर) ने विस्तार सेवा केन्द्र के मार्ग-दर्शन का कार्य जारी रखा और व्यक्तिगत सम्पर्कों द्वारा सम्पर्क कार्य भी किया। शिक्षा क्षेत्र में हो रहे नये विकासों की ओर विस्तार सेवा केन्द्रों के अवैतनिक निदेशकों और समन्वयकों का ध्यान संकेन्द्रित करने और उसके अनुसार योजना कार्यक्रम बनाने में उनकी सहायता करने के लिए सम्मेलनों का आयोजन किया गया। समन्वयकों के लिए सेमिनारों, यूनेस्को/यूनीसेफ सहायता प्राप्त विज्ञान कार्यक्रम के क्षेत्रीय कार्यान्वियन अधिकारियों के लिए सम्मेलनों, जूनियर कालेजों के अध्यापकों के लिए सेमिनारों, विषय निरीक्षकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रमों, और शिक्षा कालेजों के कर्मचारियों के लिए अभिविन्यास सेमिनारों की रूप रेखा तैयार करके क्षेत्र सलाहकार ने राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों को भेजी। क्षेत्र सलाहकार ने स्कूल काम्प्लैक्सों, शिक्षा में प्रयोग, भावात्मक और राष्ट्रीय एकीकरण, सेवाकालीन नूतन तकनीकों, शिक्षा के सेवाकालीन उपायों, माइक्रो शिक्षण इत्यादि

विषयों पर बहुत से भाषण दिए। क्षेत्र सलाहकार के दफ़्तर ने "ऐजुकेशनल एक्स्चेंज" नामक मासिक पत्रिका प्रकाशित की।

5. क्षेत्र सलाहकार (शिलांग) ने असम सरकार के साथ राज्य के 5 विस्तार सेवा केन्द्रों को अपने अधिकार में लेने के लिए प्रयत्न जारी रखे। उसने विस्तार केन्द्रों का शैक्षणिक मार्गदर्शन भी किया।

6. क्षेत्र सलाहकार (भूपाल) ने मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात राज्यों के प्रारम्भिक स्कूल अध्यापकों के लिए सेवा-कालीन पुनः प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार किए। यह कार्यक्रम प्रारम्भिक स्कूल अध्यापकों को इन राज्यों में प्रचलित नए पाठ्यक्रमों की समस्याओं से निपटने के लिए तैयार किया गया था। इन तीन राज्यों में प्रारम्भिक अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम को नए पाठ्यक्रम के अनुसार संशोधित और क्रमोन्नत किया गया है। माध्यमिक स्तर पर अध्यापक प्रशिक्षण सुधारने के लिए क्षेत्र सलाहकार ने एक नई योजना तैयार की है जो तीनों राज्यों के विचाराधीन है।

7. क्षेत्र सलाहकार (पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, जम्मू तथा कश्मीर और हिमाचल प्रदेश) ने विस्तार सेवा केन्द्रों के अवैतनिक निदेशकों और समन्वयकों द्वारा किए गए कार्यों की समीक्षा के लिए और शिक्षा क्षेत्र में हुई नई तब्दीलियों की रोशनी में उनके कार्यकलापों की योजना तैयार करने में सहायता करने के लिए एक क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस क्षेत्र के विभिन्न राज्यों द्वारा किए गए कार्यों की समीक्षा के लिए और अश्रेणीकृत स्कूल पद्धति के अनुदेशीय और संगठनात्मक कार्यविधियों और क्रमिक यूनिटों को सुधारने और हिन्दी शब्दावली विकसित करने के लिए क्षेत्र सलाहकार ने अश्रेणीकृत स्कूल पद्धति पर एक वर्कशाप का आयोजन किया। क्षेत्र सलाहकार ने अपने क्षेत्र के प्राथमिक और माध्यमिक विस्तार सेवा केन्द्रों के कार्यों का निरीक्षण किया। उसने यूनेस्को-यूनीसेफ सहायता प्राप्त विज्ञान परियोजना कार्यान्वियन में राज्य सरकारों की सहायता की। क्षेत्र सलाहकार ने शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय द्वारा मॉडल प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों को तैयार करने की योजनाएँ और नमूने तैयार करने के लिए गठित एक कार्य दल के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया।

8. प्राथमिक और माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के विस्तार सेवा केन्द्रों के समन्वयकों के लिए क्षेत्र सलाहकार ने जनवरी 1973 में जयपुर में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। उसने विस्तार केन्द्रों के शैक्षणिक मार्गदर्शन का कार्य सारे वर्ष जारी रखा।

2. विचार गोष्ठी पठन कार्यक्रम

इस कार्यक्रम का उद्देश्य माध्यमिक स्कूल अध्यापकों को अपने समालोचनात्मक विचारों और कक्षा शिक्षण से प्राप्त अनुभवों के आधार पर माध्यमिक शिक्षा विषयों पर लेख लिखने के लिए प्रेरित करना है। 1972-73 के दौरान विभिन्न राज्यों से विचार गोष्ठी पठन कार्यक्रम की दसवीं अखिल भारतीय प्रतियोगिता के लिए 124 पत्रक प्राप्त हुए थे। 21 पत्रक राष्ट्रीय पुरस्कारों के लिए छांटे गए। पुरस्कारों का वितरण जनवरी 1973 में दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय समारोह में किया गया। नवीं प्रतियोगिता के प्रत्याशियों को भी इस समारोह में आमन्त्रित किया गया क्योंकि नौवां राष्ट्रीय समारोह 1971-72 में राष्ट्रीय आपात स्थिति के कारण नहीं आयोजित किया जा सका था। चुने हुए पत्रक विज्ञान, नवीन गणित, भाषा, पठन आदतें, पाठ्यक्रमेतर कार्य कलाप और स्कूल संगठन की समस्याओं जैसे विषयों पर थे।

3. विचार गोष्ठियाँ, कार्यशिविर, सभाएँ, सम्मेलन आदि

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों और क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों द्वारा सारे देश में अनेक विचार गोष्ठियों, कार्यशिविरों, सभाओं, सम्मेलनों आदि का आयोजन किया गया। इनका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है—

1. अगस्त 1972 में पोरबन्दर के आर० जी० अध्यापक कालेज में गुजरात के विज्ञान पद्धति आचार्यों के लिए एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। 25 व्यक्तियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

2. सितम्बर 1972 में रीवां के राजकीय शिक्षा कालेज में मध्य प्रदेश के विज्ञान पद्धति आचार्यों के लिए एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। 24 व्यक्तियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

3. सितम्बर 1972 में रतनगिर के राजकीय शिक्षा कालेज में महाराष्ट्र के विज्ञान पद्धति आचार्यों के लिए एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। 25 व्यक्तियों ने सम्मेलन में भाग लिया।

4. अगस्त 1972 में भोपाल के अध्यापकों के लिए कार्य-अनुभव में एक तीन-दिवसीय कर्मशाला का आयोजन किया गया। 21 व्यक्तियों ने इस कर्मशाला में भाग लिया।

5. सितम्बर-अक्टूबर 1972 तक पूना के राज्य शिक्षा संस्थान में शिक्षा के दर्शनशास्त्र और समाजशास्त्र सम्बन्धी आधारों पर अनुदेश सामग्री विकसित करने के लिए एक 6-दिवसीय कर्मशाला का आयोजन किया गया। 37 लोगों ने इस कर्मशाला में भाग लिया।

6. राजकीय शिक्षा कालेजों और बेसिक प्रशिक्षण संस्थानों के कला प्रशिक्षकों के लिए अक्तूबर 1972 में मध्य प्रदेश के शिक्षा निदेशालय और माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सहयोग से एक कर्मशाला का आयोजन किया गया । 21 लोगों ने इस कर्मशाला में भाग लिया ।

7. दिसम्बर 1972 में महाराष्ट्र के अंग्रेजी पद्धति आचार्यों के लिए निर्मला शिक्षा संस्थान, पानाजी, गोआ में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। 32 व्यक्तियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया ।

8. मध्य प्रदेश के राज्य शिक्षा संस्थान में प्रश्नपत्र निर्माताओं के लिए दिसम्बर 1972 में एक कर्मशाला का आयोजन किया गया । 33 लोगों ने इस कर्मशाला में भाग लिया ।

9. रायपुर के राजकीय शिक्षा कालेज में प्रश्नपत्र निर्माताओं के लिए एक कर्मशाला का आयोजन जनवरी 1973 में किया गया जिसमें 21 लोगों ने भाग लिथा ।

10. विभिन्न वाणिज्य विषयों की एक स्तरीय शब्दावली तैयार करने के लिए एक कर्मशाला का आयोजन फरवरी 1973 में किया गया । 37 व्यक्तियों ने इस कर्मशाला में भाग लिया ।

11. गुड़ियाँ बनाने पर एक कर्मशाला का आयोजन फरवरी 1973 में किया गया जिसमें 23 लोगों ने भाग लिया ।

12. अजमेर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज में संस्थात्मक योजना पर एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में 44 लोगों ने भाग लिया।

13. अजमेर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज में क्षेत्रीय स्तर पर गणित, हस्त कार्य, जीव-विज्ञान, वाणिज्य, विज्ञान शिक्षा, मनोविज्ञान, कृषि और रचनात्मकता में शिक्षण कार्यों पर अनेक कर्मशालाओं का आयोजन किया गया ।

14. उत्तरी क्षेत्र के अध्यापकों के लिए कार्य अनुभव पर एक कर्मशाला का आयोजन अगस्त 1972 में किया गया । 27 लोगों ने इस कर्मशाला में भाग लिया ।

15. मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज में दक्षिणी क्षेत्र के सहयोगी स्कूलों के मुख्याध्यापकों और अध्यापकों के एक सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें 22 लोगों ने भाग लिया ।

16. प्राथमिक स्कूलों की प्रयोगात्मक परियोजनाओं की योजना के लिये साधन अधिकारियों को प्रशिक्षित करने के लिए अक्टूबर 1972 में

एक कर्मशाला का आयोजन किया गया। दक्षिणी क्षेत्र के विस्तार सेवा केन्द्रों के 13 समन्वयकों और अध्यापक प्रशिक्षकों ने इस कर्मशाला में भाग लिया।

17. हाई स्कूल अध्यापकों के लिए कोट्टायम में अंग्रेजी और भौतिकी के शिक्षण पर विचार गोष्ठियों का आयोजन नवम्बर 1972 में किया गया। 62 अंग्रेजी के और 74 भौतिकी के अध्यापकों ने विचार गोष्ठियों में भाग लिया।

18. दिल्ली के नर्सरी स्कूल अध्यापकों के लिए केन्द्रीय शिक्षा संस्थान में में एक 6-दिवसीय विचार गोष्ठी एवं कर्मशाला का आयोजन मई 72 में किया गया। 41 अध्यापकों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

19. दिल्ली नगर निगम के स्कूलों के मुख्याध्यापकों के लिए प्रश्नपत्र के विश्लेषण और मूल्यांकन पर एक 5-दिवसीय कर्मशाला का आयोजन किया गया। 28 मुख्याध्यापकों ने इस कर्मशाला में भाग लिया।

20. दिल्ली नगर निगम के विज्ञान केन्द्रों में कार्य कर रहे व्यक्तियों के लिए श्रव्य-दृश्य शिक्षा पर दो दिन की एक कर्मशाला का आयोजन किया गया।

21. दिल्ली के भूगोल के अध्यापकों के लिए भूगोल शिक्षण में श्रव्य-दृश्य साधनों के उपयोग पर दो दिन की एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। 25 अध्यापकों ने इस विचार गोष्ठी में भाग लिया।

22. कक्षा 6 में गणित शिक्षण के अध्यापकों के लिए विषय तत्व और पद्धतियों पर चार-दिवसीय एक सेमिनार का आयोजन नवम्बर 1972 में किया गया।

23. दिल्ली स्कूलों के परामर्शदाताओं और अध्यापन व्यवसायकों के मार्ग-दर्शन के लिए तीन दिवसीय एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। 55 व्यक्तियों ने इस विचार गोष्ठी में भाग लिया।

24. उड़ीसा और बिहार के माध्यमिक प्रशिक्षण कालेजों और जूनियर बेसिक प्रशिक्षण स्कूलों के अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए श्रव्य-दृश्य शिक्षा पर एक कर्मशाला का आयोजन किया गया। 22 व्यक्तियों ने कर्मशाला में भाग लिया।

25. पूर्वी क्षेत्र के 10 अंग्रेजी और 7 गणित के अध्यापकों के लिए कार्य-क्रमित अधिगम पर एक कर्मशाला का आयोजन किया गया।

26. पूर्वी क्षेत्र के सहयोगी स्कूलों के मुख्याध्यापकों, प्रिंसिपलों और ज्येष्ठ विषय अध्यापकों का सम्मेलन शिक्षण कार्यक्रम की सीमा बद्धता पर

विचार विमर्श करने के लिए आयोजित किया गया।

27. पूर्वी क्षेत्र के स्नातकोत्तर प्रशिक्षण कालेजों के गणित पद्धति आचार्यों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें माध्यमिक स्कूल गणित के आधुनिक विकास पर विचार किया गया।

28. शिक्षा के दर्शनशास्त्र और समाजशास्त्र के बी०एड० पाठ्यक्रम को सुधारने के लिए पूर्वी क्षेत्र के स्नातकोत्तर प्रशिक्षण कालेज के अध्यापक प्रशिक्षकों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया।

29. गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद में 1 से 10 जून 1972 तक माध्यमिक स्कूल प्रशिक्षकों के लिए गणित और विज्ञान शिक्षण पर और प्रारम्भिक शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए गणित शिक्षण पर कर्मशालाओं का आयोजन किया गया।

30. गौहाटी और डिब्रूगढ़ के विश्वविद्यालयों से संबद्ध प्रशिक्षण कालेजों के लिए अध्यापक शिक्षा के मूल्यांकन पर गौहाटी में मार्च 1973 में एक कर्मशाला का आयोजन किया गया।

31. अध्यापक प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण देकर साधन अधिकारी के रूप में माध्यमिक स्कूल अध्यापकों को प्रयोगात्मक परियोजनाओं के आयोजन में शैक्षणिक मार्गदर्शन के लिए तैयार करने के वास्ते अजमेर और भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में दो कर्मशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें क्रमशः 14 और 23 लोगों ने भाग लिया।

32. परिषद् के केन्द्रीय फ़िल्म पुस्तकालय ने अपनी सदस्य-संस्थाओं को 1972-73 में 10,000 फिल्में प्रदर्शन के लिए दीं।

33. शैक्षिक बरबादी और गतिरोध को प्राथमिक स्तर पर कम करने हेतु क्रिया कार्यक्रमों को विकसित करने के लिए एक राष्ट्रीय विचार गोष्ठी का आयोजन नई दिल्ली में फरवरी 1973 में किया गया।

34. अप्रैल 1972 में प्रारम्भिक शिक्षा की विभिन्न समस्याओं पर विचार-विमर्श करने के लिए प्रारम्भिक शिक्षा पर एक राष्ट्रीय विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

35. प्राथमिक स्तर पर विज्ञान के नए ज्ञान को दूर-दूर ग्रामीण क्षेत्रों में फैलाने के लिए विज्ञान के श्रव्य-दृश्य उपकरणों, चार्टों और पुस्तकों से लैस दो चलती फिरती मोटर गाड़ियाँ तैयार की गईं।

36. यूनीसेफ सहायता प्राप्त विज्ञान शिक्षण परियोजना की प्रगति पर विचार करने और उसके व्यापक कार्यान्वयन की योजना तैयार करने के लिए राज्य सम्पर्क अधिकारियों की नवम्बर 1972 में एक-दो दिन की बैठक बुलाई गई।

37. मिडिल स्कूल स्तर के लिए भौतिकी, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान और गणित विषयों में विकसित विषय सामग्री पर नमूना प्रश्नों को तैयार करने के लिए चार मूल्यांकन कर्मशालाओं का आयोजन करनाल, पटना, उदयपुर और जयपुर में किया गया।

38. क्षेत्रीय कर्मशालाओं में मूल्यांकन पर तैयार सामग्री को सुधारने के लिए नई दिल्ली में मार्च 1973 में एक कर्मशाला का आयोजन किया गया।

39. विभिन्न राज्यों से आए 28 लोगों के लिए प्राथमिक विज्ञान पाठ्य-पुस्तक के लिए परीक्षण सामग्री विकसित करने के लिए उदयपुर में मार्च 1973 में एक मूल्यांकन कर्मशाला का आयोजन किया गया।

40. परिषद् ने विभिन्न अवसरों पर अनेक प्रदर्शनियों का आयोजन किया। इनमें से नई दिल्ली के तीनमूर्ति भवन में 11 से 19 नवम्बर 1972 तक आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी विशेष उल्लेखनीय है।

41. पाठ्यपुस्तक प्रकाशन तथा निर्माण सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर विचार करने के लिए अनेक विचार गोष्ठियों की योजना तैयार की गई। ऐसी 6 विचार गोष्ठियों का आयोजन बिहार, केरल, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, मैसूर और तमिलनाडु राज्यों के प्रधान कार्यालयों में किया गया। इस विषय पर 7वीं शिखर विचार गोष्ठी का आयोजन नई दिल्ली में राष्ट्रीय विचार गोष्ठी के रूप में किया गया। भाग लेने वालों ने विचार गोष्ठी में अनेक लेख प्रस्तुत किए।

42. स्कूल पाठ्यपुस्तकों का द्वितीय राष्ट्रीय सम्मेलन नई दिल्ली के विज्ञान भवन में 21 से 24 दिसम्बर 1972 तक आयोजित किया गया। इसमें 16 राज्यों और एक संघ क्षेत्र से आए 32 लोगों ने भाग लिया। इस सम्मेलन ने 1970 में हुए पहले सम्मेलन के बाद में हुई प्रगति का जायजा लिया।

43. राष्ट्रीय स्कूल पाठ्यपुस्तक बोर्ड की तीसरी बैठक 22 जुलाई 1972 को हुई। इसमें स्कूल पाठ्य पुस्तकों के मूल्यांकन का प्रचण्ड कार्यक्रम, विभिन्न राज्यों में पाठ्यपुस्तकों का राष्ट्रीयकरण, अल्पसंख्यक भाषा दलों की पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन और पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन और निर्माण में गुण नियन्त्रण इत्यादि विषयों पर विचार किया गया।

44. मार्च-अप्रैल 1973 में नई दिल्ली में आधुनिक गणित में कार्यक्रमित अधिगम सामग्री विकसित करने के लिए एक कर्मशाला का आयोजन किया गया जिसमें दिल्ली स्कूलों के 12 गणित अध्यापकों ने भाग लिया।

45. पाँच राज्यों से आए 17 लोगों के लिए अध्यापक आचरण नमूनों और छात्रों के शैक्षणिक विकास पर उसके प्रभाव के सम्बन्ध में एक कर्मशाला का आयोजन नई दिल्ली में फरवरी 1973 में किया गया। इसमें भाग लेने वाले अध्यापक प्रशिक्षक और विस्तार सेवा केन्द्रों के समन्वयक थे।

46. शैक्षिक परियोजनाओं के मूल्यांकन में माप और धारणात्मक समस्याओं के स्पष्टीकरण के लिए शैक्षिक परियोजनाओं के कीमत लाभ विश्लेषण पर एक कर्मशाला का आयोजन किया गया। इस कर्मशाला में 40 शैक्षिक योजना निर्माताओं, प्रशासकों और अर्थशास्त्रियों ने भाग लिया।

47. दिसम्बर 1972 में वाराणसी में कक्षा की सामाजिक मापकता पर एक कर्मशाला का आयोजन किया गया। उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा और पश्चिमी बंगाल राज्यों से आए 26 सलाहकारों और अध्यापक प्रशिक्षकों ने इस कर्मशाला में भाग लिया।

परिशिष्ट 17

राज्यों तथा संघ क्षेत्रों के साथ सहयोग

1972-73 के दौरान राज्य सरकारों तथा परिषद् के बीच सहयोग के कार्यक्रमों का संक्षिप्त ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है :

1. विज्ञान और गणित की शिक्षा में सुधार

परिषद् सभी राज्यों और संघ क्षेत्रों से यूनीसेफ सहायता प्राप्त विज्ञान परियोजना के कार्यान्वयन में निकट सहयोग से कार्य करती रही। प्राथमिक और मिडिल स्कूल स्तर पर पाठ्यक्रम और शैक्षणिक सामग्री और मार्गदर्शी चरण के प्रयोगात्मक स्कूलों के मिडिल स्तर के तृतीय वर्ष के लिए विज्ञान किट उपलब्ध करके सहयोग प्रदान किया गया। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली और जम्मू तथा कश्मीर जैसे हिन्दी-भाषी राज्यों को पाठ्यपुस्तकों के हिन्दी भाषान्तर प्रदान किए गए। 150 भौतिकी किट नं० 1 और 2 और 775 रसायन विज्ञान छात्र किट पाँच राज्यों को सप्लाई किए गए। इतने ही किट दूसरे राज्यों को सप्लाई करने के लिए तैयार हैं।

परिषद् ने अहमदाबाद स्थित राज्य शिक्षा संस्थान के विज्ञान एकक को कक्षा III की विज्ञान पाठ्यपुस्तक के संशोधन में सहायता की ; अंडमान और निकोबार द्वीप समूहों को विज्ञान में अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम और आधुनिक गणित क्रम-विन्यास और विषय-सूची पर एक पाठ्यक्रम आयोजित करने में मार्गदर्शन किया और सहायता की, अरुणाचल प्रदेश को यूनीसेफ सहायता प्राप्त विज्ञान शिक्षण परियोजना के लिए अध्यापक प्रशिक्षित करने के लिए साधन अधिकारियों की सेवाएँ प्रदान की, चण्डीगढ़ प्रशासन को विज्ञान में अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चालू करने में सहायता की, पटियाला के राज्य शिक्षा कालेज को मिडिल स्कूल विज्ञान सामग्री के प्रयोग में और इलाहाबाद के राज्य शिक्षा संस्थान को माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के प्रशिक्षण में सहायता की, दिल्ली नगर निगम के शिक्षा विभाग को यूनीसेफ-सहायता प्राप्त विज्ञान शिक्षण परियोजना में कार्य कर रहे अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित करने में सहायता की और दिल्ली नगर निगम के

विज्ञान केंद्रों के अधिकारियों के लिए अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रमों और सम्मेलनों का आयोजन किया

2. सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी की शिक्षा में सुधार

हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और राजस्थान राज्यों में पाठ्यक्रम विकास के सम्बन्ध में साधन व्यक्तियों के लिए तीन प्रशिक्षण एवं अभिविन्यास कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। राज्यों को सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के संशोधन में सहायता दी गई। उत्तर प्रदेश के राज्य शिक्षा संस्थान द्वारा तैयार की गई कक्षा 3 की सामाजिक-अध्ययन-पाठ्यपुस्तक-पांडुलिपि की समीक्षा की गई। परिषद् ने उत्तर प्रदेश के राज्य शिक्षा संस्थान को कक्षा 6, 7 और 8 की इतिहास, भूगोल और नागरिकशास्त्र विषयों की हस्तपुस्तिकाएं तैयार करने में सहयोग दिया। दिल्ली के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए समाज विज्ञान पाठ्यक्रम विकसित करने में सहायता की गई। अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह के प्रशासन को संरचनात्मक विधि द्वारा अंग्रेजी पढ़ने के कार्यक्रम आयोजित करने में सहायता दी गई।

3. अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम का विकास

परिषद् ने जम्मू तथा कश्मीर के राज्य शिक्षा संस्थान को प्राथमिक स्तर के अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के संशोधन में आवश्यक सहायता दी। गुजरात और असम राज्यों के प्रशिक्षण कालेजों और विश्वविद्यालय के शिक्षा विभागों के अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए आयोजित अध्यापक शिक्षा सुधार कार्यक्रमों को सुधारने में सहायता दी गई।

4. कार्य अनुभव पाठ्यक्रम का विकास

परिषद् ने केन्द्रीय विद्यालय संगठन का मद्रास, खड़गपुर, दिल्ली और अजमेर में कार्य अनुभव पर चार ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रमों के आयोजन में आवश्यक मार्गदर्शन किया। सातवीं कक्षा के लिए कार्य अनुभव में पाठ्यक्रम और पाठ्यक्रम दर्शिकाएँ तैयार करने में और आंध्र प्रदेश के स्थानीय स्कूलों की 5 से 10 तक की कक्षाओं के लिए कार्य अनुभव में पाठ्यक्रम तैयार करने में आन्ध्र प्रदेश राज्य की सहायता की। 10 वर्षीय स्कूल पद्धति के लिए कार्य अनुभव पाठ्यक्रम का प्रारूप भी विकसित किया गया।

5. श्रव्य-दृश्य शिक्षा

परिषद् ने विभिन्न राज्यों की संस्थाओं में अपने विशेषज्ञों को भेजकर श्रव्य दृश्य शिक्षा में कर्मशालाएँ और सम्मेलन आयोजित करने में सहायता की :—

1. राजकीय अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान, वारंगल
2. श्रव्य-दृश्य शिक्षा संस्था, इलाहाबाद
3. विस्तार सेवा विभाग, राजकीय प्रशिक्षण कालेज, जलन्धर
4. विस्तार सेवा विभाग, महिला देव समाज प्रशिक्षण कालेज, फीरोजपुर
5. मेरठ कालेज, मेरठ

6. परीक्षा सुधार

लक्षणात्मक परीक्षण और सुधारात्मक कार्य के संबंध में प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन में राजस्थान के राज्य शिक्षा संस्थान की सहायता की गई। राज्य में उदयपुर, बीकानेर और अजमेर स्थानों पर तीन क्षेत्रीय कर्मशालाओं का आयोजन किया गया। लगभग 100 साधन अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया और बहुत सी सामग्री विकसित की गई।

7. व्यावसायिक परामर्शदाताओं के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

परिषद् ने राज्य शिक्षा संस्थान, दिल्ली और दिल्ली के केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के विस्तार सेवा विभाग को व्यावसायिक परामर्श दाताओं के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजन करने में सहायता की।

8. कार्यक्रमित अधिगम पाठ्यक्रम

राजस्थान के राज्य शिक्षा संस्थान को जुलाई और अक्तूबर 1972 में कार्यक्रमिक अधिगम पाठ्यक्रमों के आयोजन में सहायता दी गई। पंजाब शिक्षा निदेशालय के अधिकारियों और हरियाणा के राज्य शिक्षा संस्थान के कर्मचारियों को कार्यक्रमिक अधिगम तरीकों द्वारा गणित, सामान्य विज्ञान और हिन्दी इकाइयाँ विकसित करने में सहायता की गई।

9. शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन

महाराष्ट्र सरकार की व्यावसायिक मार्गदर्शन डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाने में सहायता की गई। अनेक विश्वविद्यालयों को छात्र कल्याण सेवाओं के लिए परामर्श सेवाएँ उपलब्ध की गईं।

दिल्ली राज्य शिक्षा संस्थान को दिल्ली के स्कूलों में मार्गदर्शन सेवाएँ सफलता पूर्वक चलाने में सहायता दी गई। मार्गदर्शन पर कुछ फिल्में भी स्कूलों में दिखाई गईं और मार्गदर्शन अधिकारियों के लिए सम्मेलन और कर्मशालाओं का आयोजन भी किया गया।

10. पंजाब और मैसूर में शैक्षिक सर्वेक्षण

पंजाब राज्य शिक्षा विभाग की राज्य में शैक्षिक सर्वेक्षण करने और शिक्षा के लिए जिला शिक्षा विकास योजनाएँ तैयार करने में सहायता की गई । मैसूर राज्य शिक्षा विभाग के सर्वेक्षण एकक को एक प्रश्नमाला विकसित करने और राज्य में उपलब्ध स्कूली सुविधाओं का व्यापक सर्वेक्षण करने में सहायता दी गई ।

11. कार्यक्षेत्रीय संबंधों द्वारा राज्यों से सम्पर्क

राज्यों में परिषद् के क्षेत्र सलाहकारों ने क्षेत्राधिकार के अधिक से अधिक विस्तार सेवा केन्द्रों का निरीक्षण कार्य जारी रखा और उनकी प्रशासनिक तथा शैक्षणिक समस्याओं के हल के लिए अपेक्षित सहायता दी । क्षेत्र सलाहकारों ने राज्य अधिकारियों को राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों और क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में चालू कार्यक्रमों से अवगत कराया । उन्होंने विज्ञान शिक्षण की यूनेस्को-यूनीसेफ सहायता प्राप्त मार्गदर्शन परियोजना के कार्यन्वयन में भी राज्य सरकारों की सहायता की ।

इस संपर्क के मुख्य कार्य कलाप में परिषद् के क्षेत्र सलाहकारों द्वारा विस्तार सेवा केन्द्रों के अवैतनिक निदेशकों और समन्वयकों और शिक्षा विभागों के दूसरे अधिकारियों के लिए राज्य स्तरीय सम्मेलनों का आयोजन था । लगभग सभी क्षेत्र सलाहकार विस्तार सेवा विभागों का कार्य भार राज्य अधिकारियों को सौंपने में सफल हुए । क्षेत्र सलाहकारों ने राज्य शिक्षा संस्थान के निदेशकों, राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान के निदेशकों, राज्य मूल्यांकन एककों और मार्गदर्शन ब्यूरो के अध्यक्षों के साथ अपने संपर्क बनाए रखे । उन्होंने राज्यों के विस्तार सेवा केन्द्रों में परिषद् के पठन सम्मेलन और प्रायोगिक परियोजना के कार्यक्रमों की सफलता के लिए समन्वयकों का मौके पर मार्गदर्शन किया ।

परिशिष्ट 18

शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय के साथ सहयोग

प्रतिवेदन वर्ष में परिषद्, शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय के काम से सक्रिय रूप से सम्बद्ध रही। ऐसे सभी कार्यों में परिषद् के योगदान की संक्षिप्त रिपोर्ट नीचे दी जा रही है :

1. राष्ट्रीय एकीकरण परियोजना

राष्ट्रीय एकीकरण परियोजना का जो कार्यभार 1970-71 में शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को सौंपा था उसके कार्यान्वयन का कार्य परिषद् ने चालू रखा। इस परियोजना का उद्देश्य छात्रों, अध्यापकों, स्कूल के प्रधानाध्यापकों और केवल अध्यापकों के अन्तर-राज्य शिविरों का आयोजन करना, कुछ चुने स्कूलों में "हमारा भारत परियोजना" चलाना तथा छात्रों और अध्यापकों के लिए विषयानुकूल उपयुक्त सामग्री तैयार करके उसका उत्पादन करके विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों द्वारा छात्रों और अध्यापकों में राष्ट्रीय एकता पैदा करना है। इस परियोजना के अधीन 1972-73 में किए गए कार्य की विस्तृत रिपोर्ट परिशिष्ट 8 में दी जा चुकी है।

2. जनसंख्या शिक्षा

शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय के कहने पर 1970-71 में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के सामाजिक विज्ञान और मानविकी विभाग में एक विशेष एकक की स्थापना की गई थी। इस एकक को जनसंख्या शिक्षा पर उपयुक्त कार्यक्रम बनाकर उसे स्कूल स्तर पर कार्यान्वित करने का कार्यभार सौंपा गया। इस एकक ने इस विषय पर विभिन्न प्रकार का साहित्य तैयार कर लिया है और राज्यों को उनके स्कूल पाठ्यक्रम में जनसंख्या शिक्षा प्रारम्भ करने में सहायता दी हैं। इस एकक

द्वारा 1972-73 में किए गए मुख्य कार्यों का ब्यौरा परिशिष्ट 9 में दिया जा चुका है।

3. 10+2 स्कूल पद्धति के लिए पाठ्यक्रम का विकास

शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय में 1972-73 ने पाँचवी पंच-वर्षीय योजना के दौरान सारे राज्यों में प्रारम्भ किए जाने वाले प्रस्तावित 10+2 स्कूल ढाँचे के लिए संयुक्त एवं समन्वित पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए परिषद् से अनुरोध किया था। तदनुसार पाठ्यक्रम का प्रारूप तैयार किया गया। पाठ्यक्रम भाषा, सामाजिक अध्ययन, विज्ञान, गणित, शारीरिक विज्ञान, कला और कार्य-अनुभव शिक्षण पर विशेष महत्व देता है और उसमें अनेक स्कूल कार्यक्रमों द्वारा जनसंख्या शिक्षा, राष्ट्रीय एकीकरण और मूल्यों के विकास जैसे विचारों का भी समावेश किया गया है। छात्राओं और जनजातीय बच्चों के लिए पाठ्यक्रम में संशोधन के सुझाव भी दिए गए।

4. बाल साहित्य के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता

बाल साहित्य के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता योजना शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय ने वर्ष 1970-71 से कार्यान्वयन के लिए परिषद् को सौंपी थी। परिषद ने 16वीं प्रतियोगिता 1971-72 में और 17वीं प्रतियोगिता 1972-73 में आयोजित की। इन दोनों प्रतियोगिताओं में दो पुरस्कार श्रेष्ठ हिन्दी पुस्तक को और एक-एक पुरस्कार प्रत्येक प्रादेशिक भाषा की श्रेष्ठ पुस्तक को दिया गया।

5. राष्ट्रीय स्कूल पाठ्यपुस्तक बोर्ड

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के पाठ्यपुस्तक विभाग ने प्रतिवेदन वर्ष में राष्ट्रीय स्कूल पाठ्यपुस्तक बोर्ड के शैक्षणिक सचिवालय के रूप में सेवा कार्य जारी रखा। बोर्ड की हुई प्रथम दो बैठकों की सिफारिशों पर अमल करने का कार्य किया गया। बोड की तीसरी बैठक 22 जुलाई 1972 को नई दिल्ली में हुई। यद्यपि एजेंडा की कार्य सूची काफी बड़ी थी पर बैठक प्रचंड कार्यक्रम की प्रगति और अल्पसंख्यक भाषाओं की पाठ्यपुस्तकों की स्थिति पर ही विचार विमर्श कर सकी।

6. ग्रामीण प्रतिभा खोज योजना।

शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय ने माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पुरस्कार के लिए ग्रामीण क्षेत्रों से प्रतिभाशाली छात्रों के चयन के लिए राज्यों के शैक्षणिक मार्गदर्शन का उत्तरदायित्व परिषद् को सौंपा था। इस जिम्मेदारी को सम्भालने के लिए गत वर्ष परिषद् में एक विशेष एकक की प्रस्तावित स्थापना के

अनुसार उसकी स्थापना न हो सकी। फिर भी परीक्षा सुधार कार्यक्रम से प्राप्त अनुभव के आधार पर परिषद् तदर्थ प्रबन्धों से राज्यों का शैक्षणिक मार्गदर्शन करती रही।

7. पाठ्यपुस्तक मूल्यांकन का प्रचंड कार्यक्रम

1970-71 में शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय ने परिषद् को यह जिम्मेदारी सौंपी कि वह राष्ट्रीय हितों को आघात पहुँचाने वाली सामग्री का पता लगाने की दृष्टि से स्कूल पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन का एक प्रचंड कार्यक्रम चलाए। प्रतिवेदन वर्ष में राज्यों की अल्पसंख्यक भाषाओं में लिखी गई स्कूल पाठ्यपुस्तकों और गैर सरकारी स्कूलों में प्रयोग की जा रही पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन का निश्चय किया गया।

8. भारत की स्वाधीनता की 25वीं वर्षगांठ का समारोह

1972-73 में भारत सरकार ने भारत की स्वाधीनता की 25वीं वर्षगांठ मनाने का निश्चय किया। शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय ने निम्नलिखित योजनाएँ कार्यान्वियन के लिए परिषद् को सौंपी :

1. "अपना देश जानो" परियोजना,

2. परिषद् के दो प्रकाशनों "दि कांस्टीट्यूशन ऑफ इंडिया फॉर दि यंग रीडर्स" और "सिम्बल्स ऑफ यूनिटी एंड फ्रीडम" का जयंती स्कूलों में वितरण,

3. ग्रामीण प्राथमिक स्कूलों की समुन्नति के लिए सामग्री तैयार करना :

4. गत 25 वर्षों में देश के विभिन्न भागों में हुई प्रगति को दर्शाते हुए चित्रमय पैकजों की छपाई।

इन योजनाओं का ब्यौरा और इनके कार्यान्वियन में हुई प्रगति का विवरण मुख्य रिपोर्ट में दिया गया है।

9. प्रकीर्ण

प्रतिवेदन वर्ष में शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय से प्राप्त अनेक संदर्भों पर परिषद् ने टिप्पणी/परामर्श उपलब्ध किया। इसके अतिरिक्त परिषद् ने अपने से संबंधित सभी द्विपार्श्वीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के तैयार करने और कार्यान्वियन में मंत्रालय को सहयोग दिया है।

परिशिष्ट 19

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

प्रतिवेदन वर्ष में परिषद् को यूनेस्को, यूनीसेफ और यू० एन० डी० पी० जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा सहायता मिलती रही। परिषद् के बहुत से कर्मचारी प्रतिनिधि मंडलों के सदस्य के रूप में अथवा सम्मेलन में भाग लेने के लिए अथवा विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं के अंतर्गत उच्च स्तरीय प्रशिक्षण के लिए विदेश गए। बहुत से विदेशी विशेषज्ञों द्वारा परिषद् तथा इसकी संस्थाओं का निरीक्षण किया गया। इनमें से कुछ ने परिषद् में परामर्शदाताओं के रूप में कार्य किया जबकि शेष ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस क्षेत्र में 1972-73 में हुए क्रियाकलापों का विस्तृत विवरण नीचे दिए परिच्छेदों में दिया गया है।

1. विदेशों से प्राप्त उपकरण और विशेषज्ञता

1.01 यूनेस्को-सहायता प्राप्त माध्यमिक विज्ञान शिक्षण परियोजना के अंतर्गत तीन यूनेस्को विशेषज्ञों, श्री ओ० एच० वाकर, श्री एल तहोमी और श्री जे० एच० स्ट्रासन ने परिषद् की अनुदेशन सामग्री, श्रव्य-दृश्य उपकरण और गणित और विज्ञान में श्रव्य-दृश्य साधनों को विकसित करने में सहायता करने का कार्य जारी रखा। श्री वाकर ने विज्ञान के प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए एक हस्तपुस्तिका विकसित की जब कि सर्वश्री एल तहोमी और स्ट्रासन ने गणित और विज्ञान क्षेत्रों में मूल्यांकन और विज्ञान फिल्मों के विकास में परिषद् की सहायता की। यूनेस्को विशेषज्ञों ने प्रत्येक विज्ञान किट के तकनीकी चित्रों के 250 जोड़े तैयार करने और विज्ञान किटों को सुधारने में भी परिषद् की सहायता की।

1.02 यूनेस्को ने प्रमुख तकनीकी सलाहकार, श्री एस० प्लेनल को भारत सरकार के शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् को शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र की स्थापना में सलाह देने के लिए भेजा।

1.03 यूनेस्को सहायता प्राप्त माध्यमिक विज्ञान शिक्षण परियोजना के

अंतर्गत यू० एन० डी० पी० से 6,656 डालर और 7,879 डी० एम० मूल्य के उपकरण प्राप्त हुए ।

1.04 यूनीसेफ सहायता प्राप्त स्कूल स्तर पर विज्ञान शिक्षण सुधार परियोजना के अंतर्गत उपकरणों से भरे 132 जहाज मद्रास, बम्बई और कलकत्ता बन्दरगाहों पर आए । 1,83,260 डालर मूल्य की पुस्तकालय की पुस्तकें देश के 579 चुने हुए अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में वितरण के लिए भी प्राप्त हुईं । इस परियोजना के अन्तर्गत विज्ञान पाठ्यपुस्तकों की छपाई के लिए राज्यों को बाँटने के लिए 3,000 मीट्रिक टन कागज भी प्राप्त हुआ ।

2. अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान परियोजनाओं में परिषद् का सहयोग

2.01 परिषद् ने शैक्षणिक उपलब्धि के मूल्यांकन के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्था की अनुसंधान परियोजना में 1972-73 में सहयोग जारी रखा । भारत सहित 22 देश इस परियोजना में भाग ले रहे हैं । इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य निवेश सम्बन्धी विविधताओं को जैसे विद्यालय का संगठन तथा ढाँचा और उसकी भौतिक सुविधाएँ, शिक्षकों की योग्यताएँ, अनुभव अभिप्रेरणा और आचार और विद्यार्थियों की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि का सम्बन्ध तथा विद्यालय के कुछ विषयों में उनकी उपलब्धि से सम्बन्धित करना है । प्रतिवेदन वर्ष में अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र द्वारा प्राप्त कम्प्यूटरी तथ्य सामग्री का विश्लेषण किया गया और परियोजना रिपोर्ट लिखने का कार्य प्रारम्भ किया गया ।

2.02 कई वर्ष पूर्व विश्व मस्तिष्क स्वास्थ्य केन्द्र के सहयोग से आरम्भ की गई "स्नातकोत्तर छात्रों के व्यक्तित्व, प्रवृत्ति, मूल्य और स्थिति के अध्ययन" की परियोजना के लिए 1972-73 में भारतीय आंकड़ों के परिणाम प्राप्त हो गए हैं । इन परिणामों पर टिप्पणियाँ तैयार करके विश्व मस्तिष्क स्वास्थ्य केन्द्र को भेज दी गई हैं ।

3. विदेशी प्रशिक्षकों के लिए परिषद् के प्रशिक्षण कार्यक्रम

3.01 यूसेड थर्ड कंडी प्रोग्राम के अन्तर्गत आए पाँच अफगानियों को डेढ़ महीने की अवधि के लिए 1 सितम्बर 1972 से प्रारम्भ होने वाला प्रशिक्षण राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा दिया गया ।

3.02 परिषद् ने लड़कियों और महिलाओं को शिक्षा के लिए समान प्रवेश की एक प्रयोगात्मक परियोजना के अन्तर्गत यूनेस्को और नेपाल की शाही सरकार की दो मनोनीत महिलाओं, श्रीमती गुलाब मैया और श्रीमती शारदा वैद्य के लिए 15 जनवरी 1973 से प्रारम्भ भारत में एक 3 महीने की अवधि का प्रशिक्षण और अध्ययन भ्रमण का आयोजन किया ।

4. शिक्षावृत्ति कार्यक्रमों के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों/सेमीनारों तथा उच्च प्रशिक्षणों में भाग लेने के लिए परिषद् के अधिकारियों का विदेश गमन

4.01 डा० मोहनचन्द्र पन्त, अध्यक्ष, विज्ञान विभाग ने 29 मई से 10 जून 1972 तक बैंकाक में आयोजित बच्चों के लिए विज्ञान, गणित धारणाओं के विकास पर एशियाई विशेषज्ञों के सम्मेलन में भाग लिया ।

4.02 श्री टी० एस० मेहता, प्रभारी अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी विभाग, को यूनेस्को द्वारा बैंकाक में 23 मई से 8 जून 1972 तक पूर्व प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए जनसंख्या शिक्षा की साधन-पुस्तक की विषय वस्तु व उसके दूसरे दृष्टिकोणों पर आयोजित बैठक में परामर्शदाता के रूप में भाग लेने के लिए भेजा गया ।

4.03 डा (श्रीमती) पैरिन एच० मेहता, अध्यक्ष, शैक्षिक मनोविज्ञान तथा शिक्षा आधार विभाग ने 23 से 28 नवम्बर 1972 तक फ्रेंकफ़र्ट में हुई आई० ई० ए० परिषद् की बैठक में भाग लिया ।

4.04 डा० जी० एन० कौल, क्षेत्र सलाहकार, ने "मनुष्यवर्ग स्कूलों के मार्ग" पर जेनिवा में 3 से 7 दिसम्बर 1972 को हुई मार्गदर्शी समिति में भाग लिया

4.05 क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, अजमेर के रीडर श्री एस० डी० रोका, पूर्व-प्राथमिक तथा प्राथमिक शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अनुसंधान सहायक श्री एन० के० जंगीरा (जो विदेश सेवा पर सिक्किम सरकार के पैलांग के अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान के प्रधानाध्यापक के रूप में कार्य कर रहे हैं); और अध्यापक शिक्षा विभाग की प्राध्यापिका श्रीमती कमला अरोड़ा ने बैंकाक में 21 अगस्त से 9 सितम्बर 1972 तक अधिगम और शैक्षिक पद्धतियों पर हुए एशियाई सेमीनार में भाग लिया ।

4.06 प्रकाशन एकक के सम्पादक श्री टी० एस० शर्मा ने शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय के निर्यात वृद्धि एकक की ओर से अंकारा में 13 से 16 नवम्बर 1972 तक आयोजित बच्चों की पुस्तकों की अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में भाग लिया ।

4.07 अध्यापन साधन विभाग के प्राध्यापक श्री पी० एन० कोहली ने यू० एन० डी० पी० द्वारा मलेशिया में 27 नवम्बर से 23 दिसम्बर 1972 तक फिल्म में क्रमिक विकास पर आयोजित पाठ्यक्रम में भाग लिया ।

4.08 प्रकाशन एकक के प्रभारी अध्यक्ष श्री निरंजन चक्रवर्ती को 1971-73 के भारत जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य भेजा गया ।

4.09 विज्ञान शिक्षा विभाग के प्राध्यापक श्री गोपा बन्धु गुरु ने यूनेस्को द्वारा बैंकाक में 5 से 16 फरवरी 1973 तक मानवीय जनसंख्या जीवविषयक साधन पुस्तक पर आयोजित वर्कशाप में भाग लिया ।

4.10 पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक शिक्षा विभाग के प्राध्यापक श्री आर० के० गुप्त को 1972-73 की राष्ट्रमण्डल शिक्षा अध्ययन फैलोशिप प्रदान की गई और उन्होंने 27 सितम्बर 1972 को इंग्लैण्ड के लिए प्रस्थान किया।

4.11 दिल्ली के केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के प्रधानाचार्य श्री पी० के० राय, 1972-74 के भारत रूस सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम की मद नं० 130 के अन्तर्गत 27 मार्च 1973 से दो सप्ताह के लिए अध्यापक शिक्षा पर भाषण देने रूस गए।

4.12 पाठ्यपुस्तक विभाग की प्राध्यापिका कुमारी इन्दिरा कुलश्रेष्ठ 20 सितम्बर 1972 से सिक्किम दरबार में पाठ्यपुस्तक परियोजनाओं की सलाहकार के रूप में प्रतिनियुक्ति पर गईं।

5. परिषद के वे अधिकारी जो विशेष कार्य पर विदेश गए

5.01 परिषद् में क्षेत्र सलाहकार डा० ए० रऊफ यूनेस्को में विशेष सेवा पर रहे और काबुल की अध्यापक शिक्षा अकादमी में शिक्षण के नियमों के विशेषज्ञ के रूप में कार्य करते रहे।

5.02 केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली में प्राध्यापक श्री एस० एस० शर्मा, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के विशेष निधि उत्पादन के अन्तर्गत अफगानिस्तान में अध्यापक प्रशिक्षण में विशेषज्ञ के रूप में कार्य करते हुए यूनेस्को में विदेश सेवा पर रहे।

5.03 डा० (श्रीमती) बी० राजू, रीडर, केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली, यूनेस्को में शैक्षिक योजना और प्रशासन के वरिष्ठ प्राध्यापक के रूप में विश्वविद्यालय कालेज, नौरोबी (कीन्या) में प्रतिनियुक्ति पर बनी रहीं।

5.04 पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक शिक्षा विभाग में वरिष्ठ अनुसंधान सहायक श्री एन० के० जंगीरा सिक्किम सरकार के पैलांग के अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान के प्रिंसिपल के रूप में प्रतिनियुक्ति पर कार्य करते रहे।

5.05 पाठ्यपुस्तक विभाग के अध्यक्ष डा० रवीन्द्र ह० देव विदेश सेवा शर्तों पर वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी के रूप में दो वर्ष की अवधि के लिए 15 मार्च 1972 से हैम्बर्ग स्थित यूनेस्को शिक्षा संस्थान में चले गए।

5.06 विज्ञान शिक्षा विभाग के अध्यक्ष डा० मोहनचन्द्र पंत विदेश सेवा शर्तों पर काबुल के विज्ञान पाठ्यक्रम के वरिष्ठ विशेषज्ञ के रूप में एक वर्ष की अवधि के लिए 14 अक्तूबर 1972 को यूनेस्को कार्य पर चले गए।

6. विदेशी विशेषज्ञ व सम्मानीय व्यक्ति जो परिषद् में पधारे

बहुत से विदेशी विशेषज्ञों और सम्मानीय व्यक्तियों ने 1972-73 के दौरान

परिषद् का निरीक्षण किया। इन विशिष्ट व्यक्तियों के निरीक्षणों का ब्यौरा नीचे दिया गया है।

6.01 मलेशिया के शिक्षा मन्त्रालय (कुग्रालालम्पुर) के तीन सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का निरीक्षण किया और परिषद् के निदेशक और पाठ्यक्रम विकास से सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों से विचार-विमर्श किया।

6.02 अमरीका के स्कूल और कालेज अध्यापकों के तीन दलों ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का जुलाई 1972 में निरीक्षण किया। उन्होंने विज्ञान शिक्षा विभाग और सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी विभाग द्वारा विकसित पाठ्यक्रमीय सामग्री में बहुत रुचि दिखाई। उनके आगमन का नियोजन भारत में संयुक्त राज्य शैक्षिक प्रतिष्ठान द्वारा किया गया था।

6.03 डा० की हियाँग ग्रोह, निदेशक, शिक्षा संस्थान, यॉन्सी विश्वविद्यालय, सियाल, कोरिया, ने 21 जुलाई 1972 को परिषद् का निरीक्षण किया। और विज्ञान शिक्षा विभाग के कार्यक्रमों और उसके द्वारा विकसित सामग्री पर विचार विमर्श किया।

6.04 श्री के० सातो, शैक्षिक योजना में यूनेस्को विशेषज्ञ, एशियाई क्षेत्रीय केन्द्र, बैंकाक, ने विज्ञान शिक्षा विभाग का निरीक्षण किया। उन्होंने भारत में शिक्षा ढांचे के सम्बन्ध में विचार-विमर्श किया।

6.05 बैंकाक में एशिया में शिक्षा के लिए यूनेस्को क्षेत्रीय दफ्तर में शैक्षिक योजना और सांख्यिकी में सह-विशेषज्ञ श्री के० जैनसेन ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का निरीक्षण किया और परिषद् के अधिकारियों से विचार-विमर्श किया। उनके विचार-विमर्श के विषयों में शिक्षा के वित्त व लागत और शैक्षिक बरबादी को घटाने की अभियान परियोजनाओं के अध्ययन सम्मिलित थे।

6.06 नई दिल्ली के एशियायी शैक्षिक आयोजना और प्रशासन संस्थान द्वारा शैक्षिक योजना-निर्माताओं और प्रशासकों के लिए आयोजित 18वें प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग लेने वालों ने 5 अगस्त 1972 को परिषद् का निरीक्षण किया। उन्होंने विज्ञान शिक्षा विभाग (केन्द्रीय विज्ञान वर्कशाप सहित), भाषा प्रयोगशाला और पाठ्यसामग्री केन्द्र का निरीक्षण किया। उन्होंने संबंधित विभाग-अध्यक्षों से विचार-विमर्श भी किया।

6.07 गत वर्ष ग्रैना, स्वेडन, में पाठ्यक्रम विकास पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लेने वालों द्वारा की गई अनुवर्ती कार्रवाई के संबंध में विचार-विमर्श करने यूनेस्को के श्री लेनार्ट केरवाल परिषद् में सितम्बर 1972 में आए।

6.08 एशिया में शिक्षा के यूनेस्को क्षेत्रीय दफ्तर, बैंकाक, के निदेशक के नेतृत्व

में एक यूनेस्को दल ने सितम्बर 1972 में परिषद् का निरीक्षण किया और बैंकाक में एशिया में शिक्षा के यूनेस्को क्षेत्रीय दफ्तर में स्थापित किए जाने वाले शैक्षिक नूतन पद्धति के विकास के एशियाई केन्द्र और परिषद् के बीच सहयोग के साध्यों के सम्बन्ध में विचार-विमर्श किया।

6.09 परिषद् ने सितम्बर से नवम्बर 1972 तक उत्तरी लंदन के पोलीटेकनीक के प्रशिक्षण अध्ययन विभाग की श्रीमती मिलड्रेड मशेदार के आगमन का प्रबन्ध किया। वह तीन महीने की अवधि के भाषण और विचार-विमर्श कार्यक्रम के लिए आई हैं।

6.10 लंदन के समुद्र पार शैक्षिक विकास केन्द्र के उप-निदेशक श्री डैनिस चिस्मैन ने 19 अक्तूबर 1972 को परिषद् का निरीक्षण किया। उन्होंने यूनीसेफ सहायता प्राप्त विज्ञान शिक्षण परियोजना पर परिषद् के अधिकारियों से विचार-विमर्श किया। श्री चिस्मैन ने इंग्लैण्ड में विशेष अध्यापक शिक्षा परियोजना पर विकसित सामग्री परिषद् को उपलब्ध करने का आश्वासन दिया है जिसका प्रयोग नमूने के तौर पर प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर अध्यापक प्रशिक्षण के लिए हस्तपुस्तिकाएँ और नया पाठ्यक्रम तैयार करने में किया जा सकता है।

6.11 इंग्लैण्ड के 25 स्कूल अध्यापकों और कालेज प्राध्यापकों के एक दल ने भारत पाठ्यक्रम के निदेशक श्री सी० डी० राबर्ट के साथ परिषद् का निरीक्षण 7 नवम्बर 1972 को किया। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागाध्यक्षों के साथ विचार-विमर्श किया।

6.12 नेपाल सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा समिति के सदस्य-सचिव डा० मोहम्मद मोहसिन ने 6-12-1972 को परिषद् का निरीक्षण किया। उन्होंने परिषद् के निदेशक और विभागाध्यक्षों के साथ विचार-विमर्श किया। उन्होंने परिषद् के विज्ञान शिक्षा विभाग, केन्द्रीय विज्ञान वर्कशाप और भाषा प्रयोगशाला का भी निरीक्षण किया।

6.13 पैरिस में यूनेस्को के प्रधान कार्यालय के श्री रैने मोरेल ने परिषद् का निरीक्षण 19 दिसम्बर 1972 को किया और संयुक्त निदेशक और सचिव से परिषद् के जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रमों पर विचार-विमर्श किया।

6.14 बंगलादेश के महानिदेशक श्री नजरुल इस्लाम ने परिषद् का निरीक्षण 21 दिसम्बर 1972 को किया और परिषद् के निदेशक और अन्य अधिकारियों के साथ परिषद् की कार्य-प्रणाली और दूसरे शैक्षिक विषयों पर विचार-विमर्श किया।

6.15 भारत-बंगलादेश सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत एक 16 सदस्यीय बंगलादेश शिक्षा आयोग ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का 4 जनवरी 1973 को निरीक्षण किया। प्रतिनिधि मण्डल ने परिषद् के निदेशक और राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों के अध्यक्षों से विचार-

विमर्श किया। प्रतिनिधि मण्डल ने विज्ञान शिक्षा विभाग और केन्द्रीय विज्ञान वर्कशाप का भी निरीक्षण किया।

6.16 यूनाइटेड किंगडम की स्कूल परिषद् के अध्यक्ष डा० लिकन रॉल्फ्स ने परिषद् का 11 जनवरी 1973 को निरीक्षण किया और परिषद् के निदेशक और अधिकारियों से परिषद् की योजनाओं और कार्यक्रमों पर विचार-विमर्श किया। उन्होंने इंग्लैण्ड की स्कूल परिषद् के कार्यों के संबंध में भाषण दिया और उसके बाद उस पर विचार-विमर्श किया।

6.17 नफील्ड प्रतिष्ठान के श्री बटलर ने परिषद् के विज्ञान शिक्षा विभाग की केन्द्रीय विज्ञान वर्कशाप और अनुदेश सामग्री केन्द्र का निरीक्षण किया। उनको 'साइंस इज डूइंग' फिल्म और प्राथमिक किट की कुछ स्लाइडें भी दिखाई गईं।

6.18 राष्ट्रमंडल सचिवालय के शिक्षा डिवीजन के निदेशक डा० सेमुअल जे० कूके ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का निरीक्षण किया और परिषद् के निदेशक से विचार-विमर्श किया। उन्होंने विज्ञान शिक्षा विभाग और केन्द्रीय विज्ञान वर्कशाप का भी निरीक्षण किया।

6.19 विज्ञान उपकरण खरीदने के संबंध में एक, तीन सदस्यीय बंगलादेश मिशन विज्ञान शिक्षा विभाग में आया। प्रतिनिधि मण्डल को स्कूलों के लिए विज्ञान उपकरणों की विभिन्न मदों, उनकी उपलब्धता और खरीदारी के सम्बन्ध में सूचनाएँ एकत्रित करने में सहायता दी गई।

6.20 विज्ञान उपकरण के यूनेस्को विशेषज्ञ श्री मांटगोमरी ने विज्ञान शिक्षा विभाग की केन्द्रीय विज्ञान वर्कशाप और अनुदेश सामग्री केन्द्र का निरीक्षण किया। उन्होंने विज्ञान की धारणाओं की श्रेणियों को पेश करने के संबंध में कुछ लाभदायक सुझाव दिए।

6.21 ईरान की इम्पीरियल सरकार की शिक्षा मंत्री महामहिम श्रीमती पार्से ने उप-शिक्षा मंत्री और श्रव्य-दृश्य एवं दूरदर्शन के महानिदेशक के साथ परिषद् के अध्यापन [illegible]धन विभाग का 8 मार्च 1973 को निरीक्षण किया।

परिशिष्ट-20

प्रकाशन 1972-73

पाठ्यपुस्तकें

1. हिन्दी पुस्तक II (पुनर्मुद्रण)
2. फिजिक्स पार्ट I (पुनर्मुद्रण)
3. ज्योमेट्री पार्ट I (पुनर्मुद्रण)
4. भारत और संसार (पुनर्मुद्रण)
5. बायलॉजी पार्ट I (पुनर्मुद्रण)
6. बायलॉजी पार्ट II (पुनर्मुद्रण)
7. अलजबरा फॉर सेकैण्ड्री स्कूल्स पार्ट I (पुनर्मुद्रण)
8. अरिथमेटिक-अलजबरा पार्ट I (पुनर्मुद्रण)
9. अरिथमेटिक-अलजबरा पार्ट II (पुनर्मुद्रण)
10. बायलॉजी फॉर सेकैंड्री स्कूल्स सैक्शन 2 (पुनर्मुद्रण)
11. इंडिया एंड दि वर्ल्ड (पुनर्मुद्रण)
12. फिजिक्स पार्ट II (पुनर्मुद्रण)
13. साइंस इज़ ड्राइंग फॉर क्लास III (पुनर्मुद्रण)
14. प्रयोगात्मक भूगोल
15. फिजिकल ज्योग्रफी (पुनर्मुद्रण)
16. हिन्दी पुस्तक IV (पुनर्मुद्रण)
17. फिजिक्स पार्ट III (पुनर्मुद्रण)
18. फिजिक्स पार्ट I फॉर हायर सेकैंड्री स्कूल्स
19. इंगलिश रीडर बुक I स्पेशल सीरीज (पुनर्मुद्रण)
20. बायलॉजी पार्ट III (पुनर्मुद्रण)
21. रानी मदन अमर (पुनर्मुद्रण)
22. इंगलिश रीडर बुक V स्पेशल सीरीज (पुनर्मुद्रण)
23. अरिथमेटिक-अलजबरा पार्ट III (पुनर्मुद्रण)
24. ज्योमेट्री पार्ट III (पुनर्मुद्रण)

25. इंगलिश रीडर बुक II स्पेशल सीरीज (पुनर्मुद्रण)
26. कैमिस्ट्री पार्ट I (पुनर्मुद्रण)
27. इंगलिश रीडर बुक III (स्पेशल सीरीज)
28. लैट्स लर्न इंगलिश बुक I (पुनर्मुद्रण)
29. काव्य-संकलन (पुनर्मुद्रण)
30. लैट्स लर्न इंगलिश बुक III (स्पेशल सीरीज)
31. लैट्स लर्न इंगलिश बुक II (स्पेशल सीरीज)
32. इंडिपेंडेंट इंडिया
33. लोकल गवर्नमैंट (पुनर्मुद्रण)
34. अफ्रीका एंड एशिया (पुनर्मुद्रण)
35. आवर कंट्री इंडिया (पुनर्मुद्रण)
36. हमारा देश भारत भाग I (पुनर्मुद्रण)
37. जीव-विज्ञान भाग I (पुनर्मुद्रण)
38. ज्योमेट्री पार्ट II (संशोधित संस्करण)
39. इनसाइट इंटू मैथमेटिक्स बुक 1 (पुनर्मुद्रण)
40. प्लेन ट्रिगोनोमेट्री
41. आवर कंट्री इंडिया बुक II (पुनर्मुद्रण)
42. गद्य-संकलन (पुनर्मुद्रण)
43. भौतिकी भाग III (संशोधित संस्करण)
44. रसायन विज्ञान (संशोधित संस्करण)
45. बायलॉजी फॉर सेकैंड्री स्कूल्स सैक्शन्स IV एंड V (पुनर्मुद्रण)
46. इंगलिश रीडर बुक II (जनरल सीरीज)
47. जीव-विज्ञान भाग III (संशोधित संस्करण)
48. योरोप एंड इंडिया
49. भौतिकी भाग 1 (पुनर्मुद्रण)
50. इनसाइट इंटू मैथमेटिक्स बुक II
51. जीव विज्ञान सैक्शन III (पुनर्मुद्रण)
52. साइंस इज डूइंग फॉर क्लास V
53. चलो पाठशाला चलें (पुनर्मुद्रण)
54. अरिथमेटिक अलजबरा पार्ट II (पुनर्मुद्रण)
55. इंगलिश रीडर बुक IV (स्पेशल सीरीज)
56. ज्योमेट्री पार्ट 1 (पुनर्मुद्रण)
57. इंगलिश रीडर बुक III (जनरल सीरीज)
58. आओ हम पढ़ें (पुनर्मुद्रण)

अध्यापक दर्शिकाएं और अभ्यास पुस्तकें

59. अध्यापक दर्शिका—हमारा देश भारत भाग 1

60. टीचर्स गाइड फॉर इंगलिश रीडर बुक II (स्पेशल सीरीज)
61. वर्कबुक फॉर इंगलिश रीडर बुक 1 (स्पेशल सीरीज)
62. अभ्यास पुस्तिका—हिन्दी पुस्तक V (पुनर्मुद्रण)
63. वर्कबुक फॉर लैट्स लर्न इंगलिश बुक 1 स्पेशल सीरीज (पुनर्मुद्रण)
64. अभ्यास पुस्तिका—हिन्दी पुस्तक III (पुनर्मुद्रण)
65. अभ्यास पुस्तिका—हिन्दी पुस्तक IV (पुनर्मुद्रण)
66. वर्कबुक फॉर इंगलिश रीडर बुक II (स्पेशल सीरीज)
67. अभ्यास पुस्तिका—हिन्दी पुस्तक 1 (पुनर्मुद्रण)
68. अभ्यास पुस्तिका—हिन्दी प्राइमर (पुनर्मुद्रण)
69. वर्कबुक फॉर इंगलिश रीडर बुक III (स्पेशल सीरीज)
70. वर्कबुक फॉर लैट्स लर्न इंगलिश बुक II (स्पेशल सीरीज)
71. वर्कबुक फॉर लैट्स लर्न इंगलिश बुक III
72. मेरी अभ्यास पुस्तिका—हिन्दी पुस्तक I (पुनर्मुद्रण)

पूरक पठन सामग्री

73. श्री अरविन्द (हिन्दी)
74. ए० बी० सी० ऑफ एटम
75. श्री रामकृष्ण (अंग्रेजी)
76. श्री अरविन्द (अंग्रेजी)
77. भारत भूमि और उसके निवासी
78. फास्टर एंड फारदर— दि स्टोरी ऑफ ट्रांस्पोर्ट

अन्य प्रकाशन

79. ए चिल्ड्रेन्स साइंस इन्जैक्शन प्रोग्राम (पुनर्मुद्रण)
80. रिसर्च इन क्लासरूम वाल्यूम III
81. इम्पैक्ट ऑफ बाइलिंगुयलिज्म ऑन दि प्रोग्रेस ऑफ चिल्ड्रेन इन प्राइमरी स्कूल्स इन रूरल एरियाज
82. करैन्ट प्राबलम्स इन एजुकेशन—यूथ सर्विसेस (हिन्दी)
83. कैटेलॉग आफ एन० सी० ई० आर० टी० (हिन्दी)
84. इलेविन्थ नेशनल सेमिनार ऑन एलीमैंट्री एजुकेशन
85. टीचिंग यूनिट्स इन सोशल स्टडीज फॉर हाई एण्ड हायर सेकैंड्री स्टेज
86. आडिट रिपोर्ट 1969-70
87. लेखा परीक्षा रिपोर्ट 1969-70
88. प्रोग्राम एंड एक्टीविटीज ऑफ बालवाड़ीज
89. प्रियरेशन एंड इवेलुएशन ऑफ टेक्स्ट बुक्स इन हिस्ट्री
90. टीचिंग यूनिट्स इन ज्याग्रफी फॉर मिडिल स्टेज वाल्यूम IV
91. रिपोर्ट ऑफ दि सेमिनार—साइंस इंस्टीट्यूट रिव्यू कमेटी सैटअप बाई एन० सी० ई० आर० टी०

92. टीचिंग यूनिट्स इन ज्याग्रफी फॉर मिडिल स्टेज वाल्यूम VI
93. एनुअल रिपोर्ट 1970-71
94. सेमिनार रीडिंग्स फोल्डर
95. टीचिंग रीडिंग—ए चैलेंज (पुनुर्मद्रण)
96. प्रीपरेशन एंड इवेलुएशन ऑफ सप्लीमेन्ट्री रीडर्स
97. पोर्ट्रेट ऑफ इंडियन सांइटिस्ट्स (हिन्दी एवं अंग्रेजी)
98. इफेक्टिवनेस ऑफ किंडर गारटेन एजुकेशन
99. हाऊ शुड टीचर्स बिहैव टु बी मॉडल फॉर देयर प्यूपिल्स
100. मैनुअल ऑफ इंसट्रक्शन्स फॉर सप्लीमैंट्री रीडर्स इवेलुएशन टूल (एस० आर० ई० टी०-2)
101. नैशनल साइंस एक्जीबीशन फॉर चिल्ड्रेन
102. स्टडीज इन आडियू-विजुअल ऐजुकेशन इन इंडिया
103. वार्षिक रिपोर्ट 1970-71
104. सामुदायिक जीवन
105. इम्प्रूविंग साइंस टीचिंग किट्स फॉर स्कूल्स
106. एक्सटेन्शन सर्विसेस फोल्डर
107. मदरटंग एंड इक्वैलिटी ऑफ अपार्चुनिटी इन एजुकेशन
108. फोर्थ इंडियन इयरबुक ऑफ सैकैंड्री एजुकेशन
109. टीचर स्पीक्स वाल्यूम 8
110. टीचिंग यूनिट्स इन सिविक्स फॉर हाई एंड हायर सैकैंड्री स्टेज

पत्र-पत्रिकाएँ

एन० आई० ई० जर्नल—सितम्बर एवं नवम्बर 1971, जनवरी, मार्च, मई, जुलाई एवं सितम्बर 1972

इंडियन एजुकेशनल रिव्यू—जनवरी और जुलाई 1972

स्कूल साइंस—जून, सितम्बर और दिसम्बर 1971

एन० सी० ई० आर० टी० न्यूजलेटर—दिसम्बर 1972

अनुबंध

राज्य/संघ क्षेत्र जिन्होंने परिषद् की पाठ्यपुस्तकों का अंगीकरण/अनुकूलन/अनुवाद किया है

क्र० सं०	शीर्षक	राज्य/संघ क्षेत्र जिन्होंने अंगीकरण/अनुकूलन/अनुवाद किया है
1	2	3

पाठ्यपुस्तकें (अंग्रेजी संस्करण)

सामान्य विज्ञान

1.	साइंस इज डूइंग : ए टैक्स्टबुक फॉर क्लास 3	केन्द्रीय विद्यालय संगठन उड़िया भाषा में भी अनूदित
2.	साइंस इज डूइंग : ए टैक्स्टबुक फॉर क्लास 4	केन्द्रीय विद्यालय संगठन
3.	साइंस इज डूइंग : ए टैक्स्टबुक फॉर क्लास 5	-यथोपरि

जीव-विज्ञान

4.	बायलोजी: साइंस फॉर मिडिल स्कूल्स पार्ट 1 फॉर क्लास 6	केन्द्रीय विद्यालय संगठन, मणिपुर (मणिपुरी भाषा में अनुवाद हो रहा है), जम्मू और कश्मीर (भाग 1 उर्दू में अनूदित), उड़ीसा (उड़िया भाषा में अनूदित
5.	बायलोजी : साइंस फॉर मिडिल स्कूल्स पार्ट 2 फॉर क्लास 7	केन्द्रीय विद्यालय संगठन

1	2	3
6.	बायलोजी : साइंस फॉर मिडिल स्कूल्स पार्ट 3 फॉर क्लास 8	केन्द्रीय विद्यालय संगठन, मणिपुर (मणिपुरी भाषा में अनुवाद हो रहा है।)

नोट :—मिडिल स्तर की विज्ञान पाठ्यपुस्तकों का अंगीकरण सभी राज्यों व संघ क्षेत्रों ने यूनेस्को—यूनीसेफ—सहायता प्राप्त परियोजना के अन्तर्गत किया है।

1	2	3
7.	बायलोजी : ए टैक्स्टबुक फॉर हायर सैकेंड्री स्कूल्स सैक्शन 1	मध्यप्रदेश, तमिलनाडु, नागालैण्ड, पंजाब, अन्डमान तथा निकोबार द्वीप-समूह, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, गोआ, दमन और दीव, हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, हरियाणा, केन्द्रीय विद्यालय संगठन।
8.	बायलोजी : ए टैक्स्टबुक फॉर हायर सैकेंड्री स्कूल्स सैक्शन 2	
9.	बायलोजी : ए टैक्स्टबुक फॉर हायर सैकेंड्री स्कूल्स सैक्शन 3	मध्यप्रदेश, तमिलनाडु, नागालैंड, अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, गोआ, दमन और दीव, मणिपुर, हरियाणा, केंद्रीय विद्यालय संगठन
10.	बायलोजी : ए टैक्स्ट बुक फॉर हायर सैकेंड्री स्कूल्स सैक्शन 4-5	
11.	बायलोजी : ए टैक्स्टबुक फॉर हायर सेकेंड्री स्कूल्स सैक्शन 6-7	

रसायन विज्ञान

1	2	3
12.	केमिस्ट्री : साइंस फॉर मिडिल स्कूल्स पार्ट 1 फॉर क्लास 7	केन्द्रीय विद्यालय संगठन, मणिपुर (मणिपुरी भाषा में अनुवाद हो रहा है)
13.	केमिस्ट्री : साइंस फॉर मिडिल स्कूल्स पार्ट 2 फॉर क्लास 8	

भौतिकी

1	2	3
14.	फिजिक्स : साइंस फॉर मिडिल स्कूल्स पार्ट 1 फॉर क्लास 6	केन्द्रीय विद्यालय संगठन, मणिपुर (मणिपुरी भाषा में अनुवाद हो रहा है), जम्मू और कश्मीर (उर्दू में अनूदित), उड़ीसा (उड़िया भाषा में अनूदित)

1	2	3
15.	फिजिक्स : साइंस फॉर मिडिल स्कूल्स पार्ट 2 फॉर क्लास 7	केन्द्रीय विद्यालय संगठन, मणिपुर (मणिपुरी भाषा में अनुवाद हो रहा है)
16.	फिजिक्स : साइंस फॉर मिडिल स्कूल्स पार्ट 3 फॉर क्लास 8	यथोपरि
गणित		
17.	अरिथमेटिक-अल्जबरा : मैथेमेटिक्स फॉर मिडिल स्कूल्स पार्ट 1 फॉर क्लास 6	केन्द्रीय विद्यालय संगठन
18.	अरिथमेटिक-अलजबरा : मैथेमेटिक्स फॉर मिडिल स्कूल्स पार्ट 2 फॉर क्लास 7	यथोपरि
19	अरिथमेटिक-अलजबरा : मैथेमेटिक्स फॉर मिडिल स्कूल्स पार्ट 3 फॉर क्लास 8	केन्द्रीय विद्यालय संगठन
20.	ज्योमेट्री : मैथेमेटिक्स फॉर मिडिल स्कूल्स पार्ट 1 फॉर क्लास 6	यथोपरि
21.	ज्योमेट्री : मैथेमेटिक्स फॉर मिडिल स्कूल्स पार्ट 2 फॉर क्लास 7	यथोपरि
22.	ज्योमेट्री : मैथेमेटिक्स फॉर मिडिल स्कूल्स पार्ट 3 फॉर क्लास 8	केन्द्रीय विद्यालय संगठन
23.	अलजबरा : ए टैक्स्टबुक फॉर सैकैंड्री स्कूल्स पार्ट 1	नागालैंड, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षाबोर्ड, मणिपुर, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
24.	अल्जबरा : ए टैक्स्टबुक फॉर सैकैंड्री स्कूल्स पार्ट 2	यथोपरि
25.	इनसाइट इनटू मैथेमेटिक्स बुक 1 फॉर क्लास 1	बिहार (हिन्दी अनुवाद), जम्मू और कश्मीर (उर्दू अनुवाद), केन्द्रीय विद्यालय संगठन
26.	इनसाइट इनटू मैथेमेटिक्स बुक 2 फॉर क्लास 2	केन्द्रीय विद्यालय संगठन

1	2	3
टैकनालोजी		
27.	इन्जिनियरिंग ड्राइंग : ए टैक्स्ट-बुक फॉर टैक्नीकल स्कूल्स	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
सामाजिक अध्ययन		
28.	अवर कन्ट्री इन्डिया बुक 1 फॉर क्लास 3	मणिपुर (मणिपुरी भाषा में अनुवाद हो रहा है)
29.	अवर कन्ट्री इन्डिया बुक 2 फॉर क्लास 4	मणिपुर (मणिपुरी भाषा में अनुवाद हो रहा है)
30.	इन्डिया एन्ड दि वर्ल्ड बुक 3 फॉर क्लास 5	मणिपुर (मणिपुरी भाषा में अनुवाद हो रहा है)
31.	सोशल स्टडीज : ए टैक्स्टबुक फॉर सेकैंड्री स्कूल्स वाल्यूम 1	केन्द्रीय विद्यालय संगठन, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
भूगोल		
32.	प्रैक्टीकल ज्योग्रफी : ए टैक्स्ट बुक फॉर सेकैंड्री स्कूल्स	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, मणिपुर, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, मद्रास यूनीवर्सिटी (फॉर पी० यू० सी०), केरल (मलयालम में अनुवाद हो रहा है)
33.	एकोनमिक ज्योग्रफी : ए टैक्स्ट बुक फॉर सेकैंड्री स्कूल्स	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अन्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह, मणिपुर, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, केरल (मलयालम भाषा में अनुवाद हो रहा है)
34.	फिजिकल ज्योग्रफी : ए टैक्स्ट बुक फॉर सेकैंड्री स्कूल्स	केन्द्रीय विद्यालय संगठन, मैसूर विश्वविद्यालय (कन्नड़ में अनुवाद हो रहा है), केरल (मलयालम भाषा में अनुवाद हो रहा है)
35.	अफ्रीका एंड एशिया : ए ज्योग्रफी टैक्स्टबुक फॉर मिडिल स्कूल्स पार्ट 1 फॉर क्लास 6	अरुणाचल प्रदेश

1	2	3
	इतिहास	
36.	एन्शिएंट इंडिया : ए टैक्स्टबुक ऑफ़ हिस्ट्री फॉर मिडिल स्कूल्स फॉर क्लास 6	मणिपुर (मणिपुरी भाषा में अनुवाद हो रहा है), लक्कादीव
37.	मैडिवल इंडिया : ए टैक्स्टबुक ऑफ हिस्ट्री फॉर मिडिल स्कूल्स फॉर क्लास 7	मणिपुर (मणिपुरी भाषा में अनुवाद हो रहा है)
	वाणिज्य	
38.	एलीमैंट्स ऑफ बुक कीपिंग एंड अकाउन्टैंसी : ए टैक्स्टबुक फॉर क्लासेज 9-11	केन्द्रीय विद्यालय संगठन, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
	इंगलिश स्पेशल सीरीज	
39.	लेट्स लर्न इंगलिश बुक 1 फॉर क्लास 3	अरुणाचल प्रदेश, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
40.	लेट्स लर्न इंगलिश बुक 2 फॉर क्लास 4	केन्द्रीय विद्यालय संगठन
41.	लेट्स लर्न इंगलिश बुक 3 फॉर क्लास 5	—यथोपरि—
42.	इंगलिश रीडर बुक 1 फॉर क्लास 6	—यथोपरि—
43.	इंगलिश रीडर बुक 2 फॉर क्लास 7	—यथोपरि—
44.	इंगलिश रीडर बुक 3 फॉर क्लास 8	—यथोपरि—
45.	इंगलिश रीडर बुक 4 फॉर क्लास 9	—यथोपरि—
46.	इंगलिश रीडर बुक 5 फॉर क्लास 10	—यथोपरि—
	इंगलिश जनरल सीरीज	
47.	इंगलिश रीडर बुक 1 फॉर क्लास 6	बिहार, अरुणाचल प्रदेश, महाराष्ट्र बोर्ड
48.	इंगलिश रीडर बुक 2 फॉर क्लास 7	बिहार, अरुणाचल प्रदेश

1	2	3
49.	इंगलिश रीडर बुक 4 फॉर क्लास 9	महाराष्ट्र बोर्ड, पंजाब बोर्ड, और अरुणाचल प्रदेश
50.	इंगलिश रीडर बुक 5 फॉर क्लास 10	गुरु नानक यूनीवर्सिटी (फॉर पी०यू०सी०)

पाठ्यपुस्तकें (हिंदी संस्करण)

सामान्य-विज्ञान

51.	विज्ञान : आओ करके सीखें कक्षा 3 के लिए	मध्य प्रदेश
52.	विज्ञान : आओ करके सीखें कक्षा 4 के लिए	मध्य प्रदेश

जीव-विज्ञान

53.	जीव विज्ञान : मिडिल स्कूलों के लिए पाठ्यपुस्तक भाग 1 कक्षा 6 के लिए	दिल्ली प्रशासन, मध्य प्रदेश
54.	जीव-विज्ञान : मिडिल स्कूलों के लिए विज्ञान की पाठ्यपुस्तक भाग 2 कक्षा 7 के लिए	दिल्ली प्रशासन
55.	जीव-विज्ञान : मिडिल स्कूलों के लिए विज्ञान की पाठ्यपुस्तक भाग 3 कक्षा 8 के लिए	दिल्ली प्रशासन, मध्यप्रदेश
56.	जीव-विज्ञान : उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के लिए विज्ञान की पाठ्यपुस्तक भाग 1	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, गोआ, दमन और दीव
57.	जीव-विज्ञान : उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के लिए विज्ञान की पाठ्य-पुस्तक भाग 2	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
58.	जीव-विज्ञान : उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के लिए विज्ञान की पाठ्य-पुस्तक भाग 3	—यथोपरि—
59.	जीव-विज्ञान : उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के लिए विज्ञान की पाठ्य-पुस्तक भाग 4-5	—यथोपरि—

1	2	3
	रसायन विज्ञान	
60.	रसायन विज्ञान : मिडिल स्कूलों के लिए विज्ञान की पाठ्यपुस्तक भाग 1 कक्षा 7 के लिए	दिल्ली प्रशासन
61.	रसायन विज्ञान : मिडिल स्कूलों के लिए विज्ञान की पाठ्यपुस्तक भाग 2 कक्षा 8 के लिए	दिल्ली प्रशासन, मध्य प्रदेश (स्टडी ग्रुप सामग्री)
	भौतिकी	
62.	भौतिकी : मिडिल स्कूलों के लिए विज्ञान की पाठ्यपुस्तक भाग 1 कक्षा 6 के लिए	दिल्ली प्रशासन, मध्य प्रदेश
63.	भौतिकी : मिडिल स्कूलों के लिए विज्ञान की पाठ्यपुस्तक भाग 2 कक्षा 7 के लिए	दिल्ली प्रशासन
64.	भौतिकी : मिडिल स्कूलों के लिए विज्ञान की पाठ्यपुस्तक भाग 3 कक्षा 8 के लिए	दिल्ली प्रशासन, मध्य प्रदेश
	गणित	
65.	अंकगणित, बीज गणित : मिडिल स्कूलों के लिए गणित की पाठ्य-पुस्तक भाग 1 कक्षा 6 के लिए	दिल्ली प्रशासन
66.	अंकगणित, बीज गणित : मिडिल स्कूलों के लिए गणित की पाठ्य-पुस्तक भाग 2 कक्षा 7 के लिए	—यथोपरि—
67.	अंकगणित, बीजगणित : मिडिल स्कूलों के लिए गणित की पाठ्य-पुस्तक भाग 3 कक्षा 8 के लिए	दिल्ली प्रशासन
68.	रेखागणित : मिडिल स्कूलों के लिए गणित की पाठ्यपुस्तक भाग 1 कक्षा 6 के लिए	दिल्ली प्रशासन

1	2	3
69.	रेखागखित : मिडिल स्कूलों के लिए गणित की पाठ्यपुस्तक भाग 2 कक्षा 7 के लिए	दिल्ली प्रशासन
70.	रेखागणित : मिडिल स्कूलों के लिए गणित की पाठ्यपुस्तक भाग 3 कक्षा 8 के लिए	—यथोपरि—
	सामाजिक अध्ययन	
71.	हमारी दिल्ली कक्षा 3 के लिए	दिल्ली प्रशासन, बिहार, अंडमान और निकोबार द्वीप-समूह
72.	हमारा देश भारत कक्षा 4 के लिए	दिल्ली प्रशासन, बिहार, हरियाणा, अंडमान तथा निकोबार द्वीप-समूह
73.	भारत और संसार कक्षा 5 के लिए	केन्द्रीय विद्यालय संगठन, दिल्ली प्रशासन, अंडमान तथा निकोबार द्वीप-समूह
74.	सामाजिक अध्ययन भाग 1 कक्षा 4 के लिए	केन्द्रीय विद्यालय संगठन
75.	सामाजिक अध्ययन भाग 2 कक्षा 5 के लिए	—यथोपरि—
76.	स्थानीय शासन : मिडिल स्कूलों के लिए नागरिकशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक कक्षा 6 के लिए	बिहार, दिल्ली प्रशासन, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
77.	शासन और संविधान : मिडिल स्कूलों के लिए नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक कक्षा 7 के लिए	दिल्ली प्रशासन, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
78.	स्वतन्त्र भारत : मिडिल स्कूलों के लिए नागरिकशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक कक्षा 8 के लिए	—यथोपरि—
	इतिहास	
79.	प्राचीन भारत : मिडिल स्कूलों के लिये इतिहास की पाठ्यपुस्तक कक्षा 6 के लिए	दिल्ली प्रशासन, बिहार, केन्द्रीय विद्यालय संगठन

1	2	3
80.	मध्यकालीन भारत : मिडिल स्कूलों के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक कक्षा 7 के लिए	—यथोपरि—
81.	आधुनिक भारत : मिडिल स्कूलों के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक कक्षा 8 के लिए	—यथोपरि—
	हिन्दी	
82.	रानी मदन अमर : हिन्दी प्रवेशिका	बिहार, दिल्ली प्रशासन, अंडमान और निकोबार द्वीप-समूह, लक्कादीव, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, अरुणाचल प्रदेश (कक्षा 3 के लिए)
83.	चलो पाठशाला चलें : हिन्दी रीडर कक्षा 1 के लिए	दिल्ली प्रशासन, अंडमान और निकोबार द्वीप-समूह, अरुणाचल प्रदेश (कक्षा 4 के लिए)
84.	आओ हम पढ़ें : हिन्दी रीडर कक्षा 2 के लिए	दिल्ली प्रशासन, बिहार, अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, अरुणाचल प्रदेश (कक्षा 5 के लिए)
85.	आओ पढ़ें और समझें : हिन्दी रीडर कक्षा 3 के लिए	दिल्ली प्रशासन, बिहार, अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, अरुणाचल प्रदेश (कक्षा 6 के लिए)
86.	आओ पढ़ें और सीखें : हिन्दी रीडर कक्षा 4 के लिए	दिल्ली प्रशासन, बिहार, अंडमान तथा निकोबार द्वीप-समूह, अरुणाचल प्रदेश (कक्षा 7 के लिए)
87.	आओ पढ़ें और खोजें : हिन्दी रीडर कक्षा 5 के लिए	दिल्ली प्रशासन, बिहार, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह, अरुणाचल प्रदेश (कक्षा 8 के लिए)

1	2	3
88.	राष्ट्रभारती भाग 1 हिन्दी रीडर कक्षा 6 के लिए	दिल्ली प्रशासन, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, अंडमान तथा निकोबार द्वीप-समूह, मणिपुर, बिहार
89.	राष्ट्र भारती भाग 2 हिन्दी रीडर कक्षा 7 के लिए	दिल्ली प्रशासन, अंडमान तथा निकोबार द्वीप-समूह, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, बिहार
90.	राष्ट्र भारती भाग 3 हिन्दी रीडर कक्षा 8 के लिए	दिल्ली प्रशासन, अंडमान तथा निकोबार द्वीप-समूह, बिहार, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
91.	काव्य-संकलन : माध्यमिक स्कूलों के लिए एक पाठ्यपुस्तक	हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, आंध्र प्रदेश, पश्चिमी बंगाल, बिहार, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
92.	गद्य-संकलन : माध्यमिक स्कूलों के लिए एक पाठ्यपुस्तक	हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, आंध्र प्रदेश, पश्चिमी बंगाल, बिहार, पंजाब विश्व-विद्यालय (चार निबन्ध अपनी प्रकाशित पुस्तक के भी शामिल कर लिए हैं), केन्द्रीय विद्यालय संगठन
93.	एकांकी-संकलन : माध्यमिक स्कूलों के लिए एक पाठ्यपुस्तक	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, मध्य प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश
94.	काव्य के अंग : माध्यमिक स्कूलों के लिए एक पाठ्यपुस्तक	मध्य प्रदेश, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
95.	जीवनी-संकलन : माध्यमिक स्कूलों के लिए पाठ्यपुस्तक	हरियाणा, हिमाचल प्रदेश
96.	हिन्दी साहित्य का इतिहास : माध्यमिक स्कूलों के लिए पाठ्य-पुस्तक	पंजाब बोर्ड
97.	कहानी-संकलन : माध्यमिक स्कूलों के लिए पाठ्यपुस्तक	हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, केन्द्रीय विद्यालय संगठन

1	2	3
98. काव्य-संकलन गद्य-संकलन	संयुक्त संस्करण	बड़ौदा विश्वविद्यालय
संस्कृत		
99. संस्कृतोदय : माध्यमिक स्कूलों के लिए पाठ्यपुस्तक		केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, मणिपुर, अंडमान तथा निकोबार द्वीप-समूह, जम्मू और कश्मीर (पूर्व-विश्वविद्यालय पाठ्य-क्रम के लिए)